# अवहट्ट : उद्भव ओ विकास



लेखक
श्री राजेश्वर झा



प्रकाशक
मैथिली साहित्य संस्थान, पटना

# अवहट्ट : उद्भव ओ विकास



लेखक

**श्री राजेश्वर झा**

बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना-१



प्रकाशक

**मैथिली साहित्य संस्थान, पटना**

●

१६ नवम्बर, १९७५

●

मुद्रक :
कालिका प्रेस,
आर्यकुमार रोड, पटना–४

●

मूल्य १०) टाका मात्र

●

प्रकाशक :
मैथिली साहित्य संस्थान,
द्वारा—बिहार रिसर्च सोसाइटी,
पटना–१

# आमुख

अवहट्ठ की, मैथिलीक उद्‌भव आ विकास कोना भेल, कहिया भेल, विद्यापति-ज्योतिरीश्वरक पूर्ववर्ती कवि के सभ छलाह इत्यादि विषय मे जे जिज्ञासु छथि तनिका हेतु ई पुस्तक अनिवार्य। ओना तँ भाषाविद् लोकनि मैथिलीक उद्‌भव-विकास पर कएटा पाण्डित्यपूर्ण पुस्तक लिखलनि अछि मुदा दुर्भाग्य सँ अधिकतर पोथी अँगरेजी मे अछि। मैथिली मे अवहट्ठ पर रोचक एवं सारगर्भ ग्रन्थ लिखि कए पण्डित राजेश्वर झा अपन मातृभाषाक बड़ पैघ सेवा कएलनि अछि। अनेक दृष्टि सँ पुस्तक मौलिक अछि। आशा अछि सुधी समाज एकर समादर करत।

**दीनानाथ झा**

अध्यक्ष

मैथिली साहित्य संस्थान, पटना

विद्यापति-पावनि,

१६ नवम्बर, १९७५ ई०

# सादर-भेंट

करूणाक प्रतिमूर्ति एवं अन्नपूर्णाक साक्षात् अवतार न्यायमूर्ति
श्री सुशील कुमार झाक पूजनीयाँ मायक करकमल मे
उपहार स्वरूप सादर भेंट कएल जाइछ जनिकर
स्नेह, सद्भावना तथा प्रश्रय पाबि हम
अपना केँ गौरवान्वित बुझैत छी ।

—लेखक

# अवहट्ठ : उद्‌भव ओ विकास



न्यायमूर्ति श्री सुशील कुमार झाजीक माय

# विषय-सूची

१. प्राक्कथन ... क

२. अवहट्ठ : उद्भव एवं प्रस्तावित क्षेत्र ... १

३. प्रारम्भिक साहित्य ... ३८

४. परिनिष्ठ एवं रास साहित्य ... ६९

५. उपसंहार ... ११०

# प्राक्कथन

अवहट्ठ पूर्वाञ्चलक लोकभाषा थिक जकर कलेवरक निर्माण पैशाची एवं मागधीक समिश्रण सँ भेल अछि। भाषाक क्षेत्र मे पूर्वाञ्चलक ऐकिकताक पुष्टि प्रागबुद्ध कालहि सँ अछि। पाणिनि अष्टाध्यायीक जाहि सभ सूत्र मे "प्राचाम" पदक उल्लेख कएलनि अछि ओ सभ सूत्र दिशा एवं देशवाची सूत्र थिक जकर तात्पर्य पूर्व-देशी स्वरविधि एवं नगर-ग्राम, क्रीड़ा-कौतुक सँ अछि। एहि प्रसंगक पाणिनिक वाक्य—एङ् प्राचां देशे (१·१·७५), प्राचां कटादेः (४·२:१३६), प्राचां क्रीड़ायाम् (६·२·७४) आदि बड़ महत्वपूर्ण अछि। पूर्वाञ्चलक स्वर ध्वनि, अन्तस्थ एवं उष्मवर्ण स्पर्शक वर्गीय उच्चारण मे भिन्नता पाओल जाइछ। य केँ ज, प केँ ख पवर्गीय पद्य मुर्धन्य ष उपध्मानीय उच्चारित होइछ तथा "पुष्पं" शब्द "पहुप" मे परिवर्त्तित भए जाइछ। यजुर्वेदीय प्रतिशाख्य एवं याज्ञवल्क्य शिक्षा मे एहि सभ उच्चारणक शास्त्रीय विधिक चर्चा पाओल जाइछ जे प्रधानतः पूर्वाञ्चल सँ सम्बद्ध अछि।[1]

उपर्युक्त उद्धरण सँ निस्सृत होइछ जे सभ्यताक प्रारम्भे सँ पूर्वाञ्चलक भाषा, संस्कृति तथा धार्मिक आचरण भारतक आन-आन भागक भाषा, संस्कृति एवं धार्मिक आचरण सँ भिन्न छल जे कहुखन तँ विदेह और कहुखन मगध सँ प्रभावित भेल।

वैदिक वाङ्मय मे विदेहक सभ्यता एवं संस्कृति केँ सर्वोत्कृष्ट कहल गेल अछि। जातकक एक गोट कथा मे कहल गेल अछि जे विदेहक राजधानी केँ गंधारक संग व्यापारक सम्बन्ध छल।[2]

बौद्ध साहित्य मे वर्णित पूब्वविदेह एवं गंधार शब्दक विश्लेषण सँ प्रतीत होइछ जे विदेह के युनान, तालि और चीन सँ प्राचीन कालहि-सँ सम्पर्क छल। इन्डो-चीनक सीडो-हिन्दू भूगोलक अनुसार युनानक भू-भाग विदेहराजक (विदेहइत्तक) नामे और ओकर राजधानी "मेइत्तिला" (मिथिला) नामे प्रख्यात छल।[3]

वराहमिहिरक बृहत्संहिताक अनुसार भारतक पश्चिमोत्तर दिशा मे "ताल"

---

१ सुरेन्द्रझा "सुमन", पूर्वाञ्चल भाषा, साहित्य एवं संस्कृति, पृ० ११२ख

२ प्रि बुद्धिष्ट इण्डिया, पृ० २२६; जातक अंक ३, पृ० ३६५

३ सरजे स्कौट, गजेट आफ अपर बर्मा एण्ड दि शान स्टेट्स, १, पृ० २१९; डा० बुद्धप्रकाश ज० आफ दि ग्रे० इ० सो० भा० १५, अंक २, पृ० ९२

नामक लोकक वर्णन अछि।[४] एहि प्रसंग मे पेल्लियोटक विचार बड़ महत्वक अछि। हिनकानुसारे बर्मी चीनी केँ अहुखन "तारोप" या "तारेत" नामेँ सम्बोधन करैत अछि जकर आधार "ताल्लिको" शब्द केँ ओ मानैत छथि। "ताल्लिको" शब्दक तात्पर्य तालि राज्य सँ थिक जे ननचो साम्राज्यक पलनाक रूप मे छल। पश्चात् काल जखन एहि राज्य केँ दुइ भाग मे विभाजित कएल गेल तँ ई भाग जाहि मे ताल्लिक भू-भाग छल तोआनक प्रशासन मे आएल जे बर्माक संग अपन पूर्वक सम्बन्ध केँ बनौने रहल। इएह कारण थिक जे बर्मी सम्पूर्ण चीनक हेतु 'तालि'क नामक प्रयोग करैत छथि।[५]

तालिक संग विदेहक सम्बन्ध बड़ प्राचीन अछि। एहि राज्य केँ "भारतक सौरभ" कहल जाइत छलैक।[६] सौरभक दोसर नाम गंध सेहो थिक। चीनी ग्रन्थ मे गंध केँ गंधर्व नाम सँ वर्णन पाओल जाइछ। डा० बुद्धप्रकाशक अनुसार तालिक अन्य नाम गंधार सेहो छल।[७] अतएवं जातकक गंधारक सम्बन्ध तालि सँ अछि जकरा संग विदेहक सांस्कृतिक सम्पर्क छल तथा ओकरहि माध्यम सँ भारतक व्यापार चीन देशक संग होइत छलैक।[८]

उपर्युक्त तथ्यक पुष्टि आनोआन ऐतिहासिक साक्ष्य सँ होइत अछि। चेन-शाङ्क विवरण सँ ज्ञात होइछ जे चीनक सम्राट ६६४ ई० मे ३०० धर्मक जिज्ञासु केँ धार्मिक ग्रन्थक अन्वेषणक निमित्त भारतवर्ष पठौलथिन जे ६७६ ई० मे अपन विवरण प्रस्तुत कएलनि जे ओ लोकनि "तालिये" मे "कुक्कुटपादगिरि", "राजगृह", "गृद्धकूट पर्वत", "आनन्दक चैत्य" आदि वस्तु केँ देखलनि।[९]

विदेहक प्राचीन संस्कृतिक प्रचार और प्रसारक सम्बन्ध मे अठारहम शताब्दीक तिब्बती लामा धर्मसूर्यश्रीभद्रक विवरण सेहो उपलब्ध अछि। हिनकानुसार चीन केँ "द्वीप पूर्वविदेह" कहबाक परम्परा बड़ प्राचीन छल जकरा भारतीय "महाचीन"क नामेँ सम्बोधन करैत छलाह।[१०]

---

४ दिशि पश्चिमोत्तरस्यां माण्डव्यतुषारतालहलमद्राः।
अश्मककुलूतहलडाः स्त्री राज्यनृसिंहवनरवस्थाः॥
भाग १, पृ० २८८

५ डा० बुद्ध प्रकाश, ज० आफ दि० ग्रे० ई० सो० भाग १५, अंक २, पृ० ९५

६ ओतहि

७ ओतहि, पृ० ९६

८ ओतहि, पृ० ९८

९ ओतहि, पृ० १०९

१० ओतहि, पृ० १०७

उपर्युक्त विवरण सँ निस्सृत होइछ जे विदेहक साहित्य, संस्कृति एवं धार्मिक आचरण सभ्यताक प्रारम्भे मे युनान, तालि, चीन आदि देशहु मे प्रसारित भेल जकरा पूर्वविदेह तथा गंधार कहल जाइत छलैक। अतएव जातक मे वर्णित गंधारक सम्बन्ध तालि सँ तथा मैथिलीक आधुनिक ताल शब्दक सम्बन्ध तालिये सँ अछि। इएह कारण थिक जे सुदुर पूर्व मे जे भारतीय वाङ्मयक पाण्डुलिपि उपलब्ध भेल अछि ओकर लिपि और भाषा पर मिथिलाक्षर और मैथिलीक प्रभाव पाओल जाइछ तथा स्वत: मैथिलीक कलेवरक निर्माण मे मोन्ख्मेर शब्दहु कें श्रेय अछि।

मिथिलक वाणिज्य-व्यापार गुप्त एवं पाल राजा लोकनिक राजत्वकाल मे बड़ उन्नतिशील छल। ओहि युग मे व्यापारी लोकनिक कतिपय निगम एवं संघ छलैक तथा ओ लोकनि श्रेष्ठि और सार्थवाह नामें विभक्त छल। श्रेष्ठि आधुनिक सेठ थिक। सेठ अपन धनक गुण और प्रभाव सँ नगरक व्यापारी लोकनिक नायक होइत छलाह तथा सार्थवाहक सम्बन्ध ओहि व्यापारी सँ छल जे नायक (नैकाक) संरक्षण मे व्यापार करैत छल। डा० ब्लॉक कें बसाढ़ (वैशाली)क उत्खनन मे कतिपय नामांकित मोहर एवं मुद्रा उपलब्ध भेलनि जकरा सँ स्पष्ट होइछ जे ओहि युग मे विदेहक व्यापार बड़ विकसित छल[११] तथा हुनका लोकनिक व्यापार विश्वक आन-आन भागक संग होइत छल। एहि व्यापारी मे सँ कतिपय करोड़पति होइत छलाह। जैनसूत्र मे वर्णित वाणिज्य ग्राम वैशालीक आधुनिक बनिया थिक जे गण्डकी नदीक दहिन कात पर बसल बड़ पैघ व्यापारक केन्द्रस्थल छल। एहि स्थानक एक गोट करोड़पतिक नाम गाथापति छल जे भगवान महावीरक बड़ भक्त छलाह।[१२]

बर्मा मे वैशालीक उपनिवेश छल तथा अराकानक एक गोट प्रख्यात नगरक नामकरणो वैशालीयेक नाम पर भेल जकर संस्थापक सन ७८९ ई०क चन्द्रवंशक एक गोट राजा छलाह। पश्चात् ई नगर राजधानीक रूप मे परिणत भेल जे लगभग दुइ शताब्दी धरि एहि गौरव कें प्राप्त कएने विदेहक सभ्यता एवं संस्कृतिक केन्द्रस्थल बनल रहल। अराकानक एहि प्राचीन वैशालोक अवशिष्ट अहुखन ओतुका आधुनिक "वेथाली" ग्राम मे पाओल जाइछ।[१३]

वैशालीक समृद्धि एवं इतिहास बड़ प्रचीन एवं व्यापक छल। यद्यपि प्राचीन वैदिक साहित्य मे विदेहक राजधानी मिथिला कें कहल गेल अछि किन्तु जैन

---

११ आरक्योलोजिकल सर्वे रिपोर्ट, १९०३-४, पृ० १३८

१२ वैशाली अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ० ७७

१३ ओतहि, पृ० ४३

"निरयावलि"[१४] एवं "त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित"[१५] मे विदेहक राजधानी वैशाली केँ कहल गेल अछि। प्रतीत होइछ जे भिन्न-भिन्न समय मे विदेहक राजधानी मे परिवर्तन होइत रहल। वैदिक कालक प्रसिद्ध जनकक राजधानी मिथिला तँ छल किन्तु पश्चात् काल ओतए सँ उठि राजधानी वैशाली मे आयल।

जैन निरयावलिक अनुसार महावीर स्वामीक नाम मे विदेहदत्ता नामक उल्लेख कएल गेल अछि। विदेहदत्ता हुनकर माय[१६] त्रिशलाक नाम छल जे विदेह देशक नगरी वैशालीक गणराज्यक राजा चेतकक बहिन छलीह जे अपना केँ विदेह कहबैत छलाह तेँ त्रिशला विदेहदत्ता कहौलनि।

निरयावलिक अनुसार राजा चेतक वैशालीक अधिपति छलाह जनिका परामर्श देबाक हेतु नौ गोट मल्ल गणराजा और नौ लिच्छवि गणराजा रहैत छलाह। मल्ल जाति काशी मे और लिच्छवी कोशल मे रहैत छल। एहि दुहु जातिक एक सम्मिलित गणतन्त्र राज्य छल जकर राजधानी वैशाली छल तथा एहि गणतन्त्रक अधिपति चेतक छलाह। जैन ग्रन्थ "आवश्यक चूर्णिका"क अनुसार चेतकक जन्म वैशालीक हैहय वंश मे भेऽनि तथा हिनका भिन्न-भिन्न रानी सँ प्रभावती, पद्मावती, मृगावती, शिवा, ज्येष्ठा, सुज्येष्ठा और चेल्लणा सातगोट पुत्री उत्पन्न भेलनि। प्रभावतीक विवाह उदयन सँ, पद्मावतीक चम्पाक दधिवाहन सँ, मृगावतीक कौशाम्बीक शतानीक सँ, शिवाक उज्जयिनीक प्रद्योत सँ तथा ज्येष्ठाक विवाह कुंड ग्रामक वर्धमान स्वामीक ज्येष्ठ भ्राता नन्दिवर्धन सँ भेऽ। सुज्येष्ठा तथा चेल्लणा तावतधरि कुमारिये छलीह। महावीर चरित्र उपर्युक्त वर्णन केँ सँ पुष्ट करितहि अछि संगहि एहि ग्रन्थक अनुसार पश्चात् मगधक राजा बिम्बसार राजा चेतक सँ सुज्येष्ठा सँ विवाह करबाक हेतु आग्रह तँ कएल किन्तु चेतक हुनका अपन कन्या देब कुलक मर्यादाक प्रतिकूल बुझलनि। फलस्वरूप बिम्बिसार सुज्येष्ठा केँ हरण करबाक योजना तँ बनौलनि किन्तु ओ सुज्येष्ठाक बदला मे चेल्लणा केँ हरण कए ओकरहि सँ विवाह कएलनि। एहि सँ प्रतीत होइछ जे विदेहक लोक अपना केँ कुलीन तथा मगधक राजकुलकेँ अपना सँ हीन बुझैत छल तथा विदेह और मगध मे पारस्परिक ईर्ष्या और द्वेषक भावना रहैत छलैक। प्रायः तेँ चेल्लणाक पुत्र एवं चेतकक दौहित्र तथा मगधक अधिपति अजातशत्रु एहि गणतंत्र मे फूट डालि

---

१४ ओतहि, पृ० २६

१५ ओतहि, पृ० ७७

१६ ओतहि, पृ० ३८९

साम्राज्यवादी प्रवृति ओर देश विस्तारक भावनाक पूर्तिक हेतु एकरा नष्ट कएलनि । एवंक्रमे मगधक आधिपत्य विदेहक भूभाग पर स्थापित भेल तथा विदेह मगधक प्रशासनक अन्दर आयल ।

यद्यपि ऋग्वेद मे मगधक चर्चा नहि पाओल जाइछ किन्तु एहि मे कीकट शब्द उल्लिखित अछि जकर सम्बन्ध मगध सँ मानल जाइछ । सायन कीकटक विवेचन 'अनार्य्यनिवासेषु जनपदेषु' वाक्यक रूप मे कएलनि अछि । ऋग्वेदक अनुसार असुर, नाग, दास, यदु आदिकेँ आर्यक शत्रुक रूप मे उल्लेख भेल अछि । वस्तुतः ई सभ अनार्यक भिन्न-भिन्न शाखा मे विभक्त जाति छल जे क्रमशः अपन स्थान सँ आर्यक द्वारा निस्कासित कएल गेल । अथर्ववेदक अनुसार असुर मध्यदेश गंगा यमुनाक संगम सँ लए मगध तक प्रसारित भेल जे व्रात्यक द्वारा आर्य-संस्कृति मे दीक्षित भेल । मगधक जरासंध तथा असमक भगदत्त असुरहि सँ सम्बद्ध छलाह । एवंक्रमेँ लवण-सागर सँ सिन्धु-सरस्वती, मध्यदेश सँ सदानीरा, मगध एवं पूर्वी भारतक सीमाधरि असुरक प्रसार भेल जे अपना केँ मागध कहैत छल जकरा सँ मगधक नामकरण एवं ओहि सँ सम्बद्ध भाषा मागधी कहौलक । शतपथब्राह्मणक[17] अनुसार आर्य एवं असुरक भाषा मे भेद छलैक । मेकडोनल[18] पतंजलिक आधार पर असुर भाषा केँ म्लेच्छ भाषा कहलनि अछि । यजुर्वेद मे तँ सात प्रकारक आसुरी छन्दहुक वर्णन सन्निहित अछि ।

उपर्युक्त विवरण सँ स्पष्ट होइछ जे मागधीए कोनो ने कोनो समय मे म्लेच्छ भाषाक नामेँ सम्बोधित होइत छल जकरा सँ पूर्वाञ्चलक आधुनिक भाषाक उद्भव भेल । एहि प्रसंग मे तन्त्रक उद्भव एवं प्रसारक ऐतिहासिक विवेचन करब बड़ महत्वक अछि । रायबहादुर सरतचन्द्र रायक अनुसार[19] शिवपूजा एवं तन्त्रक उद्भव तिब्बतक बोन धर्म सँ भेल जतए शिवक प्रसिद्ध कैलास पर्वत स्थित अछि । प्राचीन काल मे कश्मीर ओर असमक घनिष्ट सम्पर्क तिब्बतक संग छल तथा असम ओर बंगालक सम्बन्ध सेहो घनिष्टे छल । ई० सनक सातम शताब्दी मे मिथिला पर किछु दिनक हेतु तिब्बती शासन स्थापित भेल । एकर अतिरिक्त सातम शताब्दी सँ अट्ठारहम शताब्दी धरि भारतक वाणिज्य व्यापार एवं सांसकृतिक आदान-प्रदान मिथिला एवं नेपालक मार्गें सँ होइत छल । फलस्वरूप कश्मीर, असम, बंगाल, मिथिला ओर नेपाल तन्त्रक केन्द्र बनल तथा शिव एवं हुनक शक्तिक रूप मे काली

---

१७ ३ . २ . १ . २३-२४

१८ वैदिक इन्डेक्स, पृ० ३४८

१९ मैन इन इन्डिया अं० १४, भा० २, पृ० ९२

दुर्गा, भवानी आदिक पूजाक परम्पराक स्थापना ओहि क्षेत्र सभ मे भेल। पूर्वाञ्चलक प्रख्यात शावर मन्त्रक सम्बन्ध शबर जातिए सँ अछि जे किरात जातिक एक शाखा थिक। इएह कारण थिक जे समस्त पूर्वाञ्चलक भाषाक ऊपर द्रविड़ एवं मोनूख्मेर भाषाक प्रभाव परिलक्षित होइछ।

मोनूख्मेर भाषा और आर्य भाषाक सम्बन्धक प्रसंग मे ऋग्वेदक अध्ययन एवं आर्य-द्रविड़ शब्द भंडारक विश्लेषण सँ प्रतीत होइछ जे समस्त भाषाक विकास अति प्राचीन काल मे एकहि सूत्र सँ भेल। आर्य भाषा एवं द्रविड़ भाषा मध्य महाप्राण ध्वनिक विकास एवं असवर्ण संयोगक प्रति केवल मोहक भावनाक अन्तर पाओल जाइछ। डा० सुनीति कुमार चटर्जीक अनुसार ऋग्वेद कालहि मे द्रविड़ भाषाक प्रभाव वैदिक वाङ्‌मयक ऊपर प्रारम्भ भए गेल तथा ऋग्वेद मे वर्णित अणु, अरणि, कपि, करमार, काल, कुट, कुंड, गण, नाना, नील, पुष्प, पूजन, फल, बीज, मयूर आदि शब्द सभ द्रविड़ भाषाक शब्द थिक।[२०]

एहि सँ निस्सृत होइछ जे आर्य लोकनि तथा हुनका लोकनिक भाषा जेना-जेना द्रविड़क सम्पर्क मे आयल गेल तहिना भाषा मे द्रविड़ तत्वक प्रभाव पड़ब प्रारम्भ भेल।

ई तँ निर्विवाद थिक जे आर्य लोकनि एवं हुनकर भाषा संस्कृतक आगमनक पूर्वहि सँ एहि देशक अधिकांश भाग मे दस्यु, निषाद, म्लेच्छ आदि जाति पसरल छल जकरा संस्कृत साहित्य मे अनार्यक नाम सँ उल्लेख कएल गेल अछि। डा० सुनीति कुमार चटर्जी आर्य एवं द्रविड़ भाषा कें स्वर ध्वनि, शब्दविचार, कारकक नियम, वाक्य-रचना आदिक आधार पर साम्य मानैत छथि। हिनकानुसारे ट, ठ, ण, ल, ळ अक्षरक उच्चारण द्रविड़ भाषे सँ वेद एवं संस्कृत भाषा मे प्रयुक्त भेल तथा व्यन्जन वर्ण मे अल्प स्वर वर्णक योग जे मध्य आर्य भाषाक प्रकृति थिक जेना किलेस, सिनेह, रतन,परान, बरामहन शब्द द्रविड़ भाषाक वरामण, सिनेगम, विराममणम् आदि शब्द सँ साम्य अछि।

एहि तरहें गण, गुट, सब आदि शब्द सँ संयुक्त शब्द रूप जे भारतीय आर्यभाषाक प्रकृति थिक, बहुवचन तथा नव-प्रत्यान्त शब्दक प्रत्ययक उद्भवक आधार मध्य-मे, कक्ष-को, पार्श्व-पास आदि संज्ञा सँ अछि जे द्रविड़ भाषा सँ साम्य अछि। एवक्रमें क्रिया रूपक प्रयोग, असमापिका क्रिया तथा समुच्चयबोधक-अव्यय प्रत्यान्त शब्द हैते, लागिया, थाकिया, दिया द्रविड़ भाषाक तम्, कर्त्तोयैकोणदु,

---

२० ओरिजिन एण्ड डेवेलपमेन्ट आफ दि बंगाली लैंगुएज, पृ० ४२

आदि शब्द सँ तथा आर्यभाषाक "थोड़ा, तोरा" तामिलक "कुदिरैइ-किदीरेइ" शब्द सँ साम्य अछि। एहिना आर्यभाषा एवं द्रविड़ भाषाक व्याकरणक कतिपय नियम समाने अछि जे आर्य भाषा एवं द्रविड़ भाषाक समताक दिग्दर्शन करबैत अछि।

उपयुंक्त तथ्यक अध्ययन एवं विश्लेषण सँ प्रतीत होइछ जे आर्यभाषा पर द्रविड़ भाषाक प्रभाव अत्यन्त प्रारम्भे सँ अछि जे वैदिक वाङ्मय के सेहो प्रभावित कएलक।

मैथिली भाषाक ऊपर संताली एवं मुण्डारी भाषाक प्रभावक प्रसंग मे श्री के० डे० व्रीसेक समालोचना निबन्ध जे ओ "जर्नल ऑफ दि अमेरिकन ओरियन्टल सोसाइटी", अंक ८२, भाग ३, पृ० ४०२ मे डॉ० सुभद्र झाक ग्रंथ "फॉरमेशन ऑफ दि मैथिली लैंग्वेज"क ऊपर लिखने छथि बड़ महत्वपूर्ण अछि। श्री व्रीसे महोदय मैथिली भाषाक शब्दक उद्भव संताली भाषा सँ तँ मानबे कएलनि अछि संगहि मैथिली भाषाक व्याकरणक नियमक ऊपर सेहो संताली तथा मुण्डारी व्याकरणक पूर्ण प्रभावक चर्चा अपन निबन्ध मे कएलनि अछि।

संताल एवं मुण्डा जाति बिहारक संताल परगना, छोटानागपुर तथा असमक पहाड़ी भू-भाग मे पाओल जाइछ। हिमालयक पार्वत्य प्रदेश तथा असमक उत्तरी-पूर्वी भाग मे तिब्बती-वर्मी जातिक निवास अछि। अतएव संताली, मुण्डारी एवं तिब्बती बर्गी भाषाक प्रभाव पूर्वाञ्चलक भाषा एवं व्याकरणक नियमक ऊपर परब स्वाभाविक थिक।

पूर्वाञ्चलक भाषाक सृजन मे पालि एवं प्राकृत भाषाक श्रेय सेहो पाओल जाइछ। एहि दुहु भाषाक उद्भव एवं विकास संस्कृत भाषा तथा ब्राह्मण धर्मक विरोध मे भेल जकर सम्बन्ध ओहि युगक लोक-धर्म और लोक-भाषा सँ छल। अतएव वैदिक-धर्म विरोधी भेला सँ पालि एवं प्राकृत साहित्यक विकास बौद्ध तथा जैन धर्मक उदयक कारणस्वरूप भेल जे पूर्वाञ्चलक जनमानसक भावना एवं अनुभूति सँ सम्बद्ध छल। एहि मे जातक-कथा एवं धर्म-कथा सभ मे लोक-कथा के आत्मसात कएल गेल जे शैलीक दृष्टि सँ एक दिश तँ जन-सामान्यक भाषा के और दोसर दिश पद्द और लोक गीतात्मक छन्द के अपनौलक। एहि दुहु धर्मक प्रवंतक भगवान बुद्ध और महाबीर विदेहक छलाह। कल्पसूत्र मे महावीर के "विदेहे विदेहठिन्ने विदेहजज्ये जकर तात्पर्य" आदि रूप मे उल्लेख कएल गेल अछि जकर तात्पर्य विदेह, विदेहदत्त, विदेह जन्य, विदेह सुकमार सँ थिक। भगवान बुद्ध तथा महावीर अपन मातृभाषा के अपन सिद्धान्तक प्रचार और

प्रसारक माध्यम बनौलनि जे अवश्ये मैथिली छल। अतएव एहि दुहु लोकधर्मक आश्रय मे मैथिली एक देशी नहि भए अनेक देशी तँ होयबे कएल संगहि पूर्वाञ्चलक भाषा और संस्कृति कें एक सूत्र मे आवद्ध कएलक।

यद्यपि पूर्वाञ्चलक आधुनिक भाषाक साहित्यक उदय पृथक रूप मे भिन्न-भिन्न समय मे भेल तथापि एहि सभ भाषाक स्वरूपक परिचय ई० सनक दशम शताब्दिए सँ भेटैत अछि जे तेरहम शताब्दी तक अपन कलेवर कें छोड़ि ध्वनि, व्याकरण और शब्दकोषक दृष्टि सँ नव आकार कें ग्रहण कए नेने छल जकरा मे आर्य परिवारक तत्सम तथा तद्भव शब्दक अतिरिक्त कतिपय आर्येतर शब्द विद्यमान अछि। ई सभ शब्द आग्नेय एवं द्रविड़ परिवारक थिक। तत्सम शब्द ओ थिक जकरा मे ध्वन्यात्मक नियमक अनुसार कोनो परिवर्तन नहि भेल। एकर अधिकांश शब्द समूह तद्भव अछि तथा शेष देशी शब्द थिक जकर सम्बन्ध संस्कृत शब्द सँ नहि अछि। एहि शब्द सभहक व्युत्पति संदिग्ध अछि जे कलान्तरमे देशी, व्यामिश्रित तथा अवहट्ठ कहौलक जकर तात्पर्य भ्रष्ट भाषा सँ छल।

अवहट्ठ भाषा मे रचल अधिकांश साहित्य जैन-धर्म सँ सम्बद्ध अछि जकरा पर शौरसेनीक प्रभाव मानल जाइछ जे समीचीन नहि प्रतीत होइछ किएक तँ ओहि युग मे समस्त उत्तरी-पूर्वी भारत मे वैष्णव धर्मक अभ्युदय भेल जकर प्रचार एवं प्रसारक माध्यम अवहट्ठे छल। कवि कोकिल विद्यापतिक राधाकृष्णक पद एहि निमित्त उत्तरी-पूर्वी भारतक जनमानस कें उद्वेलित कएलक तथा जन-सामान्यक लोक साहित्यक मार्ग कें प्रशस्त कएलक। फलस्वरूप जैनाचार्य लोकनि साहित्यक विविध अंग पर लेखनी उठौलनि। मान्यखेट (बरार), गुजरात, बंगाल और मिथिला मे अवहट्ठ कें राजाश्रय प्राप्त भेल। मान्यखेटक राष्ट्रकूट नृपति जे स्वयं तँ वैष्णव छलाह किन्तु हुनकर मंत्री लोकनि कतिपय जैन कवि कें आश्रय देल। बरार जे ओहि युग मे जैन वैश्य लोकनिक महत्वपूर्ण केन्द्र छल तथा समस्त भारतक वाणिज्य हिनकहि हाथ मे छल कतिपय जैन सन्त लोकनिकें आश्रय देल तथा जैन साहित्यक बड़ प्रगति ओतए भेल। पाछाँ राष्ट्रकूट राजाक पतनक उपरान्त साहित्यक केन्द्र बरार सँ गुजरात मे आएल। गुजरातक सोलंकी राजाक आश्रय] मे कतेको जैन कवि विद्यमान छलाह। बंगालक पाल राजाक आश्रय मे बौद्ध सिद्ध सन्त लोकनि दोहा एवं चर्यापदक रचना कए पूर्वी भाषाक मार्गक निर्देश कएलनि।

बारहम शताब्दीक मयरभट्ट 'धर्म मंगल काव्य'क रूप मे तथा रमाई पंडित "शून्य पुराण" क रचना कए बंगलाक साहित्यक रुप-रेखाक निरूपण कएलनि जकरा

चौदहम शताब्दी मे कवि कोकिल विद्यापति एवं चण्डीदास जनप्रियता प्रदान कएल। मिथिलाक कर्णाट और ओइनवार नृपतिक राजत्वकाल मे अवहट्ठक उत्कृष्ट रचना भेल तथा चौदहम शताब्दी मे तँ अवहट्ठ समस्त उत्तर पूर्व भारत मे साहित्यक भाषाक रूप मे मान्यता प्राप्त कएलक।

इएक कारण थिक जे अवहट्ठ भाषा मे लिखल ग्रन्थ गुजरात तथा बरार मे जे पाओल जाइछ ओकरा पर क्षेत्रियताक प्रभाव पाओल जाइछ। एकर अतिरिक्त जैन सन्त लोकनि चतुर्मास जतए कतहु बितौलनि तथा ओहि अवधि मे जँ कोनहु ग्रन्थक रचना कएलनि तँ ओ लोकनि अपन कृति मे ओहि स्थानक नाम अंकित करैत छलाह। अतएव एहि आधार पर कोनो कविक जन्मभूमि तथा ग्रन्थक भाषा केँ स्थानीय भाषा सँ सम्बद्ध मानब भ्रमात्मक होयत।

अवहट्ठ जकरा सँ समस्त पूर्वाञ्चलक भाषाक उद्‌भव भेल तथा जे कोनहु, समय लोक साहित्यक प्रतिनिधित्व समस्त उत्तर पूर्व भारत मे करैत छल अपन पूर्वक कलेवर केँ बदलि मैथिली, मगही, भोजपुरी, बंगला, असामी, उड़िया तथा नेपालीक रूप मे आब विद्यमान अछि।

मैथिली भाषा-भाषी हेबाक कारणे एहि भाषाक इतिहासक प्रति स्वभावतः अनुराग अछि। फलस्वरूप "अवहट्ठ : उद्‌भव ओ विकास" लिखल अछि। एहि मे हमरा कतए धरि सफलता भेटल अछि ई तँ विद्वद्‌गणक निर्णय पर निर्भर करैत अछि किन्तु एहि मे प्रतिपादित विषय-दोष, भाषाक दोष, एवं आन-आन त्रुटिक हेतु हम मिथिला एवं मैथिलीक विद्वान लोकनि सँ क्षमा याचना करैत छी तथा हुनका लोकनि सँ हमर अनुनय अछि जे जँ एहि मे कोनहुटा तथ्य होए तँ ओकरा अंगीकार करैथि अन्यथा मैथिलीक एक गोट पोथी बूझि हमरा क्षमा करैथि।

विद्यापति पावनि, — राजेश्वर झा

१६ नवम्बर, १९७५ ई०

# उद्भव

पूर्वी भारतीय भाषाक विकासक जे अवस्था अवहट्ठ नाम सँ प्रख्यात अछि ओकर प्राचीन रूप अपभ्रष्ट थिक। अपभ्रष्टक प्रसंग मे पतंजलिक वाक्य—

'न म्लेच्छितवै नापभाषितवै, म्लेच्छो ह वा एष यदपशब्दः, म्लेच्छा मा भूम इत्यध्येयं व्याकरणम् (महाभाष्य पस्पशाह्निक) जकरा कुमारिल भट्ट अपन तन्त्रवार्त्तिक मे दोहरौलनि अछि[1] सँ प्रतीत होइछ जे म्लेच्छ भाषा सँ बचवाक हेतु व्याकरणक अध्ययन आवश्यक भेल। म्लेच्छक अर्थ थिक अपशब्द। अपभाषण सँ अर्थात् अपशब्दक प्रयोग सँ बचवे तँ व्याकरणाध्ययनक लक्ष्य थिक। एहि प्रसंग मे पतंजलिक वाक्य—'भूयांसोऽपशब्दाः, अल्पीयांसः शब्दा इति'[2] बड़ महत्त्वक अछि। हुनका दृष्टियें 'दुष्टशब्द'क[3] अर्थात् अपशब्दक प्रयोग वाग्योगविद्[4] कें दोषास्पद बनबैत अछि। अतएव शब्दक यथावत् प्रयोगार्थं व्याकरणक विधानक प्रयोजन भेल। एहि सँ ई निस्सृत होइछ जे पतंजलिक समय अर्थात् १५० ई० पूर्व मे भारतीय आर्यभाषा मध्य अपभ्रष्ट या विकृत शब्दक प्रयोग प्रारम्भ भए गेल छल जाहि प्रवृत्ति कें रोकब पतंजलिक उद्देश्य छलनि।

अपभ्रष्टक सम्बन्ध मे ईसाक तेसर शताब्दीक भरत अपन नाट्यशास्त्र मे एवंक्रमें उल्लिखित कएलनि अछि—

विविधा जाति भाषा च प्रयोगे समुपहृता।
म्लेच्छदेशोपचारा च भारतं वर्षमाश्रिता॥

एहि सँ प्रतीत होइछ जे ईसाक तेसर शताब्दी मध्य विदेशी भाषा भारतवर्ष मे आश्रित भए जातिभाषाक रूप मे प्रख्यात भेल जकरा अपभ्रष्ट कहल गेल।

अपभ्रष्ट ईसाक दशम शताब्दी मध्य लौकिक वा लोकभाषा नामे सेहो विख्यात छल।[5] एहि प्रसंग मे १२म शताब्दीक दामोदर विरचित उक्तिव्यक्ति-

---

१. तन्त्रवार्त्तिक, पृष्ट २८३

२. महाभाष्य, प्रथम आह्निक।

३. दुष्टः शब्दः स्वरतो वर्णतो वा···दुष्टाञ्छब्दान्मा प्रयुंक्ष्महीत्यध्येयं व्याकरणम्।
महा० प्र० आ०

४. महा० प्र० आ०

५. अपशब्दो हि लोके प्रयुज्यते साधुशब्दसमानार्थश्च, महाभाष्यक ठीकाकार कैयट।

प्रकरण नितान्त महत्वपूर्ण अछि। एहि सँ ज्ञात होइछ जे प्रत्येक देश मे लोक द्वारा अपभ्रष्ट बाणी मे साहित्यक प्रतिपादन होइत छल जकरा लौकिक वा लोकभाषा कहल गेल अछि।[६] सर्वानन्दक टीका सर्वस्व मे जे ११६० ई०क अवहट्ठक ग्रन्थ थिक सँ लौकिक प्रेहलिका सँ सम्बद्ध पाँच गोट पद्य एतए उद्धृत कएल जाइछ[७] :—

( १ )

प्रश्न—को वर्णाद्यः क्व जलधिसुता कं च दीर्वादिसंज्ञम्
प्राहुर बुद्धः कमजयदसो तार्किकैः के क्रियन्ते।
आमन्त्र्यो विः कथय विदितं किं पदं हेतुवाचि
जा णच्चेउं महइ महिला सा-वि वोल्लेइ कीसे॥
उत्तर—अए चम्मारं वादा वेहि।

अर्थात् वर्णमालाक प्रथम अक्षर की थिक? "अ"। जलधिसुता अर्थात् लक्ष्मी कतए छथि? "विष्णुक संग"। किएक विद्वानलोकनि दीर्घकाल सँ विवेचना करैत छथि? "एकम्"क हेतुयें। बुद्ध ककरा जीतलनि? "मार" केँ। तार्किक की करैत छथि? "विवाद"। पक्षी केँ "वे" कहवाक थिक। कहू आपत्तिवोधक सर्वोत्तम ज्ञात शब्द की थिक? "ही"। कान्या नाचवाकाल की कहैत अछि? हे चमार ढोल वजाउ।

( २ )

प्र०—शब्दः कः स्यात् पुरुष वचनं कुण्डलौ कौ स्मरारेः
काम् अम्भोधेर् हरिर उदहरद् वीवधः पृच्छतीदम्।
हाण्डी कुण्डी आणेसि ण वडा कीस अंहार अत्थं
जे पुच्छिल्ला से पुणु परिहारुत्तरं कीस देइ॥
उ०—नाही कुम्भार।

अर्थात् पुरुषवचन वोधक कोन शब्द थिक? "ना"। शिवक कानक अलंकरण की थिकनि? "अहि"। सागर सँ हरि किनका रक्षा कएलनि? पृथ्वी केँ। कंधा पर आनवाक वस्तु केँ भार कहल जाइछ। भूखँ हाँड़ी, कुण्डी किएक नहि अनलह? जँ ककरहु एना डँटैत अछि तँ ओ पुरुष उत्तर दैत अछि—कुम्भार नहि छल।

६. उक्तिव्यक्तिप्रकरण, कारिका ६ और ७क व्याख्या।
७. सुकुमार सेन, प्राकृत एण्ड वर्नाकुलर वर्सेज इन धर्मदासज विदग्धमुखमण्डन, सिद्धभारती, भा० प्रथम, पृ० २५७—२६४

( ३ )

प्र०—जा णीआणइ निंदे विभोति सा किं वुच्चइ बोल्ल रे संभालि ।
जो तिल-सरिसव पोडइ घाणी कीस भणिज्जइ सो विण्णाणी ।।

उ०—सुतेल्ली ।

अर्थात् हे मित्र ! कहू ओहि स्त्री कें की कहबैक जे नीद्रा मे वेहोश रहि किछु नहि जनैत अछि ? "सुतेलि" । ओहि बनियाँ कें की कहबैक जे तिल और सरिसव कें संगहि घानी दैत अछि ? सुतेल्ली ।

( ४ )

प्र०—नीरसउ उण बहु-गुणमन्तउ भमइ निरन्तर निच्चलु होन्तउ ।
तरु गिज्जइ णउ फलु पत्तु तसु जो परिजाणइ पावइ से जसु ।।

उ०—गुणरुक्खो ।

अर्थात् नीरस भेलहुँ वहुगुण सँ सम्पन्न निरन्तर नीचे झेहछ । तरु थिक किन्तु फल-पात सँ विहीन अछि । जे एकरा बूझत ओ यशक भागी बनत । गुणरुक्ख अर्थात् डोरी ।

( ५ )

प्र०—घरि घरि बुल्लइ सअल-पिआरी जीवन्ती बेरयरी सा हो नारी ।
वन्धइ मुच्चइ खणि एकल्ली तह जाणह जह जाइ ण पेल्ली ।।

उ० पासासारी ।

अर्थात् सभहक प्रिये घर-घर घूमैत अछि, जाबत जीबैत अछि ताबत ओ नारी सभ सँ शत्रुता उत्पन्न करैत अछि । खने बंधन मे रहैछ, खने मुक्त और खने एकसरि । कहू ओ जावत फेकल नहि जाइछ तावत नहि घुमैत अछि ? पासासारी ।

अवहट्ठ प्रहेलिकाक प्रचलन मिथिला क्षेत्र मे बड़ व्यापक छल जकरा दृष्टकूट कहल जाइत छलैक । विवाह-द्विरागमनक अवसर पर बरियाती कें दृष्टकूट पुछबाक परिपाटी मिथिलाक संस्कृति मध्य बड़ प्राचीन एवं व्यापक छल । दृष्टकूट ओ प्रहेलिका छल जकर अर्थ तँ छलैक किन्तु वाह्य आचरण कुटिल होइत छल । बुद्धिक परीक्षाक हेतु दृष्टकूट मे प्रश्न कएल जाइत छलैक और पुनः ओकर प्रतिस्पर्धा मे दृष्टकूटे द्वारा

प्रत्युत्तर देल जाइत छल। एहि सँ सम्बन्धित निम्नलिखित पद्य उद्धृत कएल जाइछ :—

( १ )

प्र०—मध्य निर्मित मनोहर वेदिः प्रेक्षणादिककुतूहल पूर्णः ।
गीतलीन तरुणीगण रम्यः स्वर्ग खण्ड इव मंडप एषः ॥

उ०—जेनइ मध्यि चहु दिसि नूतन वेहि ज्वारा करिउ मंडित ।
लक्ष्मी करिउ अखंडित चउरी चतुर चित्तु चोरइ ॥
प्रेक्ष्यनीय प्रमुख कुतुहल संकुलु ।
धवल मंगल गीतगान तत्पर सुन्दर-सुन्दरी-जन मनोहर ॥
विचित्र पवित्र चंद्रोदय सहितु स्वर्ग खण्ड विजित्वरु मंडपु सोभइ ।

( २ )

प्र०—तप्तं तपः साधुजनाय दत्तं दानं स्मृता पंचनमस्क्रिया च ।
सतीर्थ यात्रा विहिता च तेन पुण्येन लब्धा भवतः स्वसेयं ॥

उ०—मइ पूर्विलइ भवि निर्मलुबार भेदु तपु कीधउ ।
चारि त्रिया तपोधन किही भावना पूर्वकु दान दीधउ ।
अनइ जिनशासन सारु, पंच परमेष्टि नमस्कार स्मरपउं ।
श्री शत्रुंजय गिरिनार सरीखइ तीर्थि जाइउ ।
श्री वीतराग पूज्या, तीणि पुण्यकरिउ मइ ताहिरी वहिणलाधी ॥

कविकोकिल सेहो प्रहेलिकाक चर्चा अपन गीत मे ठाम-ठाम कएलनि अछि :—

माधव माधव होहु समधान ।
तुअ विनु करब भुवन रितुपान ॥
प्रथम पचीस अठाइस भेल ।
ता सम वदन हेम हरि लेल ॥
पचिस अठारह बिस तनुजार ।
छिति सुत तेसर से जीव मार ॥
सुमिरिय माधव ते दिन सिनेह ।
जे दिन सिंह गेल मीनक गेह ॥
भनइ विद्यापति आखर लेख ।
बुधजन होथि से कहथि विशेष ॥

एहि गीत मे भुवनरितुक अर्थ विष; प्रथम अक्षरक अर्थ क; पचीसमक म; तथा अठाइसमक अर्थ ल कएल गेल अछि। अतः प्रथम पचीस अठाइसक अर्थ भेल 'कमल'। हेमक अर्थ भेल विरहरूपी पाला। पचीसक अर्थ म, अठारहक द, तथा बीसमक न अर्थात पचीस अठारह बीसक अर्थ भेल मदन। छिति सुतक अर्थ मंगल, तेसरक अर्थ भेल तेसर स्थान अर्थात् शुक्र प्रभातकाल मे उदित होइछ। सिंहक अर्थक नाम भेल म अर्थात् जाहि अक्षर सँ शब्दक आरम्भ होइछ जेना मस्तक तथा मीन राशिक नाम भेल प अक्षर अर्थात् पद। भावार्थ भेल जे जाहि दिन सिंह राशि मीनक घर गेल अर्थात् मस्तक पायर पर पड़ल।

वस्तुतः एवंक्रमक लौकिक पद्य मिथिला मे परम्परा सँ लोककंठ मे परिव्याप्त अछि जकर संग्रह होयब नितान्त आवश्यक थिक।

लौकिक शब्दक प्रसंग मे चरकक टीकाकार चक्रपाणिदत्त तथा सुश्रुतक टीकाकार दलहन जे प्रायः ११म तथा १२म शताब्दीक थिकाह पूर्वदेशमे प्रचलित शब्दक क्रम मे 'इति लोके' तथा 'इति लोके ख्याते' एहि दुई गोट वाक्यक उल्लेख करैत अखरोट, अंकोल, अमरा, अमल-चँगेरी, घेवर, धामन, वकुच्ची, हरिताल आदि शब्दक चर्चा करैत छथि जे पूर्णतः मैथिलीक शब्द थिक।

मैथिली भाषाक उद्भवक प्रसंग मे मुण्डारी या कोलियारी भाषाक विश्लेषण एवं विवेचन होयब बड़ अनिवार्य अछि जकर प्रत्यक्ष प्रभाव पूर्वाञ्चलक भाषा एवं संस्कृतिक ऊपर पाओल जाइछ।

कोल जातिक मुण्डा, संताल, खरिया, हो, असुर, बिरहोर आदि प्रमुख शाखा अछि। एहि मे कोल और भील प्रधान अछि जे भारतीय संस्कृति और सभ्यता केँ अंगीकार कएलक। प्रो० सिल्युस्की प्राचीन संस्कृत साहित्य मे वर्णित "पुलिन्द कुलिन्द" केँ मुण्डा या कोल मानैत छथि।[८] संस्कृत साहित्य मे वर्णित निषाद जातिक सम्बन्ध सेहो कोल जातिए सँ अछि जे भील और सवर दूई गोट शाखा मे विभक्त छल। कोल जातिक एक शाखा ओरांव अछि जे अपना केँ "कुरुख" कहैत अछि जकरा धाँगर, कुदा, मोदी और किसान सेहो कहल जाइछ।[९] धाँगरक सम्बन्ध धानक खेत सँ; कुदाक धरतीक कोरबा सँ; मोदीक सम्बन्ध बाँध बाँधवा सँ तथा किसानक सम्बन्ध खेती-बारी सँ अछि।

---

८. मैन इन इण्डिया, अंक १०, भाग २-३, पृ० १८५

९. ओतहि, अंक ११, भाग १-२, पृ० ३०

कोल और द्रविड़ केँ किछु विद्वान एके मानैत छथि किन्तु ई दुहु भिन्न-भिन्न शाखाक जाति थिक जकर आगमन भारतवर्ष मे भिन्न-भिन्न समय मे भेल। कोल जाति दक्षिण-पूर्व सँ आयल तथा सम्पूर्ण देश मे प्रसारित भेल। एहि जाति केँ द्रविड़ जातिक लोक उत्तर-पश्चिम सँ आबि पर्वत शृङ्खला मे भगौलक जकर दशा सेहो पश्चात् आर्यक द्वारा ओहि क्रमक भेल। इएह कारण थिक जे कोल जाति आर्यक संस्कृति एवं धर्म केँ तँ अंगीकार कएलक किन्तु द्रविड़ अहुखन अपन पूर्वक संस्कृति, धर्म और भाषा केँ सुरक्षित रखने अछि जकर प्रभाव पूर्वाञ्चलक भाषाक ऊपर पाओल जाइछ। हो भाषाक जे मुण्डारोए भाषाक एक गोट रूप थिक मैथिली भाषाक ऊपर प्रभाव पाओल जाइछ तथा मैथिलीक असंख्य शब्द—सिगार, लाभ, वोदोल, जोन्तु, कोतो (कतेक), गुस (घुस), कोनिया (कनिया), बोर (वर), डाकू, अटकर, सिकरी, हट, हाट, पुरा, अकाचका, चरी, दावी, रोग आदि हो भाषाहि सँ सम्बद्ध अछि। एहि तरहेँ द्रविड़क दोसर शाखा "कुरुख" भाषाक शब्दक सम्मिश्रण सेहो मैथिली मे पाओल जाइछ। कुरुख भाषाक जिया-काया (जीव और काया); इजब (उठब), खोटब, होअब आदि कतिपय शब्द मैथिली मे तँ प्रयुक्त होइतहिँ अछि संगहि कुरुख भाषाक सम्प्रदान कारकक "गे" प्रत्यय, तेलगू मे "की", केनाड़ी मे गे; भोजपुरी ओर बंगला मे 'के' तथा मैथिली मे के, केँ, कैँ एवं कांक रूप मे व्यवहृत पाओल जाइछ। एवंक्रमेँ संताली भाषाक व्याकरणक तँ पूर्ण प्रभावे मैथिली व्याकरणक ऊपर अछि।

संताली भाषा मे प्रयुक्त "रे" प्रत्यय आन शब्दक संग मिलि पृथक रूप मे संयुक्त प्रत्यय बनैत अछि जेना तल शब्द मे "रे" प्रत्यय मिलि "तलरे" शब्द बनल जकर अर्थ भेल तल—मध्य और रे—मे अर्थात् मध्य मे जकरा सँ मैथिलीक "तर-मे" शब्द बनल जेना गाछ तर मे, घर तर मे आदि। एहि तरहेँ संताली भाषा मे प्रयुक्त "मे" प्रत्यय मैथिली भाषाक अधिकरण कारकक रूप मे व्यवहृत होइछ। संताली भाषाक "मेत मे", "खेत मे" शब्द सँ मैथिलीक घर मे, खेत मे, खेल मे आदि शब्द साम्य प्रतीत होइछ तथा क प्रत्यान्त संताली शब्द—उनाक, नुनाक, इनाक, नीनाक आदि शब्द सँ मैथिलीक हुनक, तिनक, हिनक आदि शब्द बनल। एवंक्रमेँ संताली भाषाक व्याकरणक आनो-आन नियम सँ मैथिली भाषाक व्याकरणक नियम साम्य अछि।

एहि प्रसंग मे 'जर्नल आफ दि अमेरिकन ओरिएन्टल सोसाइटी', अंक ८२, भाग ३, पृ० ४०२ मे डा० सुभद्र झाक 'फोरमेसन आफ दि मैथिली लैंगुएज' क ऊपर श्री के० डे० व्रोसेक समालोचना निबंध बड़ महत्वपूर्ण अछि जकरा स्वतः डा० झा

वार्त्तािक क्रम मे समोचीन, तथ्यपूर्ण एवं युक्तिसंगत मानलनि अछि। अतएव समालोचनाक किछु तथ्य कें नमूनाक क्रम मे एतए प्रस्तुत करब उपयुक्त प्रतीत होइछ।

डा० सुभद्र झाक कथन जे वाचस्पति मिश्र द्वारा प्रयुक्त "हरी" शब्द मैथिलीक शब्द थिक कें उपयुंक्त निबंध मे संताली भाषाक "हरी" तथा "हरी-वीरी" शब्द सँ उद्भूत कहल गेल अछि। डा० झाक मैथिलीक वाक्यरचना तथा विशेषण एवं विशेष्य शब्दक प्रसंगक लालटेस, उज्जर धप-धप, पीयर ढाउस, कारीखटखट, हरीयरकचोर आदि कें संतालीएक शब्द मानल गेल अछि। एहि तरहें झनकब, सनकब आदि सेहो संतालीएक शब्द थिक। मैथिलीक वाक्यरचना एवं उच्चारण मे संतालीक प्रभावक दिग्दर्शन तँ कराओले गेल अछि संगहि मैथिली-व्याकरणक नियमक उद्भव मे सेहो संतालीक श्रेय मानल गेल अछि तथा क्रियाविशेषण सँ उद्भूत यौगिक क्रिया शब्द—भीतर, बाहर, ऊपर, पछुआ, अगुआ आदि कें संतालीएक डारि कहल गेल अछि। एवंक्रमें मैथिलीक ढोढ़ शब्दक उद्भव कें डा० झा संस्कृतक दुंदुभि शब्दक द शब्द सँ मानलनि अछि किन्तु निबंध मे ढोढ़ शब्द कें संतालीक शब्द कहल गेल अछि। मैथिलीक कुब्बर शब्द संस्कृतक कुब्जक सँ उद्भूत नहि भए संताली भाषाक कुब्बड़ा या कुबरा सँ तथा चापब शब्द संस्कृतक क्षपति सँ उद्भूत नहि भए संतालीक चापौ सँ उद्भूत मानल गेल आछि।

मैथिली मे प्रयुक्त 'उ' उपसर्गक उद्भव संस्कृतक उद् सँ डा० झा मानलनि अछि किन्तु निबंध मे उनटा, उल्ल-फुल्ल आदि शब्द कें संतालीक शब्द तथा 'उ' उपसर्गक उद्भवक आधार संतालीए कें मानल गेल अछि। एहि तरहें भीर, टुक, फरी, फार, घेर, घर, दब, आदि कें संतालीएक शब्द मानल गेल अछि तथा क्रियाविशेषणक शब्द फेर संस्कृतक पुनः शब्द सँ उद्भूत नहि भए संतालीक फेराओ और फेराफेरी शब्द सँ भेल अछि। एवंक्रमें बहुरी शब्दक सम्बन्ध संतालीक बिहुर शब्द सँ अछि। मैथिलीक चुपेचाप शब्द संस्कृतक चपन सँ उद्भूत नहि भए संताली शब्द चुपचाप सँ तथा चप-चप, टक-टक, टकटकी, भरखरि आदि शब्द कें संतालीए भाषाक शब्द मानल गेल आछि।

अधिकांश मैथिली शब्दक उद्भवक प्रसंगक डा० झाक वचन जे एहि शब्द सभहक उद्भवस्रोत संदिग्ध अछि कें निबंध मे संताली सँ उद्भूत मानल गेल अछि यथा—उखरि शब्द संतालीक उखरि सँ; टुगर शब्द टुअर सँ; टोक संतालीक टोकौउ शब्द सँ; टहलब संतालीक टहलौउ सँ; ठठरी संतालीक ठठरा सँ; डगर संतालीक डहर शब्द सँ; डेली शब्द संतालीक डीली शब्द सँ तथा लवरा, डवरा, एड़ी आदि शब्दक सम्बन्ध विशुद्ध संतालीए भाषाक शब्द सँ अछि।

मैथिलीक शब्द तथा व्याकरणक उद्‌भव में संताली भाषाक अतिरिक्त मुण्डारी भाषाक प्रभावक चर्चा सेहो उपयुंक्त निबन्ध मे कएल गेल अछि तथा क्रियात्मक प्रयोगक शब्द कपच, झपट आदिक उद्‌भव मुण्डारी शब्द कपचोउ, झपटोउ आदि शब्द सँ मानल गेल अछि।

उपयुंक्त निबंधक तथ्यक विश्लेषण सँ निस्सृत होइछ जे मैथिली भाषाक इतिहास जे बड़ प्राचीन अछि संताली एवं मुण्डारी भाषा सँ क्रमशः पूर्ण प्रभावित भेल तथा मैथिलीक विकास मे एहि भाषा सभहक बड़ पैघ अवदान पाओल जाइछ, जकर स्पष्ट छाप पुर्वाञ्चलक भाषाक ऊपर अछि।

पी० ओ० बोडिङ्ग 'संताल कोष', भाग ३क भूमिका मे लिखलनि अछि जे की ई स्वभाविक एवं तथ्यपूर्ण नहि थिक जे संतालक भाषा ओहि भाषा सँ प्रभावित भेल अछि जकरा संग रहबाक ओकरालोकनि कें अवसर भेटलैक अछि ? मात्र इएह कारण थिक जे ७५ प्रतिशत संताली भाषाक शब्द ठेठ मैथिलीक शब्द थिक जेना—अगर-बगर, अगर-विगर, कुरकुर, कुट्टी, खाक, चप-चप, चर-चर, चढ़हा-चढ़ही, चटिया, चटकी, चटनी, छमक-दमक, छम-छम, छट-पट, जाल-जंजाल, जाति-पाति, दुषा-दुषो, धाम-धूम, धामस-धुमुस, धार-धुर, देखजोख, गुदगुद, गुलगुल, घचपच, घनरघनर, घसर-घुसुर, घसर-पसर, सिकरी-मकरी, तनातन, तपतप इत्यादि।

मैथिलीभाषीक संग संतालक संपर्क बढ़ैत गेल तथा दुहु दिशि सँ शब्दा-वलीक आदान-प्रदान होमय लागल। आगि तथा आगि सँ कोनो चीज कें भुजवाक संगहि "सेंगल" शब्द सँ मैथिलीक सेकल; "जोल" सँ जराएव; "इसिन" सँ उसनब आदि शब्दक उद्‌भव भेल। गामक अर्थ मे संतालीक "आतो" एवं मुण्डारीक "हातो" शब्द व्यवहृत अछि। की मैथिलीक "हाता" शब्द एहि सँ साम्य नहि अछि ?

संताली भाषा कें सेहो मैथिली कोनो ने कोनो रूप मे अवश्य प्रभावित कएलक जकर तुलनात्मक अध्ययनक आवश्यकता अछि।

एहि तरहें रेभ० जॉन हॉफमन इन्साइक्लोपीडिया मुण्डारिका, भाग प्रथमक भूमिका, पृष्ठ-२-३ मे उल्लेख कएलनि अछि जे आर्य भाषाक अनेक शब्द मुण्डारी भाषा मे सन्निहित अछि। ओहि शब्द सभ मे सँ कतिपय शब्द तँ संस्कृत सँ तथा कतिपय आन-आन भारतीय भाषा सँ सम्बन्धित अछि। अतएव की एहि सँ ई नहि निष्कर्ष कएल जाए सकैछ जे आर्य भाषा तथा मुण्डारी भाषा दुहुक स्रोत अतिप्राचीन काल मे एके छल ?

एहि प्रसंग मे पैशाची भाषाक प्रसंगक विश्लेषण बड़ महत्वक होयत।

पैशाची कें भूतभाषा सेहो कहल जाइत छल। पिशाच या भूत नामक जाति नीच श्रेणीक जाति छल। धनंजय अपन दशरूपक मे एहि तरहें एहि प्रसंगक उल्लेख कएलनि अछि :—

पिशाचात्यन्तनीचादौ पैशाचं मागधं तथा।
यद्देशं नीचपात्रं यत्तद्देशं तस्य भाषितम् ॥२।६६॥

धनंजयक पूर्वक लेखकलोकनिक अनुसार पैशाची अथवा भूतभाषा नीच जातिक भाषा छल जकरा प्रत्येक देशक ओहि श्रेणीक लोक व्यवहार करैत छल अर्थात् प्रत्येक देशक पृथक-पृथक पैशाची भाषा छलैक। हार्नलीक[१०] अनुसार पैशाची निम्न श्रेणीक प्राकृत छल जे द्रविड़ जातिक द्वारा बाजल जाइत छलैक। सेनार्ट पैशाची कें अपभ्रंश मानैत छथि तथा वररुचि पैशाचीक प्रयोग नहि कए एहि भाषा कें प्रायः सेहो अपभ्रंशे मानलनि अछि। धनंजय पिशाच ओर मागध कें समान मानैत छथि तथा राजशेखर संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश सँ पृथक भूतभाषा अर्थात् देशीभाषा जकर तात्पर्य गामघरक भाषा सँ छल मानलनि अछि एवं काव्य-पुरुषक चरण कें पैशाचीक संज्ञा देलनि अछि।

देशी भाषाक प्रसंग मे भरतक नाट्यशास्त्र मे बड़ विशिष्ट वर्णन पाओल जाइछ। संस्कृत एवं प्राकृत भाषा चारि प्रकारक होइत छल जकरा अभिभाषा (अतिभाषा), आर्यभाषा (अर्धभाषा), जातिभाषा तथा जात्यंतरी भाषा कहल जाइत छलैक। अभिभाषा देवतालोकनिक, आर्यभाषा राजालोकनिक संस्कारयुक्त शब्द सँ सम्पन्न, जातिभाषा म्लेछ शब्द सँ युक्त तथा जात्यंतरी भाषा ग्राम, अरण्यक पशुक भाषा छल।[११]

पैशाची भाषाक प्रसंग मे तिब्बती परम्पराक बड़ महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। तिब्वतीक अनुसार तिब्बत मे 'स्थविर' लोकनि अपन धर्मग्रन्थ कें पैशाची भाषा मे लिखैत छलाह[१२]।

एहिसभ सँ निस्सृत होइछ जे पैशाची गाम-घर मे रहनिहारक भाषा छल जे व्याकरणक नियम सँ स्वतन्त्र एवं स्वच्छन्द छल। अहोम भाषा मे "खउ" शब्दक अर्थ होइछ धान ओर मिथिला मे जतए धानक बोझ राखल जाइछ ओकरा "खउ-महार" कहल जाइछ। "खउमहार" शब्दक सम्बन्ध अहोम भाषाक "खउ" शब्द सँ अछि।

---

१०. गोडियन ग्रामर, ११

११. नाट्यशास्त्र, अध्याय १७

१२. लोकोतें, एसेज आन वृहत्कथा, पृ० ३७

मैथिली भाषी क्षेत्रक दक्षिणी पूर्वी भाग मे मुण्डा, शवर तथा द्रविड़ जातिक लोक अछि। संताल, मुण्डा, ओराँव आदि जाति प्रागैतिहासिक मुण्डा तथा द्रविड़ जातिक वंशपरम्पराक थिक। फलस्वरूप मुण्डारी भाषाक असंख्य शब्द ठेठ मैथिली शब्दक रूप मे प्रयुक्त पाओल जाइछ जेना--अकवक, अकिल, बेर-बेर, विदिर-विदिर, गम-गम, गप-सप, गड़-बड़, हर-वर, हराहुरी, जप-जाप, जवे-जवे, जोर-जुलुम, जोरा-जोरी, लदवद, लुदुर-लुदुर, लतर-पतर, ललोपतो, लुतफुत इत्यादि।

पूर्वी भारतीय भाषाक ऊपर द्रविड़ भाषाक प्रभावक प्रसंग मे प्रो० एस० लेवीक मत थिक जे प्राचीन भारतक किछु भौगोलिक नाम जेना—कोसल-तोसल, अंग-बंग, कलिंग-त्रिलिंग, उत्कल-मेकल तथा पुलिन्द-कुलिन्द जाति सम्बन्धी युगल नाम आग्नेय देशी भाषाक पद रचनात्मक व्यवस्था द्वारा प्रभावित अछि। भारतक आधुनिक पूर्वी भाषाक सम्बन्ध मे प्रो० सिल्युस्कीक निर्णय बड़ मनोरंजक अछि। ओ अपन एक निबंध मे बंगलाक कुड़ी शब्दक (जकर तात्पर्य बीस सँ थिक तथा जे शब्द मिथिलाञ्चल मे सेहो व्यवहृत एहि अर्थ मे अछि) उत्पत्तिआग्नेय देशी क्षेत्र सँ मानलनि अछि तथा संख्याक उत्पत्ति कौड़ी सँ निश्चित कएलनि अछि।[१३]

एवंक्रमें भारतीय आर्यभाषाक ताम्बूल, ताम्बूली, तम्बूली, ताम्बूलम शब्द आग्नेय देशी थिक। पानक खिल्ली बनेबाक निमित्त ओकर पात कें मोड़ल जाइछ। कम्बोडी भाषा मे मोड़वाक तथा ओहि सँ संबद्ध विचारक हेतु मुर-मोड़व, मुल-गोल, गेमुल-मोड़ आदि शब्द अछि। संताली भाषा मे एहि सँ संबद्ध शब्द अछि गुल्लु-मुल्लु अर्थात् तरहथ्थी पर गढ़िकए गोल करब। अतएव आग्नेय देशी भाषाक एक क्रियात्मक धातु मुल<मुर थिक जकर अर्थ थिक मोड़ब। पानक पात अर्थात् जे मोड़ल जाइछ प्रायः एहि धातु सँ नाम पड़ल। एहि तरहें ऋग्वेदक मयूर शब्द मयूक, मरू तथा मरूक शब्द सँ उद्भूत भेल।

एहि तरहें तिब्बती शब्दक प्रभाव पूर्वी भारतीय भाषाक ऊपर सेहो परिलक्षित होइछ। हर्षक मृत्युक उपरान्त अर्थात् ई० सनक सातम शताब्दी मे मिथिला पर तिब्बती आक्रमण भेल तथा किछु दिनक हेतु मिथिला तिब्बती प्रशासनक अन्दर आयल। एकर अतिरिक्त सातम शताब्दी सँ तेरहम शताब्दी धरि पूर्वी भारत एवं तिब्बतक बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध बनल रहल। फलस्वरूप ह्वेनसांग कें जे सातम शताब्दी मे भारतक भ्रमण कएलनि बंगाल-असमक सीमावर्ती क्षेत्रक वासी तिब्बती-चीनी जाति सँ साम्य प्रतीत भेलनि।

---

१३. शिव शेखर मिश्र, भारतीय संस्कृत में आर्येतरांश, पृ० ३३

पूर्वी भाषाक ऊपर तिब्बती शब्दक प्रभावक प्रसंग मे तिब्बती शब्द "वंस" बड़ महत्वक अछि। वंस शब्दक अर्थ थिक आद्र अर्थात् दल-दल। बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय मे सोलह जनपदक वर्णनक क्रम मे मात्र एकहि स्थल पर वंग शब्दक उल्लेख कएल गेल अछि किन्तु वंस शब्दक उल्लेख अनेक स्थल पर पाओल जाइछ। वंस शब्दक तिब्बती उच्चारण बङ् होइछ जकरा सँ बङ्ग शब्दक उत्पत्ति भेल तथा 'आल' शब्दक संबन्ध द्रविड़क "आल" शब्द सं अछि जकर अर्थ होइछ राखब। अतएव बंगालक नामकरण मे तिब्बती एवं द्रविड़क संयुक्त शब्द कें श्रेय अछि। एहि तरहें तिब्बती शब्द क्लैकअ सँ कलङ्क; ह्द्जमवु सँ जम, ड्रुनवअ सँ डोम शब्दक उद्भव भेल।

द्रविड़ भाषाक प्रभाव पूर्वी भारतीय भाषाक ऊपर सेहो पाओल जाइछ। द्रविड़ शब्द एँड सँ एँड़ी; मूलै सँ मुड़ी, तथा नरव् सँ नस शब्दक उद्भव भेल। एवंक्रमें पूर्वी भारतीय भाषाक शिखा, चिकठल, झिङ्गा आदि शब्द द्रविड़ भाषाक शब्द थिक।

किछु द्रविड़ भाषाक ऐहेन शब्द अछि जकर विश्लेषण बड़ विलक्षण अछि। एहि प्रसंगक एक गोट शब्द अछि उल्ला। उल शब्दक अर्थ होइछ मरब या चिकरब। एहि शब्द सँ उल्का और हल्ला शब्द बनल। चिक्का और कबड्डीक सम्बन्ध द्रविड़हि सँ अछि। एहि खेलक तात्पर्य नकली युद्ध और ओकर मोर्चा सँ थिक जे एहि विशाल देशक आदिवासी लोकनिक द्वारा पूर्व मे प्रयुक्त छल। एवंक्रमें चिड़िया, चील, चिल्होर, चिरई शब्द द्रविड़ शब्द थिक तथा द्रविड़ शब्द कुयिल सँ कोइली, चू सँ चू ध्वनि आदि शब्द सम्बद्ध अछि।

एवंक्रमें पूर्वांचलक सम्पर्क मे रहला सँ मुण्डारी एवं द्रविड़ भाषाक ऊपर पूर्वांचलक भाषाक प्रभाव सेहो पाओल जाइछ कथा कतिपय पुर्वांचलक भाषाक शब्द मुण्डारी एवं द्रविड़ भाषा मे सेहो प्रयुक्त होइत अछि।

एहि तरहें टर्नर नेपाली कोषक भूमिका, पृ० १४ मे उल्लेख कएलनि अछि जे नेपाली भाषा पर समतल भूमिक बड़ प्रभाव परिलक्षित अछि। एकर अतिरिक्त नेपालक कान्तिपुर, भातगाँव, वेनपा और पाटनक राजदरबार मे कतिपय मैथिली भाषा मे नाटक एवं सरस गीति-काव्यक रचना १३म-१४म शताब्दी मे भेल। फलतः नेपाली भाषाक उद्भव ओ विकास मे मैथिलीक अवदान तँ अछिये संगहि नेपाली भाषाक ७५ प्रतिशत शब्द—अगल-बगल, अकिल, अगोचर, अट्टान, अदल-वदल, अवकाश, कचर-कचर, खनाखन, गमागम, चकनाचुर, चकाचक, छनाछन, छन-छन, छानविन, छाम-छुम, छुत-छात, झल-झल, झिसि-मिसि, भास-भुस, हकार-पम्हार, हाक-पाक इत्यादि ठेठ मैथिलीक शब्द थिक।

एहि प्रसंग मे डा० सुनीति कुमार चटर्जी अपन ग्रन्थ ओरिजिन एण्ड डेभलपमेन्ट आफ दि बंगाली लैंग्वेज, भाग १ मे लिखलनि अछि जे खसकुरा जकरा पर्वतिया, गोरखाली या नेपाली कहल जाइछ, बड़ प्रख्यात पहाड़ी भाषा थिक।

एहि भाषाक सम्बन्ध नेपालक तिब्बती-बर्मी भाषा सँ अछि जे ईसवीसनक अट्ठारहम शताब्दी सँ किन्नहु प्राचीन नहि भए सकैछ। ई भाषा पश्चिमी नेपाल मे प्रसारित छल तथा पुर्वी नेपाल मे खसकुराक आगमनक पूर्वें सँ मैथिलीक प्रधानता छलैक[१४]। वस्तुतः नेपालक तिब्बती-बर्मी नेवार शासनक प्रारम्भे सँ अठारहम शताब्दीक मध्य धरि मैथिली नेपालक सांस्कृतिक भाषा छल जकर पुष्टि एहि भाषा मे नेपाल मे लिखल गेल असंख्य नाटक सभ सँ होइत अछि।

एकर अतिरिक्त असमक खासी, मौन एवं ख्मेरक प्रारम्भिक इतिहास अर्थात् तिब्बती चोनी द्वारा विजित एवं सम्मिश्रणक पूर्व मे जखन ओलोकनि सम्पूर्ण बर्मा ओर इन्डोचीन मे पसरल छलाह एहि कल्पना कें साकार करैत अछि जे अतिप्राचीन काल सँ मोन-ख्मेर जाति मध्य एशिया सँ गंगाक समतल भू-भाग तथा ओतए सँ कंबोडिया तकक भूभाग मे पसरि गेल। एहि जातिक एक गोट शाखा कोल जाति छल जे आर्य भाषा के स्वीकार कए हिन्दू संस्कृतिक एक अंग बनि गेल।[१५]

तिब्बती-बर्मी जातिक एक गोट शाखा तिब्बती जातिक रूप मे परिणत भए नेपालक हिमालय-तराय, उत्तरी बिहार (मिथिला), बंगाल और असम मे बसि कोल और द्रविड़ जातिक संग घुलि-मिलि कें गंगाक समतल भूमिक भाषाक ऊपर अपन प्रभाव स्थापित कएलक।[१६] प्रतीत होइछ जे नेपालतरायक सप्तरीक प्रख्यात गाम कोइलारीक सम्बन्ध प्रायः कोल जातिक निवासस्थलक रूप मे अछि तथा लोरिकाइनक कोलमकरा राजाक सम्बन्ध कोले सँ छल जे प्रायः १०म-११म शताब्दी मध्य मिथिलाञ्चलक कोनो क्षेत्रीय शासक होयताह।

उपर्युक्त विश्लेषण सँ निस्सृत होइछ जे भरत जाहि विभाषा कें स्वीकार कएलनि अछि ओ गह्वर-गुफा तथा प्रकृतिक एकान्त स्थल मे रहनिहार प्रकृतिवासीक उक्ति छल जे आर्यभाषाक संग मिश्रित भए व्यामिश्रक भाषाक नामे

---

१४ पृ० १०

१५ सुनीतिकुमार चटर्जी, ओरिजिन एण्ड डेवलपमेन्ट आफ दि बंगाली लैंग्वेज, भाग १, पृ० २९

१६ ओतहि, पृ० २९-३०

उल्लिखित[१७] भए अपभ्रष्ट नामें सम्बोधित भेल जे पश्चात लौकिक, ग्राम्य और देशी कहौलक। नामिसाधु काव्यालंकारक टीका मे; हेमचन्द्र काव्यानुशासन मे तथा वाग्भट्ट ग्राम्य भाषाक उल्लेख कएलनि अछि। एहि सँ प्रतीत होइछ जे ओहि युग मे क्षेत्रिय भाषा मे साहित्यक रचना प्रारम्भ भए गेल छल। नव काव्यक भाषा कें देशी कहबाक प्रथा एतए बड़ पुरान अछि। स्वतः पाणिनि संस्कृत कें "लोके वेदे च" अर्थात् लौकिक भाषा कहलनि अछि। पश्चात प्राकृत, अपभ्रंश और अवहट्ठ देशी नाम सँ सम्बोधित भेल। स्वयंभू तथा पुष्पदंत सन कवि अपन भाषा कें देशीभाषा तथा विद्यापति देशीवचनक संग अवहट्ठ कें नियोजित कएलनि।

देशीभाषाक प्रसंग मे डा० गजानन वासुदेव तगारेक मत थिक जे देशी भाषाक शब्द संस्कृतक नियम सँ पूर्णतः स्वच्छन्द और स्वतन्त्र[१८] अछि जकरा पर क्षेत्रियताक प्रभाव परिलक्षित अछि। एहि तरहें कालक्रमें जेना प्राकृति-अपभ्रंशक ग्रन्थ मे जतए संस्कृतक हेतु सक्कय, प्राकृतक हेतु पाइय ओ पाउँअ, अपभ्रंशक हेतु अवहंस तथा अब्भंस इत्यादि रूप प्रयुक्त भेल तहिना अवहत्थ, अवहठ, अवहट, आदि रूप अपभ्रष्टक तद्भव रूप थिक जकर प्रयोग पूर्वी भारतीय भाषाक परवर्ती कविलोकनि विशेषतः कएलनि। ईसाक ८म शताब्दी मे स्वयंभू अवहत्थ[१९] शब्दक, १२म शताब्दीक अद्दहमाण अवहट्ट शब्दक[२०], १३म शताब्दीक ज्यतिरीश्वर अवहठ[२१] शब्दक, १४म शताब्दीक विद्यापति अवहट्ठ[२२] शब्दक तथा १६म शताब्दीक प्राकृत-पैंगलमक टीकाकार वंशीधर[२३] अवहट् शब्दक प्रयोग कएलनि अछि जनिका सभहक सम्बन्ध पूर्व देश सँ छल। पूर्वी अवहट्ठक सम्बन्ध मे १०४२ ई० मे लिखल गेल दानपत्र बड़ महत्वपूर्ण अछि जे कलचुरी नरेश कर्णदेवक पिता

---

१७ लेखकक मैथिली साहित्यक आदिकाल, पृ० ३३

१८ हिस्टोरिकल ग्रामर आफ अपभ्रंश, भूमिका, पृ० ७

१९ अवहत्थे वि खल-यणु णिरवसेसु।—पउम चरिउ

२० अवहट्टय सक्कय-पाइयंमि भासाए।
लक्खन छंदाहरणे सुकइत्त भूसियं जेहिं॥ —संदेशरासक, प० क० ६

२१ पुनु कइसन भाट संस्कृत पराकृत पैशाची सौरसेनी मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ, वर्णरत्नाकार, पृ० ४४

२२ देसिल वयना सवजन मिट्ठा।
तं तैसन जम्पओ अवहट्ठा, कीर्तिलता, पृ० ६

२३ प्रथमो भाषा तरंडः प्रथम आद्यः भाषा अवहट् भाषा, प्रा० पै० टीका।

गांगेयदेवक प्रयाग मे श्राद्धक अवसर परहक थिक। ताम्रपत्रक १२म छंद कें देशी भाषा कहल गेल अछि जे एहि तरहक अछि :—

होहिति एत्थबंसे पुरिसा एहइय गारव महाग्घा।
इय हाविअण जेणं पालीण परिग्गहो गहियो॥

उपर्यक्त भाषाक सम्बन्ध पूर्वी भाषा सँ थिक किएक तँ दानपत्र जाहि पंडित केँ देल गेल छल ओ वैशालीक निवासी छलाह[२४] तथा कलचुरी नरेशक शासनो तँ मिथिला पर छलहे।[२५] अतएव पूर्वी भाषा अपना विकसित कलेवरक संग ईसाक ८म शताब्दी सँ १६म शताब्दी धरि अवहट्ठ नामे प्रसिद्ध भेल जकर वाक्य-गठन सँ स्पष्ट होइछ जे ई अपभ्रंश सँ पूर्णतः भिन्न छल।

अवहट्ठ मध्य ध्वनि विचारक दृष्टिये जे अन्तर अछि ओ एवंक्रमें पाओल जाइछ :—

## पूर्व स्वर पर स्वराघात

पूर्व स्वर पर स्वराघात द्वित्व व्यंजन उच्चारणक दृष्टि सँ हटाओल जाइछ तथा ओकर स्थान मे एक व्यंजनक प्रयोग होइछ। एहेन अवस्था मे द्वित्व व्यंजनक पूर्ववर्ती स्वर केँ दीर्घ कएल जाइछ। डा० तेसीतोरी एकरा अवहट्ठक सर्वप्रमुख विशेषता मानैत छथि, जेना—

| संस्कृत | अपभ्रंश | अवहट्ठ |
|---|---|---|
| अक्षर | अक्खर | आखर |
| ठक्कुरः | ठक्कुर | ठाकुर |
| नृत्यति | नच्चइ | नाचइ |

## स्वरक सानुनासिकता मे परिवर्त्तन

स्वरक सानुनासिकताक क्षेत्रहु मे परिवर्त्तन देखल जाइछ। स्पर्श व्यंजन मे अनुस्वार नहि लगैत छल। पंचम वर्णक संयोगे सँ सानुनासिकताक प्रयोजन सिद्ध होइत छल। अनुस्वार केवल य, ल, र, व, श, ष, स, ह केँ रहलहि लगैत छल। परवर्ती अपभ्रंश मे युक्ताक्षर केँ पूर्वस्वर पर स्वराघात दए अनुस्वार केँ हल्लुक बनेबाक प्रवृत्ति पाओल आइछ। जेना—

आंग < अंग

---

२४ राय बहादुर बाबू हीरालाल, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग-११, पृ० ४४१-४२

२५ डॉ० उपेन्द्र ठाकुर—हिस्ट्री आफ मिथिला, पृ० २१८

आंकुस<अंकुस
पाँच<पंच
चाँद<चन्द्र
आँगन<अंगण

एम० जी० पंसे ज्ञाणेस्वरीक भाषाक अध्ययन कए एहि विषय पर विस्तार सँ विचार कएलनि अछि।

## अकारण सानुनासिकताक प्रवृत्ति

स्वरक क्षतिपूरक दीर्घीकरणक संग अनुस्वार के ह्रस्व करवाक प्रवृत्ति बढ़ल तथा अकारण सानुनासिकताक प्रवृत्ति जे आधुनिक आर्य भाषा मे प्रचुर मात्रा मे पाओल जाइछ तकर आरम्भ अवहट्ठकाले मे भेल। जेना—

काँज<कज्ज
काँच<कच्चु:
भाँग<भग्ग
ओँदिम<ओष्ठ।

## एक संग अनेकस्वरक प्रयोग

मध्यकालीन आर्य भाषा मे एके संग दू-दू, तीन-तीन स्वरक प्रयोग पाओल जाइछ। स्वरक एहेन स्वच्छन्द प्रयोग सँ गड़बड़ी प्रारम्भ भेल तथा ओकर स्थान पर पुनि व्यंजनक प्रयोग होमए लागल जाहि सँ तत्सम शब्दक बहुलता देखल जाइछ। एहि प्रसंग मे मात्र एतेक कहल जाइछ जे क्रियाक अन्त मे प्रायः अन्य पदक अन्य स्थानहु मे स्वर केँ संयुक्त स्वर बनेबाक प्रवृत्ति प्रारम्भ भेल। एवंक्रमक दुइ संयुक्त स्वर ऐ एवं औ अवहट्ठक अपन विशेषता थिक।

ऐ (अ+इ)—प्रायः क्रिया तथा अन्य शब्दक अन्तक अ एवं इ एहि दुहु स्वर केँ मिलाए संयुक्त कएल जाइछ—

टूटै<टुट्टै; गुणै<गुणइ
पै<पइ; रहै<रहइ

औ—संप्रयुक्त स्वरक विधानक कारणे अपभ्रंश मे एके संग अनेक स्वर देखल जाइछ। पश्चात्क अपभ्रंश मे एहि स्वर केँ संप्रयुक्त नहि राखि संयुक्त कए देबाक प्रणाली देखल जाइछ—

करौ<करउ; चौरा<चअउर।

दूणो<दुण्णउ; तौ<तउ
आओ<आअउ<आगत

## संकोच वा अक्षर लोप

ध्वनि विचारक सिलसिला मे अवहट्ठक एक बहुप्रचलित पद्धति संकोचहुक अर्थ मे उल्लेख कएल जाइछ। एवंक्रमक भाषा विज्ञानक पदावली मे ओकरा अक्षर-लोपक उदाहरण कहल जाइछ। आधुनिक आर्य भाषा मे एहेन अनेक शब्द पाओल जाइछ जकर प्राचीन एवं नवीन रूप मे आकाश-पातालक अंतर देखल जाइछ।

अन्हार शब्द अन्धकार सँ बनल। एवंक्रमे देवकुल सँ देउर; देवगृह सँ देवहा; कोट्टशीर्ष सँ कोसीस; उपवास सँ उपास; उत्तिष्ठ सँ उँट; सहकार सँ सहार; स्वर्णकार सँ सोनार शब्द निस्सृत भेल। एवंक्रमक प्रवृत्ति कीर्तिलता, संदेशरासक एवं प्राकृतपैंगलम् मे पाओल जाइछ।[२६]

## परसर्गक स्थान पर मूल शब्द

रूप विचारक दृष्टि सँ अवहट्ठ मे सूक्ष्म अन्तर देखल जाइछ। लिंग, वचन, आदि मे तँ कोनो अन्तर नहि अछि किन्तु किछु कारक विभक्ति मे मुख्य अन्तर परसर्गक प्रयोग मे देखल जाइछ। अपभ्रंश काले सँ परसर्गक प्रयोग होमए लागल छल। परसर्ग मे अपभ्रंशक सभ सँ प्रधान 'केहि' एवं 'रेसि' ई दुइ चतुर्थीक परसर्ग देखल जाइछ। निम्नलिखित परसर्गक एक सूची प्रस्तुत कएल जाइछ—

कारण—सन, समाद, सहित, बिना, सरिस, सरीख।
सम्प्रदान—लग्गि, लागे, प्रति, कारण,
अपादान—हुते, हुंति, सिउ।
संबंध—कर, के, करेउ।
अधिकरण—माँझ, ऊपर, भीतर, माहि।

## सर्वनामक प्रचुरता

अवहट्ठक ग्रन्थ मे सर्वनामक प्रयोगो बड़ शीघ्रता सँ होमए लागल। प्राचीन सर्वनामक एहेन विकसित रूप पाओल जाइछ जे बहुत किछु आइकाल्हिक रूप सन देखल जाइछ—

तोहर, कुडिया, तूटइ वासना तोरा, मन तोहर दोसे।

---

२६ नागरी प्र० पत्रिका, भाग ५८, अंक ४, पृ० ४५५

मोर, मेरहु, मों, मइ, तोरा, तोहोर, तोहार, ताक आदि सर्वनाम पूर्वी अपभ्रंश वा अवहट्ठ मे पाएब दुष्कर अछि। कीर्तिलता मे तँ 'जे'क रूप 'जन्ने' पाओल जाइछ।

## क्रियापदक विकास

कोनहु पर भाषाक विकासक सूचना ओकर क्रियापदक नाना रूप सँ उपलब्ध होइछ। अवहट्ठ भाषाक विकासक कोन दशा छल, ओहो ओकर क्रियापदे कें देखला सँ ज्ञात होइछ। वस्तुतः अवहट्ठक क्रियापद वर्त्तमान भाषाक वाक्यविन्यासक अनेक समस्याक सुलझाव उपस्थित कए सकैछ।

वर्त्तमान काल मे कृदन्तक प्रयोग बढ़ि गेल अछि। आजुक 'ता' वला रूप मध्यकालक 'अन्तः' वला रूप सँ विकसित अछि जे प्राचीन अत् सँ विकसित भेल अछि।

अपभ्रंशक 'अन्त' प्रत्यय वला रूप एहि काल मे प्रचुर मात्रा मे प्रयुक्त होमए लागल। कीर्तिलता, प्राकृत पैंगलम्, थूलिभद्द फागु आदि मे इएह प्रवृत्ति चरम रूप मे अछि। जेना—

मधुर मेघ जिमि जिमि गाजन्ते,
पंचवाण निज कुसुमवाण तिमि तिमि साजन्ते।
सीतल कोमल सुरभि वाय जिमि जिमि वायन्ते,
मान मडप्फर मानिनि तिमि तिमि नाचन्ते।
—थूलि० फागु, पृ० ५८

भूतकालिक कृदन्तहु वर्त्तमान सन प्रयोग मे अबैछ। कखनहु तँ ओ अपन पूर्ण रूप मे रहैछ, जेना—कहअ, बांधअ, आदि तथा कखनहुँ केवल धातु मात्रेटा रहैछ, जेना— काहु होअ अइसनो आस।
—कीर्तिलता, पृ० ३८

बाँटत मिलल महासुख साँगा।
—चर्या० ८

हरिणी बोलअ सुनु हरिणा तों
—चर्या० ६

दोसर प्रकारक रूप मूलतः धातुरूपे मे होइछ, जेना—

चलि चूअ कोइल साव-महुमासपंचम गाव।
मण मज्झ वम्मह ताव ण हु कंत अज्जवि आव।
—प्रा० पैं०, ८७

## निर्विभक्तिक प्रयोग

अवहट्ठक सभ सँ पैघ विशेषता ओकर निर्विभक्तिक प्रयोग थिक जकरा कारणे बहुधा अर्थ मे अनर्थ भए जेबाक सम्भावना रहैछ। अतएव प्राकृत पैंगलमक टीकाकार निर्विभक्तिक प्रयोग सँ परिपूर्ण अवहट्ठ भाषा मे पूर्वनिपातादि नियमक अभावक कारण उत्पन्न दोषक परिहार्यक निमित्त यथोचित योजना करबाक सलाह दैत छथि— "अवहट्ठ भाषायां पूर्वनिपातादिनियमाभावात् यथोचित योजना कार्या सर्वत्रेति बोध्यम्" ( प्रा० पैं०, पृ० ४७८ )। निर्विभक्तिक प्रयोगक उदाहरण देल जाइछ, जेना—

भुवन जागर तुम्ह परताप
—कीर्ति०

मकरंद पाण विमूद्ध महुअर सद्द मानस मोहिआ।

अवहट्ठ पूर्वी अपभ्रंश थिक जे पिंगल नाम सँ ख्यात छल। प्राकृत पैंगलमक टीकाकार पिंगल एवं अवहट्ठक सदृशार्थक प्रयोग कएलनि अछि। भिखारी दास षटभाषा मे नाग भाषाक नाम लेलनि अछि।[२७] नागभाषा सँ सम्भवतः भिखारीदासक तात्पर्य पिंगल सँ थिक। पिंगलाचार्य नाग जातिक छलाह। एक दिश तँ पिंगल केँ नागभाषा कहल गेल तथा दोसर दिश मिर्जा खाँ अपन ब्रजभाषा व्याकरण मे प्राकृत अर्थात् अपभ्रंश के नागबासी या पातालबासी कहलनि अछि।[२८]

महावस्तुक[२९] अनुसार वाराणसी, मिथिला, कलिङ्ग, और तक्षशिला चारि गोट नागक केन्द्रस्थल छल जे क्रमशः संख, पद्म, पिंगल तथा इलपत्र द्वारा अधिकृत छल।

अतएव पिंगल भाषाक सम्बन्ध पूर्वी भाषा सँ छल। पूर्वी भाषाक छन्द-शास्त्रक प्रसंग मे पिंगल शब्द बड़ महत्वपूर्ण अछि। डा० सु० कु० चटर्जी पिंगल केँ पश्चिमी प्रान्तक अवहट्ठक अपर रूप मानैत छथि[३०] जे समुचित नहि प्रतीत होइछ। पंचतंत्रक[३१] "छंदो ज्ञान निधिं जघान मकरो वेलातटे पिंगलं" वाक्य पिंगलक

---

२७ ब्रज मागधी मिले अमर नाग जवन भाखानि।
सहज पारसीहू मिले खट विधि कहत बखानि, काव्यनिर्णय १-२५

२८ नागरी प्रचा० पत्रिका, वर्ष ५८, अंक ४, पृ० ४५०

२९ चत्वारो महानिधयो संखो वाराणस्याम् मिथिलायां पद्मो कलिंगेषु पिंगलो तक्षिलायां इलापत्रो, महावस्तु, भा० ३, पृ० ३८३, पाद टिप्पणी।

३० ओरिजिन एन्ड डेवेलपमेन्ट आफ बंगाली लैंग्वेज, पृ० ११४

३१ पंचतंत्र, २. ३३

प्रसंगक वाक्य थिक । आप्टे[३२] पिंगल शब्दक अर्थ एक प्रकारक नाग, एक प्रख्यात मुनिक नाम, संस्कृत छन्दक जनक तथा पिंगल छन्दशास्त्र नामक ग्रन्थ कएलनि अछि । प्राकृत पैंगलमक भूमिका मे श्री चन्द्रमोहन घोष पिंगल केँ एक मुनि, आचार्य तथा एक गोट नागक अर्थ कएलनि अछि । अतएव पिंगल सँ तात्पर्य छन्द शास्त्र सँ तथा अवहट्ठ सँ तात्पर्य ओहि युगक लोक भाषा सँ अछि ।

मिथिलाक लोक जीवन मे पिंगल शब्द बड़ घनिष्ट रूप सँ सम्बद्ध अछि । जोड़-जोड़ सँ पढ़निहार बालक "पिंगल पढ़बाक" अर्थ मे तथा जे बालक अधिक ठेसकर रहैछ ओकरा "कठपिंगलक" उपाधि सँ उपहासित करबाक परम्परा बड़ प्राचीन और व्यापक अछि ।

अतएव प्रतीत होइछ जे अवहट्ठ बौद्ध सिद्ध द्वारा उद्भूत भए पूर्वी प्रान्तक लोकभाषाक कवि द्वारा पल्लवित और पुष्पित भेल जे पश्चात भारतीय पूर्वी भाषा केँ अपभ्रंश सँ पृथक रूप दए क्षेत्रियताक आवरण पहिरौलक ।

## प्रस्तावित क्षेत्र

पावर्ती वैदिक काले सँ विद्वान लोकनि भौगोलिक तथ्यक अनुसारे देशभाषाक विकासक क्रम केँ निम्नलिखित रूप मे विश्लेषित कएलनि :—

(१) उदीच्य या उत्तरी विभाषा,
(२) मध्यदेशी विभाषा, तथा
(३) प्राच्या या पूर्वी विभाषा ।

उदीच्य या उत्तरी विभाषा ओहि युगक परिनिष्ठ विभाषा छल जकर प्रयोग सप्त सिन्धु प्रदेश मे कएल जाइत छल । एहि परिनिष्ठ विभाषा मे ब्राह्मण, आरण्यक, एवं उपनिषद् साहित्यक रचना भेल । राजशेखरक (८८०-९२० ई०) अनुसार पृथूदक सँ आगाँ उत्तरापथ छल । एहि मे शक, केकय, बोक्कान, हूण, वाणायुज, काम्बोज, वाह्लीक, वह्ल, लिपाक, कुलूत, कीर, तंगण, तुषार, तुरुष्क, वर्बर, हरहूख, हुहुक, सहुर, हंसमार्ग, रमठ तथा करकण्ठ आदि जनपद छल[३३] । आधुनिक पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्त तथा उत्तरी पंजाबक भाषा परिनिष्ठ या शुद्ध मानल जाइत छल । कौषीतकि ब्राह्मण मे उदीच्य भाषाक महत्ता एवं परिनिष्ठिताक बोध होइछ[३४] ।

---

३२ दी प्रैक्टीकल स० ई० डि०, पृ० ६१६

३३ काव्यमीमांसा, अ० १७, पृ० २२७

३४ तस्मादुदीच्यां प्रज्ञाततरा वागुद्यते उदञ्च उएव यान्ति वाचं शिक्षितुं वा तत् आगच्छति, तस्य वा शुश्रुपन्त इति—७·६

एहि भाषा कें आधार मानि पाणिनि अष्टध्यायीक रचना कए संस्कृत भाषाक आधारशिला कें दृढ़ कएलनि।

मध्यदेशी विभाषाक रूप यद्यपि स्पष्ट नहि अछि किन्तु ई तँ निश्चिते अछि जे ई विभाषा ने तँ उदीच्य सन रूढ़िये आ ने प्राच्या सन शिथिले छल। एहि भाषाक स्वरूप मध्यवर्गी छल। राजशेखरक[३५] अनुसार देवसभाक (देवास) आगाँ पश्चिम देश छल। एहि मे देवस, सुराष्ट्र, दशेरक, त्रवण, भृगुकच्छ, कच्छीय, आनर्त, अर्बुद, ब्राह्मणवाह, यवन आदि जनपद छल। विनयपिटक मे मध्य देशक सीमाक प्रसंग मे उल्लिखित अछि जे एहि देशक पूर्व दिशा मे कजंगला निगम, पूर्व-दक्षिण दिशा मे सललवती नदी (हजारीबाग तथा वीरभूमिक वर्तमान सिलइ नदी), दक्षिण दिशा मे सेतकण्णिक निगम, पश्चिम दिशा मे थूण (आधुनिक थानेश्वर) नामक ब्राह्मणक गाम तथा उत्तर दिशा में उसीरध्वज पर्वत (कनखलक उत्तरक एक गोट पर्वत) छल।[३६]

प्राच्य देशक पूर्व मे मध्य देश छल किन्तु जेना-जेना मध्य देशक पूर्वी सीमा बदलैत गेलैक तहिना प्राच्य देशक पश्चिमी सीमा मे सेहो परिवर्त्तन भेल। भगवान बुद्धक समय मे एहि देशक पश्चिमी सीमा पर कजंगल निगम,[३७] अंग और मगध जनपद छल। प्राच्य देश मे बंग जनपद पड़ैत छल। वंगहार जनपद सेहो एहि जनपद कें कहल जाइत छलैक। प्रसिद्ध ताम्रलिप्ति बन्दरगाह एहि देश मे छल जतए सँ स्वर्णभूमि, जावा, लंका आदिक हेतु व्यापारी प्रस्थान करैत छल[३८]।

वशिष्ठ, बौधायन तथा मनुक अनुसारे प्राच्य देश प्रयागक पूर्व मे छल किन्तु राजशेखरक काव्यमीमांसाक अनुसार पूर्व देश वाराणसी सँ पूर्व मे छल। एहि देश मे अंग, बंग, कलिंग, कोशल, तोषल,[३९] उत्कल, मगध, मुद्गर, विदेह, नेपाल, पुंड्र,

---

३५ काव्यमीमांसा, १७, पृ० २२७

३६ भिक्षु धर्मरक्षित, बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय, पृ० १

३७ कजंगल मध्य देशक पूर्वी सीमा पर स्थित एक गोट ग्राम छल जतएक वेलुवन तथा मुखेलुवन मे भगवान बुद्ध बिहार कएने छलाह। मिलिन्द प्रश्नक अनुसार ई एक ब्राह्मण गाम छल। वर्तमान संथाल परगनाक कंकजोल गाम कें कजंगल मानल जाइछ—भिक्षु धर्मरक्षित, बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय, पृ ०८

३८ भिक्षु धर्मरक्षित, बुद्धकालीन भारत का भौगोलिक परिचय, पृ० १५

३९ तोषल कोशल (अवध)क दक्षिणी भाग छल। धौली मे प्राप्त अशोकक शिलालेख मे तोशलीक नाम अछि जे सम्भवतः तोषलक राजधानी छल।

प्राग्ज्योतिष, ताम्रलिप्ति, मलद[४०], मल्लवर्तक[४१], सुम्ह[४२] और ब्रह्मोत्तर[४३] आदि जनपद छल[४४]।

प्राच्या उपभाषा आधुनिक अवध, पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा मे बाजल जाइत छलैक। ई असंस्कृत एवं विकृत विभाषा छल। एहि मे द्रविड़ और मुण्डा भाषाक तत्वक मिश्रण पूर्णतः विद्यमान छलैक। स्तेन कोनो[४५] कें पाली और पैशाची मे एकरूपता उपलब्ध भेलनि तथा ग्रियर्सन कें प्राकृति एवं पैशाची भाषाक तुलनात्मक अध्ययनक उपरान्त प्रतीत भेलनि जे भारतक उत्तर-पश्चिम मे पैशाची भाषाक क्षेत्र छल। हॉर्नलीक अनुसार पैशाची तथा मागधी मे बड़ घनिष्ट सम्बन्ध छल जकरा ग्रियर्सन कतिपय प्रमाणक आधार पर पुष्ट कएलनि अछि।[४६]

मागधी मगध जनपदक भाषा छल जे भगवान बुद्धक युग मे लोक भाषाक रूप मे समस्त बिहार प्रान्त मे तँ प्रसारित छलहे संगहि भगवान बुद्ध लोक भाषाक माध्यम सँ पदचारिका करैत पश्चिम मे मथुरा तथा कुरुक थुल्लकोट्टित[४७] नगर, पूर्व मे कजंगला निगमक मुखेलु वन तथा पूर्व-दक्षिणक सललवती नदी, दक्षिण मे सुंसुमारगिरि[४८] आदि विन्ध्य पर्वतक आसपासक निगम तथा उत्तर मे हिमालयक

---

४० मलद आरा जिलाक एक भागक नाम।

४१ मल्लवर्तक पार्श्वनाथ पहाड़क नाम सँ प्रसिद्ध अछि। अतएव मल्लवर्तक बिहारक हजारीबाग और मानभूम जिलाक भूभाग थिक। जैन ग्रन्थक अनुसार पावा और कुशीनगर एहि जनपदक राजधानी छल।

४२ सुम्हक चर्चा कालिदास रघुवंशक चतुर्थ सर्ग (३५, ३८ श्लोक) मे कपिशा नदीक समीप कएलनि अछि। ई बंग और उत्कल देशक मध्य मे स्थित बगालक खाड़ीक समीपक देश छल। एहि देशक राजधानी ताम्रलिप्ति या तामलुक छल। प्राचीन साहित्य मे एहि देशक चारि गोट नाम—ताम्रलिप्त, दामलिप्त, ताम्रलिप्ति तथा तामलिनी पाओल जाइछ। ई वर्तमान तामलुक, कपिशा, कसयाक दक्षिण तट पर अवस्थित अछि। प्राचीन काल मे ई भारतीय व्यापारक प्रसिद्ध बंदरगाह छल। वर्तमान मिदनापुर, हुगली तथा वर्द्धमान जिलाक भू-भाग सुम्ह मे छल।

४३ ब्रह्मोत्तर पूर्वदिशाक जनपद छल जे बर्माक उत्तरी भाग या अपर बर्मा छल।

४४ तत्र वाराणस्याः पुरतः पूर्वदेशः। यत्राङ्गकलिङ्गकोसलतोसलोत्कलमगधमुद्गरविदेहनेपालपुण्ड्रप्राग्ज्योतिषतामलिप्तकमलदमल्लवर्त्तकसुम्हब्रह्मोत्तरप्रभृतयोजनपदाः (का० मो० अध्याय १७, पृ० २२६)

४५ ए० पी० बनर्जी शास्त्री, इवोल्यूसन आफ मागधी, पृ० १९

४६ ओतहि।

४७ दिल्लीक आसपासक कोनो नगर।

४८ चुनार (मिर्जापुर जिलाक)।

तटवर्ती सापुगनिगम एवं उसीरध्वज[४९] पर्वत तकक भूभाग मे अर्थात् 'मज्झिमेसुपदेसु' या मध्य मण्डल मे मागधी भाषा मे अपन उपदेश देल।

डा० हॉर्नलीक अनुसार उत्तरी भारती भाषाक दुई गोट—मागधी या पूर्वी और शौरसेनी या पश्चिमी भेद छल।[५०] पूर्वकाल मे मागधीक क्षेत्र बड़ पैघ छल। एक समय तँ मागधीये सम्पूर्ण उत्तर भारतक भाषा छल जे उत्तरा-पश्चिमी सीमा तक पसरल छल। मागधी, पस्तो और काफिरी एक समय एके भाषा छल जे शौरसेनीक द्वारा पृथक कएल गेल तथा मागधी केँ शौरसेनी क्रमशः सुदूर पूर्व मे ठेलि ओकरा क्षेत्र केँ अधिकृत कएलक।[५१]

एहि संदर्भ मे भरतक नाट्यशास्त्रक[५२] अनुसार हिमवत्, सिन्धु, सौवीर आदि प्रदेश अर्थात् पश्चिमोत्तर भारत मे उकार वहुला भाषा प्रचलित छल जे अवहट्ठक प्रारिम्भक रूप थिक। एहि सम्बन्ध मे प्राकृत धम्मपद, ललितविस्तर तथा सद्धर्मपुण्डरीक सन बौद्ध ग्रन्थहु मे उकारक प्रवृत्ति पाओल जाइछ जे अवहट्ठक विशेषता थिक। धम्मपदक रचनाकाल ई० सनक प्रथम शताब्दी पूर्व मानल जाइछ। नमूनाक रूप मे निम्नलिखित पद एतए प्रस्तुत कएल जाइछ :—

उजओ नाम सो मगु अभय नमु स दिश।
रधो अकुयनो नमु धमत्रकेहि सहतो॥
हिरि तसु अवरमु स्मति स परिवर न।
धमहु सरधि ब्रोमि समेदिठि पुरेजवु॥[५३]

उपयुक्त पदक "मगु", "नमु", "अवरमु", "धमहु", तथा "पुरेजवु" शब्द क्रमशः पालिक "मग्गो", "नामु", "अपालम्बो", "धम्महं" तथा "पुरेजवं" शब्दक रूपान्तर थिक।

धम्मपदक दोसर शताब्दी मे लिखल एक गोट प्रति पेशावरक समीप खोतानक समीपक गोश्रृंग या गोशीर्ष बिहार मे प्राप्त भेल अछि। एहि सँ भरतक वाक्यक पुष्टि तँ होइतहि अछि संगहि डा० हार्नलीक विचार जे मागधी, पस्तो और काफिरी कोनो समय एकहि भाषा छल तकरहु पुष्टि होइत अछि।

---

४९ हरिद्वारक आसपासक कोनो पर्वत।
५० गोडियन ग्रामर, पृ० २०
५१ ओतहि; ए० पी० बनर्जी शास्त्री, इवोल्यूसन आफ मागधी, पृ० २७-२८
५२ हिमवर्त्सिधुसौवीरान् येऽन्यदेशान् समाश्रिताः।
उकारवहुलां तेषु नित्य भाषां प्रयोजयेत॥
५३ प्राकृत धम्मपद-संपादक : बरुआ और मित्रा।

एवंक्रमें ललितविस्तरक संस्कृतहु मे उकारान्त प्रवृतिक भलकी प्राप्त होइछ जकर उदाहरण निम्नलिखित पद मे उद्धृत अछि :—

पुरि तुम नरपति स्वकु द्विज यदभू ।
गुरुजनि परिचरि न च द्रहिपुरतो ॥
स्थपयिसु द्विजवर बहुजन कुशले ।
च्युतु ततु भगवतु मरुपुरनिलयं ॥

ललितविस्तरक रचनाकाल ई० सनक चारिम-पाँचम शताब्दीक पूर्व मानल जाइछ। ललितविस्तरक अनुसार बोधिसत्वक जन्म मध्यदेश मे भेलनि।[५४] डा० राजेन्द्र लाल मित्र विन्ध्य सँ हिमालय तथा बिहार सँ पंजाब धरिक भूभाग कें मध्यदेश मानैत छथि।[५५]

ललितविस्तरक भाषा कें प्रो० एजर्टन बौद्ध संकर-संस्कृत नामकरण कएने छथि जे मध्यदेशक एक गोट प्राचीन सामान्य भाषा छल। वस्तुत: ई० सनक प्रथम एवं दोसर शताब्दी मध्य धरि एहि भाषाक प्रचलन समस्त उत्तर पूर्वी प्रान्त मे छल जे व्यामिश्रक नामे प्रख्यात छल तथा जकरा पर मागधीक पूर्ण प्रभाव छलैक।

अवहट्टक भाषाक दिग्दर्शन उद्योतन सूरिक ग्रन्थ कुवलयमाला मे सहो पाओल जाइछ जकर अध्ययन भाषाक दृष्टियें बड़ महत्वपूर्ण अछि। कथाक नायक राजकुमार मथुराक एक गोट अनाथ मण्डप मे पहुँचि ओतएक दीन-हीन, कोढ़ि, लुल्ह आदि रोगग्रस्त लोक सँ कोना वार्ता कएलनि ओकर सजीव चित्रण एहि ग्रन्थ मे उपलब्ध अछि जकर नमूना निम्नलिखित अंश मे प्रस्तुत कएल जाइछ :—

(१) सयलं पुहईमंडलं परिभमिऊण संपत्तो महुराउरीए। एत्थ एकम्मि अणाहमंडवे पविट्ठो। अवि य तत्थ ताव मिलयालए कोड्ढीय, बलक्ख खइयए, द्रीण, दुग्गय, अंधलय, पंगुलय, मंदुलय, मडहय, वामणय, छिण्ण-णासय, तोडिय-कण्णय, छिणोट्ठय, तडिय, कप्पडिय, देविय, तित्थयत्तिय, लेहाराय, धम्मिय, गुग्गुलिय, भोया, कि च बहुणा; जो माउ-पिउ-रुठेल्लउ, सो सो सव्वो वि तत्थ मिथिएल्लउ त्ति। ताहं च तेत्थु मिलिएलय सह समाणह एक्केक्क महा आलावा पयत्ता। "भो, भो' ! कयरहिं तित्थे दे [वे] वा गयाहं कयरा वाहि पावं वा पिट्टइ" त्ति।

(२) एक्केण भणिअं—"अमुक्का वाणारसी कोढएहि। तेण वाणारसी-गयाणं कोढु फिट्टइ" त्ति।

---

५४ पृष्ट ३७

५५ अ० आ०, पृ० ५२

(३) अणेण भणिअं—हुँ हुँ ! कहिउ वुत्तंतउ तेण जंपिएल्लउ ! कहि कोढं, कहि वाणारसि ? मूलत्थाणु भडारउ कोढइं जे देइ, उद्दालइ लोअहुँ ।"

(४) अणेण भणिअं—"रे रे ! जइ मूलत्थाणु देइ, उद्दालइज्जं कोढइंता पुणु काइं कज्जु अप्पाणु कोढि अल्लउ अच्छइ ?"

(५) अणेण भणिअं—"जा ण कोढिएल्लउ अच्छइ ता ण काइं कज्जु ? महाकालु भडारउ छम्मास-सेवाण कुणइ, जेण सूलहेज्जे फिट्टइ ।"

(६) अणेण भणिअं—"काइं इमेण जत्थ चिरपरूढ पाउ फिट्टइ, तुब्भे उद्दिसह तित्थ ।"

(७) अणेण भणिअं—"प्रयाग-वडपडिअहं चिरपरूढ पायवि हत्थ वि फिट्टंति ।"

(८) अण्णेण भणिअं—"अरे ! पाव पुच्छिय पाय साहहि ?"

(९) अण्णेण भणिअं—"खेदु मेल्लहं; जइ परमाइं पिइवहकयइं पि महापावइ गंगासंगमे ण्हायहं भैरवभडारय-पडिअहं पासइ त्ति ।"

शूरसेन प्रदेशक केन्द्र मथुरा मे स्थित अनाथालयक लोकक द्वारा शौरसेनी प्राकृतक प्रयोग नहि भए अवहट्ठक प्रयोग होयब बड़ मार्मिक अछि । वस्तुतः ग्रन्थक भाषा पर प्राकृतक यत्र-तत्र प्रभाव तँ दृष्टिगोचर होइछ किन्तु ध्वनि मे उकारक प्रवृति तथा पद मे प्राकृतक विभक्तिक निखरल रूप देशी भाषाक दिश उन्मुख करैत अछि ।

उपर्युक्त ग्रन्थक विश्लेषण सँ प्रतीत होइछ जे एहि ग्रन्थक उकार-बहुला भाषाक क्षेत्र हिमवत्, सिन्धु, सौवीर आदि प्रदेश अर्थात् पश्चिमोत्तर भारतहि छल जकरा दण्डी 'आभीरादि गिरी' कहलनि अछि । दण्डीक कथन 'आभीरादि' मे 'आदि' शब्दक विवेचन बड़ आवश्यक अछि । अनुमानतः ओहि मे सँ एक गोट जाति गुर्जर अवश्य होयत । यद्यपि गुर्जरक अपन भाषा गौर्ज्जरीक (गुजरी) उल्लेख प्राचीन ग्रन्थ मे पाओल जाइछ तथापि ई तथ्य थिक जे भड़ोंचक गुर्जर अपभ्रंश केँ संरक्षण और प्रोत्साहन देल । भण्डारकर तथा जैक्सनक अनुसार ई० सनक छठम शताब्दी मे गुर्जर गुजरात तथा भड़ोंच केँ जीतलनि । हुनकर मुख्य शाखाक राजधानी भीनमाल छल जकरा दशम शताब्दीक मध्य चालुक्यक कारण हुनका लोकनि केँ विवश भए केँ छोड़ए पड़लनि । परिणामस्वरूप ९५८ ई० मे १८००० गुर्जर सामुहिक रूप मे

एके संग भीनमाल छोड़ि देशान्तर प्रस्थान कएलनि ।[५६] गुजरात नाम गुर्जरे सँ पड़ल । अतएव ओ लोकनि अवश्ये आभीरी भाषा केँ प्रोत्साहन देल । कालक्रमे आभोर एवं गुर्जर जातिक आक्रमण मिथिला पर सेहो भेल । इएह कारण थिक जे मैथिली भाषा मे गुजरी राग, गुजरिया शब्द तथा अहिर एवं एहि जाति सँ सम्बद्ध अनेक शब्द व्यवहृ ' अछि ।

ईसवीसनक पाँचम शताब्दी मे तँ मगधक प्रधानताक कारणें मागधीक प्रसिद्धि और अधिक भेल तथा अशोकक समय मे तँ राज भाषाक रूप मे मागधीक प्रचार और प्रसार भारतक बाहरो तक भेल। अशोकक असंख्य अभिलेख भारतक उत्तरी-पश्चिमी सीमा सँ लए बंगाल तथा हिमालय—तराय सँ लए मैसूर तकक भूभाग मे स्थित मागधीये मे खोदल गेल। अतएव मागधी भाषा जे एक समय सम्पूर्ण भारतक एकमात्र भाषा छल कोनो ने कोनो रूपेँ भारतक समस्त क्षेत्रीय भाषा केँ प्रभावित तँ करबे कएलक संगहि पूर्वी भारतीय भाषाक कोन कथा कतिपय आनो-आन क्षेत्रीय भाषाक उद्भव-स्रोत बनल। फलस्वरूप पाणिनि अपन प्रामाणिक भाषाक विकल्प केँ अर्थात् लोक सम्मत कतिपय रूप केँ 'विभाषा', 'अन्यतरस्यां' या 'बहुलम' आदि वाक्यक द्वारा निर्धारित तँ करबे कएलनि संगहि "प्राच्याम्", "उदीच्येषु" आदि वाक्यक द्वारा विभिन्न देश-प्रयोगक दिश ध्यानहु तक देलनि ।

वैदिक भाषाक प्राच्या भेद संस्कृत तथा परवर्ती भाषा मे सेहो उपलब्ध अछि जे पश्चात् पुवरिया नामे सम्बोधित भेल। डा० सुनीति कुमार चटर्जीक अनुसार समान रूप, विभक्ति, प्रकृति, स्वरध्वनि एवं वाक्य-विन्यास सँ प्रतीत होइछ जे बंगला, असामी, उड़िया तथा बिहारी भाषा सभ अवश्ये एके प्राचीन पूर्वी क्षेत्रक भारतीय भाषा मागधी सँ उत्पन्न भेल ।[५७] किएक तँ एहि भाषा सभ मे किछु स्वरध्वनि जेना श-ष इत्यादि प्रारम्भे सँ पाओल जाइछ जे पश्चात् एहि सँ उद्भूत मैथिली, मगही, भोजपुरी, उड़िया, असामी तथा बंगला भाषा मे सेहो प्रयुक्त भेल एवं एहि मे कारकक नियमक अनुसार क, केर, या कर विभक्तिसूचक चेन्ह तथा आन-आन व्याकरणक नियम जेना इल, एल या अल तथा एवा या अव्वा आदिक प्रयोग सँ मागधी भाषा सँ एहि सभ भाषाक उत्पत्तिक आधारक कल्पनाक पुष्टि होइछ ।[५८]

---

५६ डी० आर० भंडारकर, ऑन गुर्जर, जे० बी० बी० आर० ए० एस०, अंक २१, पृ० ४१२

५७ ओरिजन एन्ड डेवलपमेंट आफ दि बंगाली लैंग्वेज, भाग १, पृ० २१

५८ ओतहि ।

पश्चात् प्राच्या भाषाक पूर्वी और पश्चिमी दुई भेद भए गेल। पूर्वी प्राच्या मागधी कें और पश्चिमी प्राच्या अर्धमागधी कें कहल गेल। भगवान महावीर अर्धमागधी मे अपन उपदेश देलनि जनिकर मातृभाषा सेहो वैदेहीये छल। ई जैन आगमक भाषा बनि अवधी, राजस्थानी और गुजरातीक उद्भव स्रोत बनल। इएह कारण थिक जे अवहट्ठक ग्रन्थ जे गुजरात या राजस्थान मे लिखल गेल ओहि मे शौरसेनीक प्रभाव पाओल जाइछ यद्यपि ओकर भाषा मैथिली थिक।

अवहट्ठक प्रसंग तथा मागधी, बंगला, असामी, उड़िया, मैथिली तथा भोजपुरीक उत्पत्तिक सम्बन्ध मे सातम शताब्दीक ह्वेन्सांगक यात्रा विवरण सँ ज्ञात होइछ जे ओहि युग मे सम्पूर्ण विहार, बंगाल तथा पश्चिमी असम मे एके भाषा छल।[५९] मैथिली, बंगला, असामी तथा उड़ियाक एकरूपताक कारण थिक जे प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषा बंगाल, असम तथा उड़ीसा मे प्रधानतः मिथिला और अंग सँ आयल।[६०]

मिथिला तथा बंगालक सम्बन्ध मे डा० सुनीति कुमार चटर्जीक कहब छनि जे आर्यभाषाक प्रचार उत्तर बंगाल मे मिथिला सँ तथा मध्य और पश्चिम बंगाल मे अंग सँ भेल।[६१] हुनकानुसारे हिन्दू राजाक अधीन मिथिला किछु समय धरि बंगालक सांस्कृतिक पथप्रदंशक छल जतए सँ उच्चकोटिक संस्कृत साहित्य तथा सुललित पद्य बंगाल मे आयल।[६२]

आधुनिक पूर्वी क्षेत्रीय भाषा जकर उद्भव अवहट्ठ सँ भेल अछि तथा जकरा मे दविड़ भाषाक तथ्य मिश्रित अछि ओकरा हॉर्नली गौड़ी भाषा कहैत छथि जकर सम्बन्ध गौड़ वा बंगाल सँ नहि भए प्राचीन गौड़ वा उत्तर भारतक गौड़ जाति सँ छल।[६३]

वर्त्तमानकाल मे गौड़ देश सँ बंगालक तात्पर्य होइछ किन्तु ईसवी सनक चारिम शताब्दी मे गौड़ गुप्त साम्राज्यक अन्तर्गत छल जे गुप्तक पतनक पश्चात ई० सनक छठम शताब्दी मे स्वतंत्र राष्ट्रक रूप मे परिवर्तित भेल। गौड़क प्राचीन भूभाग मे आधुनिक नवद्वीप, शान्तिपुर, मौलपट्टन, कण्टक पट्टन, वर्द्धमान जिलाक

---

५९ ओतहि, पृ० ९१

६० ओतहि।

६१ ओतहि, पृ० ६२

६२ ओतहि, पृ० ८१

६३ ए० पी० ब० शास्त्री, इवोल्यूसन आफ मागधी, पृ० १६

भूभाग, किछु पुण्ड्रक भाग तथा बिहार एवं उड़ीसाक भूभाग सम्मिलित छल जे बंगाल सँ सर्वथा पृथक बुझल जाइत छल।[६४] मुरारी मिश्रक अनर्घराघवक अनुसार अंगक प्रसिद्ध प्राचीन राजधानी चम्पा केँ गौड़क राजधानी होयबाक गौरबो तक प्राप्त छलैक। पाल एवं सेन राजाक कतिपय अभिलेख मे तीरभूक्ति, श्रीनगर भूक्ति, दण्ड भूक्ति, कण्कग्राम भूक्ति, पागज्योतिष भूक्ति आदि गौड़ देशक भूभाग मे सम्मिलित उल्लिखित अछि।[६५]

भारतक सामाजिक एवं आर्थिक जीवन मे गौड़क प्रधानता ई० सनक सातम शताब्दी मे शशांकक राजत्वकाल मे स्थापित भेल जे बंगाल, बिहार एवं उड़ीसाक अधिकांश भूभाग पर प्रसारित छल। शशांकक पूर्वक राजा जयनाग, धर्मादित्य, गोष चन्द्र तथा समाचार देव छलाह जे ई० सनक छठम शताब्दी मे गौड़ देश पर शासन कएलनि। ई राजा लोकनि तेहेन ने पराक्रमी भेलाह जे गौड़क आधिपत्य समग्र पड़ोसी देश पर स्थापित तँ होयबे कएल संगहि गौड़ सँ प्राच्य या पूर्वी देशक बोध होमय लागल।[६६] अतएव हॉर्नलीक गौड़ी भाषा सँ तात्पर्य प्राच्य या पूर्वी भाषा सँ थिक।

एवंक्रमेँ भारतीय भाषाक प्राच्या भेद कालक्रमेँ और अधिक व्यापक बनैत गेल तथा ई० सनक छठम शताब्दी सँ प्राकृतक बैयाकरण लोकनिक पृथक सम्प्रदाय बनल जे पूर्वी क्षेत्रीय भाषाक पृथक स्तित्व केँ स्वीकार कएल। एहि अनुक्रम मे सभ सँ पहिल प्राकृतक वैयाकरण वररुचि थिकाह। सर जार्ज ग्रियर्सनक अनुसार वररुचिक प्राकृत व्याकरण प्राकृतक दुहु सम्प्रदाय—(१) पूर्वी सम्प्रदाय तथा (२) पश्चिमी सम्प्रदाय—केँ प्रभावित कएलक। पुर्वी सम्प्रदाय मे वररुचि, लंकेश्वर, क्रमदीश्वर मार्कण्डेय, पुरुषोत्तम तथा राम शर्मा तर्कवागीश अबैत छथि।

वररुचिक (ईसाक छठम शताब्दीक)[६७] प्राकृत प्रकाश उपलब्ध प्राकृत व्याकरण मे सभ सँ प्राचीन अछि। एहि मे १२ परिच्छेद अछि तथा महाराष्ट्री, पैशाची एवं मागधी प्राकृतक लक्षण सन्निहित अछि।

---

६४ डा० डी० सी० सरकार, ज्योग्रफी आफ एन्सिएन्ट एण्ड मेडियेभल इण्डिया, पृ० ९८-९९

६५ श्री वीरेश्वर प्रसाद सिंह, जे० बी० आर० एस०, अंक ५३ भाग १-४ पृ० ११९-२०; हिस्ट्री ऑफ बंगाल, भाग-१, (ढाका युनिभर्सिटी) पृ० २३-२४

६६ डा० डी० सी० सरकार, उपर्युक्त, पृ० ११६-११७

६७ डा० जगदीशचन्द्र जैन, प्राकृत साहित्य का इतिहास, पृ० ६३६-६३८

लंकेश्वरक प्राकृत कामधेनु अथवा प्राकृत लंकेश्वर रावणक[६८] मंगलाचरण सँ प्रतीत होइछ जे लंकेश्वरक प्राकृत व्याकरणक ऊपर आन कोनो पैघ ग्रन्थ छल जकरा संक्षिप्त कए प्रस्तुत ग्रन्थक रचना कएल गेल। एहि मे ३४ सूत्र मे प्राकृतक नियमक विवेचन अछि। ११म सूत्र मे अक स्थान मे उक प्रतिपादन कए (जेना घरु) उकार बहुला अवहट्ठक दिश संकेत कएल गेल अछि।

क्रमदीश्वर (१२म—१३म शताब्दी) संक्षिप्तसार नामक एक संस्कृत-प्राकृत व्याकरणक रचना वररुचियेक अनुगमन पर कएलनि। एहि ग्रन्थक प्राकृतपाद नामक ८म अध्याय मे प्राकृत व्याकरण लिखल गेल अछि जकरा पर चण्डीदेव शर्मन् प्राकृत-दीपिका नाम सँ टीका कएलनि अछि।[६९]

पुरुषोत्तम बंगालक निवासी छलाह। हिनक ग्रन्थ प्राकृतानुशासनक दशम अध्याय मे प्राच्याक नियम देल गेल तथा ओकरा लोकोक्ति बहुल कहल गेल अछि।[७०]

मार्कण्डेय (ईसाक १७म शताब्दी) उड़ीसाक निवासी छलाह तथा मुकुन्द देवक राजत्वकाल मे प्राकृतसर्वस्वक रचना कएलनि। भाषाक श्रेणी मे महाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राच्या, आवन्ती, तथा मागधीक नाम गनाओल गेल अछि ओर एहि सभहक नियमक प्रसंग मे विवेचना कएल गेल अछि।[७१]

रामशर्मा तर्कबागीश भट्टाचार्य बंगालक निवासी छलाह। हिनकर समय ईसाक १७म शताब्दी मानल जाइछ। एहि मे तीन गोट शाखा अछि। पहिल शाखा मे महाराष्ट्रीक नियमक प्रतिपादन अछि। दोसर शाखा मे शौरसेनी, प्राच्या, आवन्ती, बाह्लीकी; मागधी, अर्धमागधी और दक्षिणात्यक विवेचन अछि। एहि मे शाकार द्वारा प्रयुक्त भाषा केँ शाकारी कहल गेल अछि जकरा मे चाण्डी, शौरसेनी तथा मागधीक मिश्रण अछि। एहि मे ग्राम्योक्तिक बहुलता रहैछ। शवरीक प्रसंग मे कहल गेल अछि जे ओ मागधी सँ बनल अछि।[७२]

डा० गजानन बासुदेव तगारेक अनुसार अपभ्रंशक—(१) पश्चिमी, (२) दक्षिणी तथा (३) पूर्वी भेद छल। पश्चिमी अपभ्रंश प्रधानतः ग्रियर्सनक

---

६८ ओतहि, पृ० ६३९

६९ ओतहि, पृ० ६३९-४०

७० ओतहि, पृ० ६४०

७१ ओतहि, पृ० ६४२

७२ ओतहि, पृ० ६४१-४२

शौरसेनी क्षेत्र सँ सम्बद्ध छल जे आधुनिक गुजराती, राजस्थानी और हिन्दी भाषाक क्षेत्र थिक। दक्षिणी अपभ्रंशक सम्बन्ध महाराष्ट्री क्षेत्र सँ अछि तथा आधुनिक महाराष्ट्र, बरार एवं मध्य प्रान्तक मराठी भाषी क्षेत्र ओहि मे सन्निहित छल तथा पूर्वी अपभ्रंशक सम्पर्क मागधी भाषाक क्षेत्र सँ छल जाहि मे आधुनिक बिहार, बंगाल और उड़ीसाक भूभाग अछि।[७३] पूर्वी अपभ्रंशक प्रसंग मे आनो-आन विचारधारा अछि जकरा सभहक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कएल जाइछ।

पूर्वी अपभ्रंशक सभ सँ प्रवल समर्थक याकोवी छथि। सनत्कुमारचरितक भूमिका मे प्राकृत पैंगलमक भाषा पर विश्लेषण करैत ओ जतए ओकर भाषा कें अवहट्ठ कहलनि अछि ओतहि ओ ओहि अवहट्ठक आधारभूत पूर्ववर्ती भाषा कें पूर्वी अपभ्रंश मानलनि अछि जे हुनकानुसारे बिहार मे प्रचलित छल और ओ अवश्ये मैथिली थिक। याकोवीक एहि धारणा कें दुई गोट आधार छल। पहिल आधार तँ म०म० हरप्रसाद शास्त्री द्वारा प्रकाशित 'बौद्ध गान ओ दोहा' और दोसर आधार छल सर जार्ज ग्रियर्सन द्वारा प्रतिपादित मत। प्रो० ज्यूल ब्लाख याकोवीक तत्सम्बन्धी मतक खण्डन करैत छथि[७४] तथा अपभ्रंश संज्ञा कें एक साहित्यिक भाषाक अर्थें तक सीमित राखए चाहैत छथि।

पूर्वी अपभ्रंशक सम्बन्ध मे श्री एस० एन० घोषालक[७५] धारणा अछि जे पूर्वी प्रदेशक बोली मागधी अपभ्रंश छल जे मागधी प्राकृतक वास्तविक वंशज छल तथा ओ मागधी अपभ्रंश पूर्वी साहित्य मे व्यवहृत पश्चिमी अपभ्रंश सँ पूर्णतः भिन्न छल। डा० तगारेक पूर्वी अपभ्रंशक मान्यता सरह और काण्हक दोहा-कोष पर आधारित अछि। एहि दोहा-कोषक भाषा मे परिनिष्ठित अपभ्रंशक अतिरिक्त जे स्थानीय विशेषता अछि ओकरा अलगबैत डा० तगारे जाहि तथ्यक तालिका प्रस्तुत कएलनि अछि ओ एवंक्रमक अछि :—

(१) पूर्वी अपभ्रंश मे किछु संस्कृत ध्वनिक परिवर्तन एहि तरहक रहैछ—

(अ) क्ष > ख—क्ख; जेना क्षण > खण; अक्षर > अक्खर।

(आ) त्व > तु—त्त—; जेना त्वम > तुहुँ: तत्व > तत्त।

(इ) द्व > दु—; जेना द्वार > दुआर।

(ई) ब > व; जेना वज्र > बज्ज, वेद > बेअ।

---

७३ हिस्टोरिकल ग्रामर आफ अपभ्रंश, पृ० १५-१६

७४ डॉ० शहीदुल्लाक थीसिस 'सरह और काण्ह के रहस्य गीत' की भूमिका।

७५ एन इनक्वायरी इन्टू ईस्टन अपभ्रंश, ए० सो० ज०, भाग २२, सं० १ (१९५६ ई०)

(उ) ष, स } > श

(२) संस्कृत श सुरक्षित रहैछ ।

(३) आद्य महाप्राण नहि होइछ ।

(४) लिंगक अतंत्रता अधिक अछि ।

(५) निर्विभक्तिक संज्ञापद अधिक उपलब्ध अछि । अविकारी सामान्य कारक बनेबाक प्रवृत्ति प्रत्येक अपभ्रंश सँ अधिक देखल जाइछ ।

(६) आन-आन अपभ्रंश सन एहि मे पूर्वंकालिक तथा क्रियार्थंक संज्ञाक प्रत्यय मे मिश्रण नहि भेल । पूर्वंकालिक प्रत्यय—अइक प्रयोग पूर्वी अपभ्रंश मे क्रियार्थंक संज्ञाक हेतु सेहो भेल अछि जेना करइ= (१) करि, (२) करब ।

(७) क्रियार्थंक संज्ञाक हेतु परिनिष्ठित अपभ्रंशक अण प्रत्ययक एतए प्रायः अभाव रहैछ । प्रायः इव>तव्यत् प्रत्यय सँ क्रियार्थंक संज्ञा सेहो बनाओल जाइछ ।[७६]

डा० तगारे पूर्वी अपभ्रंशक जे उपर्युक्त विशेषता लक्षित कएलनि ओ यथार्थंतः समीचीन तँ अछिये संगहि चर्यापदक भाषा मे दोहाकोषक अपेक्षा पूर्वीपन बेसी अछि । कोनहु एक गोट दोहा और चर्यापदक तुलनात्मक अध्ययन सँ एहि तरहक विषय स्पष्ट भए जाइछ । एहि प्रसंग मे काण्हक एक गोट गीत और दोहा उद्धृत कएल जाइछ—

(१)
जिमि लोण विलिज्जइ पाणि एहि,
तिम घरणी लइ चित्त ।
समरस जाई तक्खन,
जइ पुणु ते सभ णित ।।

(२)
नगर बाहिरे डोम्बि तोहोरि कुडिया,
छाह छोइ जाइँ सो बाह्मण नाडिया ।
आलो डोम्बि तोए सम करिबम संग,
निघिण काण्ह कपालि जोई लांग ।।

दोहाक भाषा मे डा० तगारे केँ जे भूत कृदन्त प्रत्यय—ल अथवा—इलक दर्शन नहि भेलनि चर्यापद मे ओ हुनका सहजहिँ उपलब्ध भए गेलनि ।

---

७६ हिस्टोरिकल ग्रामर आफ दि अपभ्रंश, पृ० २५

(१) हउ सूतेलि महासुख लीलें (काण्ह)।

(२) सुअने मइँ देखिल तिहुँअण सुण्ण (का०)

(३) चीआ राअ-सहावे मुकल (सरह)।

(४) सरह भणइ बप उजू वट भइ ला (सरह)।

गीतक भाषा मे पूर्वीपन केँ रहब स्वाभाविक छल किएक तँ ओ सर्वसाधारणक हेतुएँ लिखल गेल छलैक।

दोहाकोष और चर्यापदक भाषाक प्रसंग मे पूर्ण विवाद अछि। डा० सुनीति कुमार चटर्जी[७७] मात्र बौद्धगान ओ दोहा मे संकलित दोहा कोष और चर्यापदे मे दुई प्रकारक उपभाषाक दिश संकेत कएलनि अछि जकरा ओ क्रियारूप, शब्दरूप तथा प्रचलित लोकोक्तिक आधार पर पुरान बंगला कहलनि अछि। डाकार्णवक सम्पादक डा० नगेन्द्र नारायण चौधरी डाकार्णवक भाषा केँ शौरसेनी अपभ्रंश सँ प्रभावित तँ मानैत छथि किन्तु ओकरा पर पूर्वी बंगलाक शब्दरूप, उच्चारण एवं लोकोक्तिक प्रभाव केँ स्वीकार कएलनि अछि।[७८] डा० सुकुमार सेन साधनमाला तथा हेवज्रक वज्रगीतक भाषा केँ शौरसेनी अपभ्रंश पर आधारित तँ मानलनि अछि किन्तु चर्यापद सँ ओकर भाषा केँ पृथक कहलनि अछि।

सिद्ध साहित्यक रचनाकाल७म सँ १३म शताब्दी तक निश्चित कएल जाइछ।[७९] डा० सुनीति कुमार चटर्जीक मत थिकनि जे ९म सँ १३म शताब्दी तक पूर्वी भारत मे पश्चिमी अपभ्रंश काव्य भाषाक रूप मे प्रतिष्ठित छल जकरा मे दोहा ओर वज्रगीतक रचना भेल। ओ एकर ऐतिहासिक कारण राजपूतक राजनैतिक प्रभुत्व केँ मानैत छथि जनिकर राजदरवार मे शौरसेनी भाषा और काव्य केँ प्रश्रय प्राप्त छल तथा ओहि दरवारक चारणलोकनिक काव्य भाषा सेहो शौरसेनीये छल। अतः गुजरात सँ लए बंगाल तक समस्त आर्य भाषा-भाषी प्रदेश मे शौरसेनी अपभ्रंश केँ काव्य भाषाक रूप मे मान्यता प्राप्त भेल। किंतु आधुनिक आर्य भाषाक स्वरूप ओहि समय गठित भए रहल छल जे पश्चात् स्वतन्त्र काव्य भाषाक रूप मे प्रयुक्त भेल।[८०] एहि सँ निस्सृत होइछ जे काव्य रचनाक समय दोहा आदिक

---

७७ ओरिजिन एण्ड डेवलपमेंट आफ बंगाली लैंग्वेज, भाग १, पृ० ११२

७८ डाकार्णव, पृ० १९

७९ ओल्ड बंगाली टेक्ट्स, पृ० ४४

८० ओरिजिन एण्ड डेवेलपमेंट आफ बंगाली लैंग्वेज, पृ० ११३-११४

हेतु शौरसेनीक व्यवहारक तथा गीतक रचना मे स्थानीय भाषा कें आधार बनेबाक परम्परा छल ।

दोहा तथा चर्यापदक भाषा कें म०म० हर प्रसाद शास्त्री पुरान बंगला, डा० आर्त वल्लभ महन्ती उड़िया,[८१] डा० वाणीकान्त काकती आसामी[८२] तथा डा० काशी प्रसाद जयसवाल एवं श्री राहुल सांकृत्यायन मैथिली और मगही सिद्ध कएलनि आछि ।[८३]

एहि प्रसंग मे ई तँ निर्विवाद थिक जे अधिकांश सिद्ध संतक जन्मभूमि वा तँ पूर्वी प्रदेश मे छल वा हुनकालोकनिक कर्मभूमि पूर्वीय क्षेत्र छल । अतएव पूर्वी भाषाक समावेश हुनका काव्य मे रहब अनिवार्य छल । दोसर बात ई थिक जे चर्यापद कें नेपालक ओहि भूभाग मे लिपिवद्ध कएल गेल जतए मैथिलीक विशेष प्रभाव छल ।

सिद्ध लोकनिक उद्देश्य छल साधारण एवं सीमित मानव चेतना सँ त्राण प्राप्त करब, अज्ञान तथा आशक्तिक आवरण सँ अपना के मुक्त करब एवं ज्योति तथा शक्तिक विशालतर क्षेत्र मे प्रवेश करब । एहि लक्ष्यक निमित्त चेतन रूप सँ कएल गेल प्रयत्न कें योग कहल गेल अछि । योग शब्दक दुइ अर्थं—(१) जगत मध्य व्याप्त दिव्य जीवन सँ एकात्म लाभ करब जे मानव जीवनक उद्देश्य थिक आ (२) बुद्धिपूर्वक नियोजित आत्मानुशासन कें साधनक्रम एवं ओहि लक्ष्यक प्राप्तिक निमित्त स्वाध्याय एवं अभ्यास करब थिक ।

वज्रयानी एवं सहजयानी सिद्ध लोकनि अपन शक्तिक माध्यम सँ विभिन्न योग-पद्धतिक वर्णन सरल, सहज एवं मधुर भाषा मे कए लोक साहित्यक प्रगतिक प्रयास मे अग्रसर भेलाह जाहि सँ समृद्ध साहित्यक क्रमशः विकास भेल ।

चर्यापद किओ असामी, किओ उड़िया भने मानथु किन्तु एहि पद्य मे ठाम-ठाम वर्णित आठो कारक जाहि रूप मे प्रयुक्त भेल अछि ओ सभ कें सभ अपन ओहि रूप मे विद्यापतिक पद्य मे प्रयुक्त पाओल जाइछ ।

उदाहरणक निमित्त निम्नलिखित पद्य प्रस्तुत कएल जाइछ—

---

८१ वौद्ध गान ओ दोहा-भूमिका ।

८२ उत्कल साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, पृ० ३

८३ असामीज, इट्स फोर्मेसन एण्ड डेवलपमेंट, पृ० ९

## कर्त्ताकारक

कर्त्ताकारकक निम्नलिखित शब्द जकर अन्त 'उ' मे भेल अछि—

तुला धुणि धुणि आँसु रे आँसु
आँसु धुणि धुणि निरवर सेसु (शान्ति०)
तइ लो डोम्बी सअल बिटालिअ (कृष्ण०)

विद्यापतिक—

फनिपति नहि मोरा मुकता हार,

ओ शब्द जकर अन्त 'ए' मे होइछ—

कान्हे गाइ तु काम चण्डाली (कान्ह)

विद्यापतिक—

भणे कवि कण्ठहारे,

तथा ओ शब्द जकर अन्त 'ओ' मे होइछ—

जीवन्ते मअलेँ नहि विशेसो (सरह)
उमत सवरो पागल शवरो (शवर)

प्राकृत एवं आपभ्रंश मे कतिपय स्थान मे वर्णित पोआल जाइछ।

## कर्मकारक

कर्मकारकक ओ शब्द जकर अन्त 'आ' मे होइछ—

मार रे जोइया मुसापवणा (भुसुक)

विद्यापतिक—

बन्दह नन्द किशोरा,

ओ शब्द जकर अन्त 'क' मे होइछ—

तिशरण णावी किअ अठक मारी (कान्ह)

विद्यापतिक—

कञोनक कहब मेदिनि से थोल,

ओ शब्द जकर अन्त 'के' मे होइछ—

केडुआल नाहि केँ कि
कहब के पारअ,

विद्यापतिक—

एकक हृदय अओके न पाओल ।
पिया कें लिखिए पठाउवि पाती ।

## करणकारक

करणकारकक ओ शब्द जकर अन्त 'ए' मे होइछ—

भवनइ गहण गम्भीर वेंगें वाही ।
अपना मांसें हरिणा वैरी (भुसुक)
सदगुरु बोहें जितेल भववल । (कान्ह)

विद्यापतिक—

जनि सुधाकर करें कबलित अमियबम चकोरा ।
एहनि सुन्दरि गुणक आगरि पुनें पुनमत पाव ।

## सम्प्रदान कारक

सम्प्रदान कारकक ओ शब्द जकर अन्त 'ए' मे होइछ—

कान्ह डोम्बी विवाहे चलि आ ।

विद्यापतिक—

कमने पुरूखे हर अराधिअ ।

ओ शब्द जकर अन्त 'एरे' मे होइछ—

रवर रवि किरण सन्तापेरे
गअणाङ्गण गइ पइठा (महीधर)

## आपादान कारक

आपादान कारकक ओ शब्द जकर अन्त 'हु' मे होइछ—

रवेयहु जोइनी लेला न जाय (गुगुरी)
रअनहु पहजे कहेइ (भुसुक)

विद्यापतिक—

सब फुल मधुर नहि फुलहु फुल विसेष ।

## सम्बन्ध कारक

सम्बन्ध कारकक ओ शब्द जकर अन्त 'क' मे होइछ—

एडिएउ छन्दक बान्ध कारणक पाटेर आस (लूइ)

विद्यापतिक—

विपारिव कनक कदलि तर
शोभित थल पंकजक रूप रे ।

ओ शब्द जकर अन्त 'र' मे होइछ—

ससर सिंगे (भुसुक)
हरिणा हरिणिर निलउ ण जानी (धुसुक)

विद्यापतिक—

नाह न हिअरा लाग वचन सुनहु किछु मोरा ।

ओ शब्द जकर अन्त 'एरि' वा 'एरी' मे होइछ—

तोहोर अन्तरे मोए छलिलि हाड़ेरि माली (कान्ह)
तो महामुदरी टुटि गेलि कंरवा (ताड़क)

विद्यापतिक—

नन्दक नन्दन कदम्बेरि तरुतरे ।
नन्देरि नन्दन सजे देखि आव जो ।

तथा ओ शब्द जकर अन्त 'एरे' मे होइछ—

हाथेरे काङ्काण मा लोउदायण (सरह)

विद्यापतिक—

आपनि अथिक सुधि
न धर परेरे बधि ।

## अधिकरण कारक

ओ शब्द जकर अन्त 'ए' मे होइछ—

आलि कालि घन्टा नेउर चरणे (कान्ह)
दुहिल दुधु कि वेन्टे षामाय(ढण्ढण)

विद्यापतिक :—

जनि जगे मनसिज भूप रे ।
श्रवणे सोहङ्गम कुण्डल डोले ।

'एँ' मे अन्त वाक्य—

सासु घरेँ छालि कोश्चा ताल (गुगुरी)
उइत्ता गअण माझेँ अदमूआ (भुसुक)

विद्यापतिक—

आसाञो मन्दिर निसि गमावए।
चेतन पायु चिन्तामे आकुल ॥

'हि' मे अन्त वाक्य—

भुसुक भणइ मूढ़ा हिअहि ण पइसई (भुसुक)

विद्यापतिक—

थावर जङ्गम मनहि अनुमान।

## सम्बोधन कारक

सम्बोधन कारकक आलो, हालो, लो एवं अलो सँ युक्त वाक्य—

आलो डोम्बि तोए सम करिबे म साङ्ग (कृष्ण)
हालो डोम्बि तो पुछमि सदभावे (ओएह)
तु लो डोम्बि हाउँ कपाली (ओएह)
वाजइ अलो सहि हेरुअ बीणा (वीणा)

विद्यापतिक—

वेड़लिह मोहि बड़े सापे मोरे पापे लो।
नृप सिवसिंह रस जाने नब कान्हे लो ॥

उपर्युक्त प्रसंग सँ प्रतीत होइछ जे चर्यापद केँ कोनहुटा हालत मे मैथिली सँ भिन्न मानब मात्र भ्रमेटा होयत।

संस्कृत साहित्य मे मैथिलीक शब्दक यथास्थान समावेश करबाक परिपाटी तँ अत्यन्त प्राचीने पाओल जाइछ किन्तु ९म-१०म शताब्दीक संस्कृत साहित्य मध्य अनेक ग्रन्थक अनेक स्थल पर एहि प्रसंगक दिग्दर्शन होइछ। वाचस्पति मिश्र अपन प्रसिद्ध 'भामतीटीका' मे 'हरी' शब्दक प्रयोग कएलनि अछि जे विशुद्ध मैथिलीक शब्द थिक।[८४]

सर्वानन्द अमर कोषक टीका मे कतिपय मैथिली शब्दक प्रयोग कएलनि जाहि मे निम्नलिखित शब्द प्रधान अछि—

अरदा>अरार
ओहालि>ओहारि
सिहाद>सिर।
हकर>हकार

८४ डा० सुभद्र झा, फोरमेशन आफ दि मैथिली लैंग्वेज, भूमिका, पृ० ३२

सर्वानन्दक ग्रन्थ आनो दृष्टिकाण सँ बड़ उपयोगी अछि। एहि सँ प्रमाणित होइछ जे एगारहम शताब्दी मध्य मैथिली अपभ्रंश सँ पृथक भए एक स्वतंत्र भाषाक रूप मे मानल जाए लागल छल[८५] जे पश्चात् समस्त पूर्वी भारतीय भाषाक उद्भवक स्रोत बनल। मात्र इएह कारण थिक जे दोहाकोष एवं चर्यागीतक भाषा केँ प्रत्येक पूर्वी क्षेत्रिय भाषा अपनेबाक दाबा करैत अछि। अतएव कहुखन अपभ्रष्ट, कहुखन ग्राम्य, कहुखन लौकिक ओर कहुखन देशी भाषाक नामेँ सम्बोधित होइत पूर्वी भारतोय भाषा पर मैथिलीक स्पष्ट छाप अछि।

एवंक्रमेँ देशी अपन भाषाक वैचित्र्य, गुण और परिमाण केँ अक्षुण्ण राखि अपना कलेवर केँ समृद्ध करैत द्रविड़ भाषाक अतिरिक्त आभीर, गुर्जर आदि जातिक भाषा केँ समाश्रित कए पूर्वी भारतक राजनैतिक एवं सांस्कृतिक जीवनक विकासक्रमक संग अग्रसर भेल तथा व्यामिश्रित एवं पाली केँ समावेश कए ई अनंत विस्तारक कल्पनाक सीमा केँ पार कए जाइछ और ज्ञानक अपार भंडार हिंदमहासागरहु सँ गहींर, भारतक भौगोलिक विस्तारो सँ व्यापक, हिमालयक शिखरहुँ सँ उन्नत तथा ब्रह्मक कल्पनो सँ अधिक सूक्ष्म रूप मे परिणत होइछ जकरा भगवान महावीर और गौतम बुद्ध अपन धर्मप्रचारक माध्यम बनौलनि एवं सम्राट अशोक राजभाषाक पदपर समादृत कए भारतक कोन कथा विदेशहुँ मे सुप्रतिष्ठित कएलनि।

# प्रारम्भिक साहित्य

अवहट्ठ गीति-काव्यक माध्यम सँ प्रारम्भ भेल जकर श्रेय बौद्ध सिद्धाचार्य लोकनि केँ छनि। वज्रयानक गुह्य समाज तंत्र, ज्ञानसिद्धि, प्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धि, अद्वयवज्र संग्रह, सेकोद्देशटीका, साधनमाला आदि ग्रन्थ मिश्रित संस्कृत मे लिखल गेल जाहि मे कतिपय अवहट्ठ भाषाक शब्दक प्रयोग पाओल जाइछ किन्तु बौद्धसिद्ध सर्व-प्रथम अपन साधना पद्धति, जगत, जीव और परमतत्वक विचार एवं अनुभूति केँ लोकभाषा मे व्यवहृत चर्यापद तथा दोहाक माध्यम सँ व्यक्त कएलनि जकरा पर मैथलीक पूर्ण प्रभाव परिलक्षित होइछ।

बौद्ध सिद्ध लोकनि अपन विचार केँ जन सामान्य तक पहुँचेबाक उद्देश्य सँ भाषाक गीतक आश्रय तँ लेलनि किन्तु हुनका लोकनि केँ भ्रम भेलनि जे कतहु हुनकर आचार्य विरोधी कार्य जनमध्य घृणाक भावना केँ ने उत्पन्न करनि। तदर्थं ओ लोकनि एहेन भाषाक निर्माण कएलनि जकर अर्थ बामाचार तथा योगाचार दुहु मे यथार्थ रूप मे लागि जाइत छल। एहि भाषा केँ प्रथमतः तँ सन्ध्या भाषा और पश्चात् निर्गुण, रहस्यवाद या छायावाद कहल गेल।

सरहपाद एहि भाषा एवं नव छन्दक आदि कवि थिकाह जनिकर समय ईसाक आठम शताब्दी थिक।[1] सिद्ध लोकनि ईसाक ८म शताब्दी सँ १२ म शताब्दी धरि अपन सिद्धान्त केँ गीत एवं दोहा मे प्रतिपादित कएलनि जकरा चर्या नाम देलनि। वज्रयानक गुप्तपूजा केँ चर्या, अनुष्ठान वा आचरण कहल जाइत छल। महापंडित राहुल सांकृत्यायनक अनुसार ८४ सिद्ध मे सँ ३६ गोट सिद्धक सम्बन्ध आधुनिक बिहार प्रान्तक भूभाग सँ छल जाहि मे अधिकांश मैथिल छलाह।

सरहपादक जन्मस्थान पूर्व दिशाक राज्ञी नगरी थिक जे प्रायः भागलपुर वा पुर्णियाक अन्तर्गत अछि।[2] हिनकर पूर्वक नाम राहुलभद्र, तथा सरोजवज्र छलनि। हिनक शिक्षा नालन्दा मे भेल तथा पश्चात् ओ ओतएक अध्यापक सेहो भेलाह। सिद्धाचार्यक पूर्व ओ शास्त्रक अध्ययनक संगहि काव्यक अवगहन सेहो कएलनि। सरहपाद जगतक प्रचलित विचारधाराक विरोधी छलाह। ओ अपन दोहाकोश—

---

१ महापण्डित राहुल सा०, दोहाकोश, भू० पृ० १

२ ओतहि, पृ० १०; लेखक, मैथिली साहित्यक आदिकाल, पृ० ६७

चर्यागीतिक प्रथम १२ दोहा मे तत्कालीन धार्मिक सम्प्रदायक विचारक खण्डन कएलनि अछि जकर किछु अंश एवंक्रमक अछि :—

जइ णग्गाविअ होइ मुत्ति, ता सुणह सिआलह ॥
लोमु पाडणें अत्थि सिद्धि, ता जुवइ णिअम्बह ।
पच्छीगहणे दिठ्ठ मोक्ख, ता मोरह चमरह ॥
उञ्छे भोअणें होइ जाण, ता करिह तुरङ्गह ।
सरह भणइ खवणाण मोक्ख, महु किम्पि न भावइ ॥

अर्थात् "जँ नग्न रहला सँ मुक्ति प्राप्त होइछ तँ कुकुर एवं गीदर मुक्त भए सकैछ, मयुरक पाँखि ग्रहण कएला सँ जँ मोक्ष उपलब्ध होइछ तँ मयुर एवं चमरी सेहो मुक्त भए सकैछ तथा शिला चुनि खएला सँ जँ ज्ञानक प्राप्ति होइछ तँ हाथी एवं घोड़ा सेहो ज्ञानी भए सकैछ।"

तत्कालीन अनेक मूढ़ प्रचलित विश्वासक खण्डन सरहपाद अपन पद्य मे कएलि अछि। जेना—

गुरु—बअण—आमिअ-रस, धवहिं ण पिविउ जहिं ।
बहु सात्यात्थ मरुत्थलिहिं, तिसिअ मरिव्वो त्तेहि[३] ॥

एहि पद्य मे शास्त्र केँ मरु-स्थल कहल गेल अछि जकर चक्र मे पड़ला पर लोक पुनि बाहर नहि भए सकैत अछि।

सरह निष्कपट एवं सरल जीवनक पक्षपाती छलाह। बाहरी आडम्बर एवं ढकोसलापन सँ हुनका घृणा छलनि। ओ तरह-तरहक भेष आदिक निन्दक तथा इन्द्रिय संयमक यद्यपि प्रशंसक छलाह किन्तु इन्द्रिय संयमक चरम रूपक ओ विरोधी छलाह जे हुनक एहि उक्ति सँ पुष्ट होइछ—

घरहि म थक्कु म जाहि वणे, जहि तहि मण परिआण ।
सअलु णिरन्तर बोहि-ठिअ, कहिं भव कहिं णिव्वाण ।
णउ घरे णउ वणें बोहि ठिउ, एहु परिआणहु भेउ ।
णिम्मल चित-सहावत्ता, करहु अविकल सेउ[४] ।

तथा

विस आ सत्ति म बन्ध करु, अरे वढ़ सरहें वुत्त ।
मीण पअङ्गम करि भमर, पेक्खह हरिणह जुत्त ।

---

३ ओतहि, भूमिका, पृ० २६
४ ओतहि, पृ० २७

अर्थात् "ने घर मे रहू आ ने वन मे। सभ स्थान मे तँ निरन्तर परमज्ञान स्थित अछिये पुनि कतए संसार ओर कतए मोक्ष? परमज्ञान ने तँ घर मे रहैछ या ने वन मे। एहि भेद कें यथार्थ रूप मे बुझबाक चाही। चित्त निर्भरता सर्वोपरि थिक जकर सर्वदा सेवन करबाक चाही।"

"रस-रूप-स्पर्श-गंध शब्दक लोभ मे परि मीन, पतंग, भ्रमर, हाथी तथा हरिण नष्ठ भए जाइछ।"

पूनि सरह कहैत छथि—

खाअन्तें पीवन्तें सुरअ रमन्तें।
आलिउल बहलहो चक्क फरन्तें॥
एवहि सिद्धि जाइ परलोकइ।
माथे पाअ देइ भुअलोक॥

तथा सहज जीवनक निर्देश करैत ओ पुनः कहैत छथि—

देक्खउ सुनउ पईसउ साद्दउ।
जिग्घउ, भमउ बईसउ उठ्ठउ॥
आलमाल बबहारें बोल्लउ।
मण च्छुडु एकाआरे म्म चलउ॥
चिन्ताचित्तवि परिहरहु।
तिम अच्छहु जिम बाल॥

सरहपादक एहि कथन सँ स्पष्ट अछि जे ओ जीवनक भोग कें त्याज्य नहि मानैत छथि। ओहि मे आसक्ति त्याज्य थिक। उपनिषदक सन्त हुनका सँ डेढ़ हजार वर्ष पूर्वे ज्ञानी कें 'बाल्येन तिष्ठासेद'क उपदेश देल। सरह सेहो कहैत छथि जे ओहिना रहू जेना बालक रहैत अछि। आसक्ति एवं छद्मपूर्ण जीवनक ओ विरोधी छलाह। सरहक दृष्टि मे मुक्ति स्वतः सिद्ध वस्तु थिक। जीवनक कल्पना मिथ्या थिक तथा परमार्थ मे एकमात्र ब्रह्म सत्य थिक। जगतक क्षणिक किन्तु मूल्यवान स्थिति कें मानैत ओ जगतक महत्त्व कें स्वीकार कएल तथा प्रत्यक्ष कें छोड़ि परोक्षक पाछाँ जएबा कें ओ मूर्खता कहलनि। सरहक दृष्टि मे परमपद मनक एक विशेष अवस्था थिक, जेना—

जहि म्मण मरइ, पवणहो तहि खअ जाइ।
एहु सो परममहासुह, सरह कहिहउ जाइ॥[५]

५ ओतहि, पृ० ८, पद ३०

"मनक शंकायुक्त स्थिति तथा ओकर चंचलता केँ हटला पर परममहासुखक स्थिति अबैत अछि।" ओहि स्थिति केँ और अधिक स्पष्ट करैत ओ कहैत छथि—

जहि मण पवणण संचरइ, रवि-ससि णाहिं पवेस ।
तहिं बढ़ चित्त विसाम करु, सरहें कहिअ उएस ।।
एक्क करु मा वेण्णि करु, मा करु विण्णि विसेस ।
एक्केँ रंगे रञ्जिया, तिहुअण सअलासेस ।।[६]

अतएव ई स्पष्ट अछि जे सरहपाद नव भाषा एवं छन्दक आदिकवि थिकाह जे प्राकृत सँ अपन सम्बन्ध तोड़ि आधुनिक मैथिली भाषा मे पद्यक रचना कएलनि जे पश्चात् सिद्ध लोकनिक भाषा बनल ।

सिद्ध सरहपादक एक दोसर शिष्य शवरपा छलाह । ओ शवर (कोल-भील) सदृश वेश-भूषा धारण करैत छलाह एहि हेतु ओ शवरपा नाम सँ प्रख्यात भेलाह । महापण्डित राहुल सांकृत्यायनक अनुसार हिनक जन्मस्थान विक्रमशिला छलनि । सरहपादक शिष्य परम्परा मे हिनक स्थान तेसर छल ।

शवरपा रहस्यवादी विचारक छलाह । हिनक श्लेष परमपद-परक भेलहु साधारणतः कामुकता केँ प्रकट करैत अछि । फलतः ओ पश्चात् घोर वामाचारक सहायक बनि गेलाह जकर पुष्टि हुनक निम्न गीत सँ होइछ—

उँचा उँचा पावत तहिं बसइ सबरी बाली ।
मोरंगी पिच्छ पहिरहि सबरी गीवत गुजरी माला ।।ध्रु०।।
ऊमत सबरो पागल सबरो, माकर गुली-गुहाडा,
तोहारि णिअ घरिणी सहज सुन्दरी ।।ध्रु०।।
णाणा तरुवर मौलिल रे, गअणत लागेलि डाली ।
एकली सबरी ए वन हिण्डइ, कर्णकुंडल वज्रधारी ।
तिअ धाउ खाट पडिला सबरो, महासुह सेजिज छाइली ।
सबरो भुजंग णइरामणि दारी, पेक्खत राति पोहाइली ।
हिय ताबोला महासुहे कापुर खाई ।
सून निरामणि कण्ठे लइआ महासुहे राति पोहाई ।
गुरु वाक पुंछआ बिन्ध णिअ मणे वाणें ।
एके शर-सन्धानें विन्धह, विन्धह परम णिवाणें ।
उमत सबरो गेरुआ रोषे;
गिरिवर सिहर सन्धि पइसन्ते, सबरो लोडिव कइसे ।[७]

---

६ ओतहि, पृ० १२, प० ४९-५०

७ ओतहि, भूमिका, पृ० २५

"ऊँच पर्वत पर शवर-बालिका बैसल अछि जकरा माँथ पर मयूरक पाँखि तथा गरा मे गुंजाक माला छैक। ओकर प्रेमी शवर प्रेम मे उन्मत्त अछि। हे शवर! अहाँ हल्ला-गुल्ला नहि करू। अहाँक गृहिणी सहज सुन्दरि छथि। ओहि पर्वत पर नाना प्रकारक तरुवर फुलाएल अछि जकर डारि गगनमण्डल कें स्पर्श करैत अछि। कान मे कुण्डल वज्र धारण कए शवरी एकसरे वन मध्य घूमैत अछि। शवर दौड़ि कए महासुख सेज पर पड़ि रहलाह। शवर भुजंग (विट) एवं नैरात्म्य (शून्यता) वेश्या (दारी) कें देखैत राति बिताओल। हृदय तांबूल के महासुखरूपी कपूरक संग खाए, शून्य नैरात्मा के गरा लगाए महासुख मे राति बीतल। गुरु वचन पूछि अपन मनरूपी वाण सँ बेध—एक शर-सन्धान सँ परम निर्वाण कें वेधल।"

किछु विशेष सांकेतिक शब्द कें छोड़ि ई एकगोट शृंगारिक पद्य थिक। शवर साधक थिकाह। बुद्धक सिद्धान्तक अनुसार जगत्, आत्मा एवं ब्रह्म रहित नहि थिक। ओ सभ के सभ आत्म-रहित, निरात्मा वा नैरात्म्य थिक। ओहि नैरात्म्य तत्व शून्यता कें साक्षात्कार करब थिक। ओकर साक्षात्कार महासुखक अनुभूति थिक जकरा योगी ध्यानमग्न भेला पर प्राप्त करैत छथि।

लूइपाद राजा धर्मपालक (७६९-८०९ ई०)[८] कायस्थ लेखक छलाह। ओ शवरपाक शिष्य छलाह। हिनक लूहिपा तथा मत्स्येन्द्रनाथ आदि अपर नाम छल। तिब्बती स्तन्ग्युर मे हिनका भंगल देशवासी[९] कहल गेल अछि। हिनक निम्नलिखित पद्य सँ ज्ञात होइछ जे अपन गुरु सन इहो रहस्यवादक पक्षपाती छलाह[१०]—

काआ तरुवर पञ्च वि डाल।
चञ्चल चीए पइठो काल॥
दिट करिअ महासुह परिमाण।
लुइ भणइ गु पच्छिअ जाण॥ध्रु०॥
सअल समाहिअ काहि करिअइ।
सुख दुखेतें निचित मरिआइ॥
एड़िएउ छान्दक बान्ध करणक पाटेर आस।
सुनु पाख भिति लाहु रे पास॥ध्रु०॥
भणइ लुइ आम्हे साणे दिठा।
धमण-चमण वेणि पाण्डि बइण॥ध्रु०॥

---

८ राहुल सांकृत्यायन, पुरातत्व निवंधावली, पृ० १४३
९ धर्मवीर भारती, सिद्ध साहित्य, पृ० ५१
१० राहुल सांकृत्यायन, पुरातत्व निवंधावली, पृ० १४४

चर्यापदविनिश्चयक टीका मे दातड़ीपादक (दारिकपा) निम्नलिखित श्लोक पाओल जाइछ—

प्राणी वज्रधरः कपालः वनितातुल्यो जगत स्त्रीजनः
सोऽहं हेरुक भूर्तिरेष भगवान योनः प्रभिन्नोऽपिच ।"

एहि मे कहल गेल अछि जे "प्राणी वज्रधर, जगतक स्त्री कपाल वनिता तथा साधक हेरुक थिकाह ।"

दारिकपा उड़ीसाक राजा छलाह जे सिद्ध लुइपाक शिष्यत्व ग्रहण कएनि। हिनक भाषा पर विक्रमशिलाक तत्कालीन भाषा एवं अपन गुरु लुइपाक बड़ प्रभाव बुझना जाइछ। हिनकर एहि गीत मे—

सुनकरुणरि अभिन वारें काअ-वाक्-चिअ,
विलसइ दारिक गअणत पारिमकुलें ।।ध्रु०।।
अलक्ष-लख-चित्ता महासुहे, बिलसइ दारिक ।।ध्रु०।।
किन्तो मन्ते किन्तो तन्ते किन्तो रे ज्ञान बखाने ।
अपइ ठानमहासुहलीणे दुलख परम निवाणें ।।ध्रु०।।
दुखे-सुखे एकु करिआ भुञ्जइ इन्दीजानी ।
स्वपरापर न चेवइ दारिक सअलानुत्तर माणी ।।ध्रु०।।
राआ राआ राआरे अवर राअ मोहेरा वाधा,
लुइ-पाअ-पए दारिक द्वादशभुअणें लधा ।।ध्रु०।।

राज्य कें मोहक बंधन कहल गेल अछि तथा ओ लुइपाक आश्रय प्राप्त कए चौदहो भुवन प्राप्त कए लेलनि। वस्तुतः सिद्धिक निमित्त गुरुए समस्त श्रेयक मूल थिकाह।

सिद्ध साहित्य मे कण्हपाक (८०६-८४६) गीतक बड़ पैघ स्थान अछि।[११] ई महाराज देवपालक समय मे एक प्रसिद्ध भिक्षु छलाह। चौरासी सिद्ध मध्य कवित्व एवं विद्या दुहुक दृष्टि सँ हिनक स्थान नितान्त महत्त्वक अछि। हिनका अनुसार एहि शरीरे मे चरम प्राप्तव्यक प्राप्ति होइछ। शरीरक जे मेरुदण्ड थिक तकरहि कंकाल दण्ड कहल जाइछ। एकरहि मेरु पर्वत कहल जाइछ। श्रीसम्पुटतन्त्र मे कहल गेल अछि जे पयरक तरबा मे भैरव-रूप धनुषाकार वायुक स्थान अछि। कटिदेश मे त्रिकोण उद्धरण अछि जकर तीन दल पर वर्त्तुलाकार वरुणक वास तथा हृदय मे पृथ्वी रहैछ जे चतुरस्त्र भाव सँ सभ दिश व्याप्त अछि। एहि प्रकारें कंकाल-

११ राहुल सांकृत्यायन, पुरातत्व निबंधावली, पृ० १५५

दण्डक रूप मे गिरिराज सुमेरु स्थित छथि। एहि गिरिराजक अन्दर कुहर मे नैरात्म धातु जगत उत्पन्न होइछ। एहि गिरि कुहर मे स्थित पद्म मे यदि बोधिचित्त पतित होइछ तँ कालाग्निक प्रवेश होइछ तथा सिद्धि मे वाधा पड़ैछ। कण्हपाक वज्रगीत एवंक्रमक पाओल जाइछ—

कोल्लअ रे ठिअ बोल्ल, मुम्मुणि रे कक्कोल।
घन किपीटह वजइ, करुणे किअइ णरोला।
तहि पल खज्जइ, गाढें मअ णा पिज्जइ।
हले कलिञ्जर पणिअइ, दुन्दुर वज्जिअइ।
चउसम कत्थुरि सिह्ला, कप्पुर लाइअइ।
मालइ घाण-सालि अइ, तहिं भलु खाइअइ।
पेंखण खेट करन्त, शुद्धाशुद्ध ण मणिअइ।
निरंशु अंग चडावि अइ, तहिं जस राव पणिअइ।
मलअजे कुन्दरु, वापई, डिण्डिम तहिन्न वञ्जि अइ॥

ठीक एहि तरहक भाव डोम्भिपाक गीत मे सेहो पाओल जाइछ जे मगधदेशक बासी छलाह। विणपा एवं विरूपा दुहु हिनक गुरु छलथिन। ई हेवज्रतन्त्रक अनुयायी छलाह। हिनक निम्नलिखित गीत मे—

नगर बाहिरिहिरे डोम्बी तोहोरि कुड़िया,
छइ छोई याइ को बाह्य नाड़िआ॥ध्रु०॥
आलो डोम्बि तोए समकरिबे म सांग।
निघिण काहण कापलि जोइ लाग॥ध्रु०॥
एकसो पदमा चौषट्ठी
तहिँ चढ़ि नाचअ डोम्बी वापुडी॥ध्रु०॥
हालो डोम्बि तो पुछमि सद्भावे,
अइससि जासि डोम्बि काहरि नावँ॥ध्रु०॥
तान्ति विकणअ डोम्बी अवर ना चंगता,
तोहोर अन्तरे छाड़िनड़ एट्टा॥ध्रु०॥
तु लो डोम्बी हाउँ कपाली,
तोहोर अन्तरे मोए घलिलि होड़ेरि माली॥ध्रु०॥
सरबस भाञ्जीअ डोम्बी खाअ मोलाण,
मारमि डोम्बी लेमि पराण॥ध्रु०॥

अवधूती नाड़ी केँ डोम्बिनी वा डोमिन तथा चंचल चित्त केँ ब्राह्मण कहल गेल अछि। डोमिन सँ छूत हेबाक भय सँ ओ ब्राह्मण भागल फिरैत अछि। विषयक जंजाल एक नगर थिक तथा अवधूती रूपी डोमिन एहि नगर सँ बाहर रहैछ। एहि गीत मे बर्णित छुआछूत सँ पड़ाएबाक तात्पर्य अवधूती वृत्ति सँ थिक। चौसठि पंखुड़ीक दल पर डोमिनक नाँचबाक तात्पर्य जालंधर नामक शिखर पर स्थित उष्णीषकमल सँ अछि। एवंक्रमेँ हुनक कहब जे मंत्र-तन्त्र निरर्थक तथा अपन गृहणीक संग आनन्दक उपलब्धिएटा एकमात्र आनन्द थिक, एहि सँ तात्पर्य अवधूतीक संग बिहार करबाक प्रसंगक अछि।

एवंक्रमेँ कतिपय सिद्ध जनिकर जन्म स्थान मिथिला क्षेत्र मे छल वा हुनकर सम्बन्ध विक्रमशिला सँ छलनि अपन पद्यक माध्यम सँ मैथिली केँ गौरवान्वित कएल। एहि मे भुसुकपा, शान्तिपा, जयानन्तपा एवं निर्गुणपा आदिक[१२] नाम प्रख्यात अछि जे अपन पद्य-रचना सँ मैथिली साहित्यक उत्तरोत्तर वृद्धि कएल।

मैथिलीक गीति काव्य मे विनयश्रीक स्थान १३म शताब्दीक आदि काल मे सर्वोच्च पाओल जाइछ।

विनयश्री[13] अपन गुरु तथा भारतक संघराज शाक्यश्रीभद्रक संग १२०३ ई० मे विक्रमशिला एवं जगत्तला केँ तुर्क द्वारा नष्ट भेलाक उपरान्त ओतए सँ तिब्बत पहुँचलाह। ओहि समय हुनकर बयस ३५ वर्ष छलनि। महापन्डित राहुल सांकृत्यायन केँ तालपत्र पर लिखल विनयश्रीक १४ गोट गीत प्राप्त भेलनि जे सिद्धक टकसालक गीत छल। एहि गीतक भाषा १२म-तेरहम शताब्दी मे विक्रमशिला क्षेत्र मे बाजल जाइत छलैक। विनयश्रीक एक पद्य मे—'गेल्लिअहुँ' शब्द अद्यावधि ओतए एहि अर्थ मे प्रयुक्त होइछ।

विनयश्रीक परिमार्जित एवं परिष्कृत गीत आधुनिक मैथिलीक प्रारूप थिक जे सरहक रहस्यमयी भाषा मे परमतत्वक वर्णन करैत अछि—

निमूल तरुवर डाल न पाती।
निभर फुल्लिल्ल पेखु बिआती ॥१॥

---

१२ शिवपूजन सहाय, हिन्दी साहित्य और बिहार।
१३ राहुल सांकृत्यायन, दोहा कोश, भूमिका, पृ० १७; लेखक मैथिली साहित्यक आदिकाल, परिशिष्ट, पृ० ११७-१२४

भणइ विनयश्री नोखो तरुवर ।
फुल्लेए करुणा फलइ अणुत्तर ॥
करुणा मोर्दे सएलवि तोसए ।
फल संपत्तिएँ से भव नासए ॥२॥
से चिन्तामणि जे जइ सबासए ।
से फल मेलए नहि ए सांसए ।
वरगुरु भत्तिएँ चित्त पवोही ।
तहि फल लेहु अणुत्तर बोही ॥३॥
गेल्लिअहुँ गिरिसिहर रि जातें ।
तहि झंपाबिल्लि कलिके अन्ते ॥४॥
हल कि करमि सहिएँ एकेल्लि ।
बिसरे राउ लेल्लइ पेल्ली ।
तहि झंपइ ट्ठेल्लि हेरुअ मेले ।
भणइ विनयश्री वरगुरु-बएणे ।
नाह न मेल्लअ रे गमणे ॥५॥

सरह तत्त्व केँ मूलरहित तथा विनयश्री निमू`ल तरुवर कहलनि अछि। करुणाक फूल फुलाएब एवं अनुत्तरक फल फरबो तँ सरहेक कथनक रूपान्तर थिक। गिरि शिखर मे गेल्लिअहुँक सरहक गीत "ऊँचा-ऊँचा पावत" मे संकेत भेटैछ। सरह या सिद्ध परम्पराक ई पद्य थिक। विनयश्रीक भाषा १२म शताब्दीक उत्तरार्द्धक भाषा थिक जे अवहट्ठ भेलहुँ आधुनिक मैथिली दिश मोड़ लेलक।

सरहक एवं आन-आन अवहट्ठ कृति मे भूतकालक निमित्त इल प्रत्ययक प्रयोग नहि पाओल जाइछ। जतए ओकर प्रयोग देखल जाइछ ओ पश्चातक लिखल हस्तलेख मे लेखक द्वारा कएल गेल परिवर्त्तनक निमित्त अछि। किन्तु एतए विनयश्रीक स्वत: अपनहि हस्तलेख मे फुल्लिल्ल, गेल्लिअहुँ एवं झंपाविल्ल सन इल-प्रत्ययान्त शब्द उपस्थित अछि जकर प्रयोग अहुखन मैथिली मे होइत अछि।

प्राकृतक काल मे व्यञ्जनक स्वर मे जे परिवर्त्तन भेल ओ अवहट्ठ कालहु मे ओहिना रहल तथा तरुवरक स्थान मे तरुअरे सरहक दोहाकोश मे पाओल जाइछ। किन्तु विनयश्री तरुवर लिखि कए अवहट्ठक चरम विकारयुक्त व्यञ्जनक स्थान मे स्वरक परम्परा केँ छोड़ि तत्सम रूपक दिश फिरलाह। एतबेक नहि अपन नामहुँ मे ओ एहि बातक अनुसरण करैत छथि। अवहट्ठक नियमानुसार हुनका अपन नाम 'विनअसिरि' लिखबाक चाहैत छलनि किन्तु ओ ओहि

स्थान मे शुद्ध तत्सम रूप विनयश्री के॰ प्रयोग कए मैथिलीक अग्रिम प्रारूप के॰ निर्धारित कएलनि।

अवहट्ठ भाषाक दोहा एवं चौपाईक मध्य 'सावयधम्म दोहा' एवं 'पाहुड दोहा'क स्थान बड़ विशिष्ट अछि। दोहा एवं चौपाइक प्रचलनक परम्पराक प्रसंग मे यद्यपि किछु कहब कठिन थिक किन्तु एकर इतिहास बड़ प्राचीन अछि। बौद्ध सिद्धलोकनि सर्वप्रथम अपन साधना पद्धति, जगत, जीव तथा परमतत्व संबन्धी विचार एवं अनुभूति के॰ लोकभाषा मे निर्मित चर्यापद एवं दोहाक माध्यम सँ व्यक्त कएलनि। दोहाक प्रयोगक सभ सँ प्राचीन रूप कालिदासक विक्रमोर्वशीय मे प्राप्त होइछ। जेना श्लोक लौकिक संस्कृतक तथा गाथा प्राकृतक प्रतीक भेल तहिना दोहा अपभ्रंश एवं अवहट्ठ साहित्यक प्रतीक भेल। माइल्लधवल नामक कवि 'दव्व सहाव पयास' (द्रव्य स्वभाव प्रकाश) नामक ग्रन्थ के॰ प्रथम तँ दोहाबंध अर्थात् अपभ्रंश मे लिखलनि किन्तु जखन लोक हुनकर उपहास करए लागल, सम्भवतः एहि हेतु जे अपभ्रष्ट भाषा मे ग्रन्थ लिखलनि, तँ पश्चात ओ पुनः गाहाबंध (प्राकृत) मे ग्रन्थ लिखलनि। अतः स्पष्टे दोहाबंधक अर्थ अपभ्रंश या अवहट्ठ और गाहाबंधक अर्थ प्राकृत थिक। माइल्लधवल कहैत छथि :—

दव्वसहावपयासं दोहयबंधेण आसि जँ दिट्ठं।<br>
तं गाहाबंधेणय रइयं माइल्ल धवलेण॥

—जैन साहित्य का इतिहास पृ० १६८

ई सहज छन्द कोना और कहिया सँ प्रयुक्त होमय लागल यद्यपि ई कहब कठिन थिक तथापि कालिदासक विक्रमोर्वशीयक निम्नलिखित दोहा छन्द अपभ्रंश भाषहि मे निबद्ध अछि :—

मइँ जाणि अँ मिहलोयणी, णिसचरु कोई हरेइ।<br>
जाबण णव जलि सामल, धारा घरु बरसेइ॥

—विक्रमोर्वशीय, चतुर्थ अंक

दोहा अवहट्ठक प्रिय छन्द थिक। सातम शताब्दीक पश्चात भारतीय साहित्य मे ओकर दिग्दर्शन होइछ। सरह, काण्ह एवं तिल्लोपादक उपदेशक माध्यम दोहे छल जनिकर सम्बन्ध पूर्वाञ्चल सँ छल।

सावयधम्म दोहा हीरालाल जैन द्वारा सम्पादित दशम शताब्दीक जैन श्रावक लोकनिक धर्म ओ आचारक ग्रन्थ थिक जे देवसेनक रचना मानल जाइछ। ई ग्रन्थ धार्मिक उपदेश एवं सुक्तिक दृष्टि सँ तँ महत्वपूर्ण अछिए संगहि भाषाक दृष्टिएँ सेहो

बड़ महत्वक अछि। जैन भंडारक सूची सभ मे एहि भाषाक ग्रन्थ प्रायः "मागधी भाषाक" नाम सँ दर्ज कएल गेल अछि किन्तु एकर भाषा ने तँ मागधी थिक आ ने आने-आन शौरसेनी आदि प्राचीन प्राकृत। एहि ग्रन्थक भाषा ओहि युगक प्रचलित देशी भाषाक पूर्वक रूप थिक जे अवहट्ठ नाम सँ प्रख्यात छल।

दशम-एगारह शताब्दी मे इएह भाषा समस्त उत्तर भारत मे प्रचलित तँ छल किन्तु एहि मे देशगत भेद छलैक। ई ग्रन्थ मालवा प्रान्त मे रचल गेल। अतएव एहि ग्रन्थक भाषा यद्यपि पूर्वी अवहट्ठ थिक तथापि पश्चिमी अपभ्रंशक प्रभाव परिलक्षित तँ होइछ जेना कि विद्यापतिक कीर्त्तिलताक ञ, श और ष वर्ण तथा प्र, द्र आदि संयुक्ताक्षरक एहि मे अभाव पाओल जाइछ। किन्तु एहि ग्रन्थक अधिकांश शब्द अगाह, अज्जु, अप्पण, अपत्त, आउ, कह, घाअ, घिय, चउरट्ठ, ढ़िल्ल, थिर, पसरइ, मारइ, सरिस, हक्कार इत्यादि आधुनिक मैथिलीक शब्द थिक। सावयधम्म दोहाक पदक नमूना एवंक्रमक अछि :—

दुज्जणु सुहियउ होउ जगि सुयणु पयासिउ जेण।
अमिउ विसें वासरु तमिण जिम मरगउ कच्चेण॥

## पाहुड दोहा

मुनिराम सिंह विरचित एवं हीरा लाल जैन द्वारा सम्पादित पाहुड दोहा दशम शताब्दीक उपदेशात्मक ग्रन्थ थिक। एहि ग्रन्थक नामक संग जे दोहा शब्द संयुक्त अछि ओ छन्दक बोधक थिक। जैन लोकनि धार्मिक सिद्धान्त-संग्रह कें पाहुड कहैत छलाह। पाहुडक संस्कृत रूपान्तर उपहार थिक।

पाहुड दोहाक उद्देश्य आत्मसंयम सँ अछि। एहि ग्रन्थक मे मन कें करहा (करभ, ऊँट), देह कें देवालय, कुटी तथा आत्मा कें शिव और इंद्रिवृति कें शक्ति कहल गेल अछि।

एहि ग्रन्थक भाषा सेहो अवहट्ठे थिक तथा ग्रन्थक अधिकांश शब्द—अच्छ, अक्खर, अछोप, अवस्स, गोर, घिअ, चर, थिर, मित्त, हर इत्यादि आधुनिक मैथिलीक शब्द थिक। एहि ग्रन्थक पद एहि तरहक अछि :—

अप्पायत्तउ जं जि सुहु तेण जि करि संतोसु।
परसुहु वढ़ चिंततहं हियइ ण फिट्टइ सोसु॥

दोहा एवं चौपाईक अतिरिक्त सिद्ध लोकनि गीत रचना कएलनि। ओहि गीतक संग ओ लोकनि भिन्न-भिन्न रागक नाम सेहो लिखलनि जाहि सँ बुझि पड़ैछ

जे राग रागिनीक परिपाटी ईसाक आठमे शताब्दी मे मिथिला मे देशी भाषा मध्य प्रचलित भए गेल छल।

वस्तुतः मिथिलाक जीवन मे संगीत केँ बड़ विशिष्ट स्थान अछि। महाराज नान्यदेव (१०९०-११३३ ई०) देशी राग ओ रागिनी केँ जनप्रिय बनौलनि। हुनक ग्रन्थ 'सरस्वती हृदयालंकारहार' जकरा ओ मिथिलाक राज्य प्राप्तिक उपरान्त निर्माण कएल, संगीतक अपूर्व ग्रन्थ मानल जाइछ।[१४] तत्पश्चात जयदेव (११००-१२०० ई०) प्रख्यात गीतगोविन्दक कर्त्ता मिथिलाक संगीत केँ नितान्त प्रभावित कएल।

गीतगोविन्दक रचयिता जयदेवक पिताक नाम श्रीभोजदेव, माताक राधा देवी या रामा देवी तथा स्त्रीक नाम पद्मावती छल।[१५] हुनक वृत्तिग्राम किंदु विल्व छल।[१६] श्रीयुत् राखाल दास बनर्जी अपन ग्रन्थ "दी पालाज आफ बंगाल" मे केँदुली ग्राम केँ "बंगालक वीर भूमि प्रांत मे" मानैत छथि। एहि प्रसंग मे हमर कहब अछि जे मैथिल ब्राह्मणक बेलौंचे एक मूलग्राम थिक। सम्भवतः ई मूल किंदु विल्वहि सँ निस्सृत भेल हो। चाहे जे किछु हो जयदेवक वासस्थान बंगाल, मिथिला या उत्कल रहौक गीतगोविन्दक प्रभाव मिथिला पर तेहेन ने पड़ल जे अद्यावधि लोक सखवारक दरवारी दासक मूहेँ गीतगोविन्द सुनबाक निमित्त सतत् उत्कण्ठित रहैछ। एतबेक नहि गीतगोविन्दक प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यापतिक गीत पर पाओल जाइछ तथा शंकर मिश्र प्रभृति कतिपय विद्वान एहि ग्रन्थ पर टीका लिखलनि। रतिपति भगत नामक एक मैथिल कर्ण कायस्थ तँ एहि ग्रन्थ केँ मैथिली मे अनुवादो कएलनि।[१७]

जयदेव बङ्गाधिपति महाराज लक्ष्मण सेनक एक वारी कवि छलाह। हुनकर समकालीन कवि गोवर्धन धोयी, श्रुतधर, शरण तथा उमापतिधर छलाह जनिकर संग पञ्चम कवि जयदेव केँ मिलाए लक्ष्मण सेनक पञ्चरत्नी सभा विक्रमादित्यक नवरत्न सँ मण्डित राजसभा सँ कतहु अधिक ऐतिहासिक सत्यताक निमित्त प्रतिस्पर्धा करैत छल जाहि मे सँ अधिकांश सभासद् मैथिल छलाह। अतएव गीतगोविन्दक कर्त्ता जयदेव या तँ मैथिल छलाह या हुनक सम्बन्ध मिथिला सँ बड़ घनिष्ट रहला सँ हुनकर गीत समग्र मिथिला मे बड़ प्रेम सँ गाओल जाए लागल।

---

१४ आन्ध्र हि० सो० प०, भाग १

१५ गीतगोविन्द, श्लोक ११ सर्ग १२

१६ किंदु विल्वो जयदेव कुलवृत्ति ग्रामः, शंकर मिश्रक रसमंजरी टीका।

१७ आचार्य परमानन्द शास्त्री द्वारा प्रकाशित।

गीतगोविन्दक दुई गोट पद्य "सिख आदि ग्रन्थ" मे उद्धृत अछि। एहि मे सँ एक गोट तँ राग गुजरीक और दोसर राग मरूक नाम सँ सन्निहित अछि। एहि गीत कें सिख गुरू लोकनि प्रायः सोलहम शताब्दी मे उद्धृत कएलनि।[१८]

सोलहम शताब्दी मे जयदेव उत्तर भारतक प्रख्यात वैष्णव संत और कवि मानल जाइत छलाह। हुनकर गीतक भाव अन्त्यानुप्रासक संग संस्कृत काव्य मे प्रचलित मध्य-यमकक प्रयोग अवहट्ठ रूपान्तर सँ परिगृहीत कएल गेल अछि जे बारहम शताब्दी मे पूर्वांचल मे प्रचलित छल।

डा० पीसेल[१९], बी. सी. मजुमदार[२०] तथा डा० सुनीतिकुमार चटर्जीक[२१] बिचार अछि जे गीतगोविन्दक गीत प्रारम्भ में या तँ प्राकृत मे या पश्चिमी अपभ्रंश जे पूर्वी देश मे प्रचलित छल अर्थात् अवहट्ठ या पुरान बंगला मे रचित छल जकरा पश्चात् संस्कृत मे रूपान्तर कएल गेल। डा० सुनीतिकुमार चटर्जीक अनुसार प्राकृत पैंगलमक पृष्ट ३२४,५७०,५७६,५८१ तथा ५८६ मे उल्लिखित अवहट्ठक पद स्वभावतः जयदेवक गीतगोविन्दक गीत सँ पूर्णतः मिलैत अछि[२२]। डा० चटर्जीक मत थिक जे जयदेव जे सहजिया वैष्णव संत छलाह अवश्ये देशी भाषा में अपन गीतक रचना कएलनि जकरा सोलहम शताब्दी मे जखन पुनः वैष्णव धर्मक बंगाल और उड़ीसा मे पुनर्प्रचार भेल तँ ओहि गीत सभ कें संस्कृतक रूप देल गेल।[२३]

डा० सुनीतिकुमार चटर्जीक मत जे जयदेव देशी भाषा में अपन गीतक रचना कएलनि आनो-आन सूत्र सँ पुष्ट होइछ किन्तु ओ सहजिया वैष्णव संत छलाह ई समीचीन नहि बुझि पड़ैछ।

जयदेव परकीया रतिक ने तँ पक्षपातीये छलाह आ ने ओहि मे हुनका आस्थे छलनि जे साधारणतः बौद्ध सिद्धक तान्त्रिक साधना द्वारा प्रभावित छल। ओ कृष्ण कें साक्षात् ब्रह्म और राधा कें हुनकर माया शक्ति मानि हुनका लोकनिक प्रणयलीला कें मायोपहित ब्रह्मक सनातन लीलाक रूप मे वर्णन कएलनि अछि जे 'एकोऽहं बहुस्यां प्रजायेय' अर्थात् आत्म-सिद्धिक भावनाक हेतुयें भेल। सनातन संगीत ओम् सँ सतत प्रवहमान होइत क्रमबद्ध सांसारिक नृत्य सँ हुनकर अन्तःकरण उद्वेलित होइत रहैत

१८ ओरिजिन एण्ड डेवलपमेन्ट आफ दि बंगाली लैंग्वेज, भाग १, पृ० १२४-१२५

१९ ग्रामाटिक डर प्राकृत सप्रचेन

२० इन्ट्रोडक्सन टू दि बंगाली ट्रान्सलेसन आफ दि गीतगोविन्द

२१ ओतहि, पृ० १२४-१२५

२२ ओतहि, पृ० १२६

२३ ओतहि।

छलनि जनिकर मन वृन्दावन, नेत्र कालिन्दी और आनन्दाश्रु कालिन्दीक पवित्र जल-धारा छल। जयदेवक कृष्ण यद्यपि वेणुवादक छथि किन्तु ओकर मादक ध्वनि सुनि ने तँ स्वतः राधा आ ने कोनो आन गोपी अपन पति और गृहकार्य कें छोड़ि उताहुले होइत छथि।

जयदेव श्रृंगारिक कवि थिकाह जे आने कविसन "यदि हरिस्मरणे सरसं मनः" वाक्य मे "सम्भोग–श्रृंगार" कें प्रधान रस मानलनि अछि किन्तु एकरा ओ सत्यम्, शिवं और सौदंरम् बुझैत छथि जे सृष्टि-प्रक्रियाक आधार थिक। गीतगोविन्दक निम्नलिखित श्लोकक :—

गणपति गुणग्रामं भामं भ्रमादपि नेहते
बहति च परीतोषं दोषं विमुञ्चति दूरतः।
युवतिषु बलत्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां विना
पुनरपि मनो वामं कामं करोति करोमि किम् ॥

सम्बन्ध नारदभक्तिसूत्र मे वर्णित दशाभाव मे प्रथम भाव गुणमहात्मा शक्ति सँ अछि। नारदभक्ति सूत्र मे वर्णित दशाभाव मे रूपाशक्ति, पूजाशक्ति जकर सम्बन्ध गीतगोविन्दक "हरिरिति हरिरिति जपति सकामम्" आदि श्लोक सँ अछि, स्मरणशक्ति, कान्ताशक्ति, आत्मनिवेदना शक्ति जकर सम्बन्ध "प्रतिपदमिदमपि निगदति माधव तव चरणे पतिताऽहम्" आदि श्लोक सँ अछि, तन्मयाशक्तिक सम्बन्ध—"भावनया त्वयि लीना"; "मुहुरवलोकित मण्डन लीला"; "मधुरिपुरहमिति भावनशीला" आदि श्लोक सँ अछि तथा परमविरहाशक्ति आदि शक्ति वर्णित अछि।

जयदेवक अध्यात्मवादक प्रसंग मे माखनलाल मुखर्जी गोपाल-तापनी उपनिषदक[२४] उल्लेख करैत जयदेवक गीतगोविन्द कें एहि मे वर्णित दार्शनिक तथ्य सँ प्रभावित मानलनि अछि। गोपाल-तापनी उपनिषदक पाँचम परिच्छेदक एकगोट श्लोक एवंक्रमक अछि :—

पूर्व्वं यत्र समंत्वया रतिपतेरासादिताः सिद्धय-
स्तस्मिन्नेव निकुञ्जमन्मथमहातीर्थे पुनर्माधवः।
ध्यायंस्त्वामनिशं जपन्नपितवैवालापमन्त्रावलीं
भूयस्त्वत्कुचकुम्भ निर्भरपरीरम्भामृतं वाञ्छति ॥

उपर्युक्त श्लोक मे तथा गीतगोविन्द मे वर्णित तीर्थक जेना कि मन्मथमहातीर्थं; मन्त्रक जेना कि आलापमन्त्रावली तथा अमृतत्वक प्रसंगक जे 'सोऽमृतो भवति' रूप मे एवं परीरम्भामृतत्व वाक्य मे समान अर्थं एवं भावना कें प्रकट करैत अछि। वस्तुतः

२४ जर्नल आॅफ दि डिपार्टमेन्ट आफ लेटर्स, कलकत्ता युनिवर्सिटी, अंक २८, पृ० १-१७

जयदेव निर्भय एवं निर्विकार भए कामतत्व के धार्मिक तथ्यक संग सुनियोजित कएलनि जे "तस्यां लग्नसमाधि"; "कुसुम विशिखशरतल्पमनल्पविलासकलाकमनीयम्"; "व्रतमिव तव परीरम्भसुखाय करोति कुसुमशयनीयम्" तथा "कुम्भराज, अन्योऽपि सुखैषी व्रतमाचरति" आदि वाक्य सँ पुष्ट होइछ।

जयदेव भागवत तथा हरिवंशक प्रभाव सँ सर्वदा स्वतंत्र और स्वच्छन्द छथि। भागवत शरत्कथाश्रित अछि और गीत-गोविन्द वसंतक; भागवत मे पूर्णिमा रजनीक वर्णन अछि और गीतगोविन्द मे वर्षा-अभिसारक तथा भागवतक कृष्ण नेना या किशोर छथि जे योगमायाक द्वारा सतत् ओहि रूप कें ग्रहण कएलनि किन्तु जयदेवक कृष्ण किशोर छथि। जयदेव भागवतक योगमाया उपाख्यान सँ अपन कृति कें मुक्त राखलनि तथा कृष्ण और राधाकें ब्रह्म और मायाक रूप मे परिकल्पित कएल जकरा ने तँ परकीया रति सँ या सहजिया दर्शन सँ कोनहुटा सम्बन्ध छलैक पश्चात भने वैष्णव संत लोकनि एहि तथ्य कें अपनानुसारें गढ़ने होथि। जे किछु जयदेवक प्रसंगक तथ्य रहल हो गीतगोविन्द मे कृष्ण और राधाक प्रणय प्रसंगक पद अछि जे नाचि-नाचि कें गाओल जाइछ। कृष्ण लीलाक पद जे नाचि-नाचि गाओल जाइत छल कहिया सँ प्रारम्भ भेल यद्यपि एकर कोनो ठोस प्रमाण उपलब्ध नहि अछि किन्तु दशम-एगारहम शताब्दी मे मात्रिक छन्द मे कृष्ण लीलाक गीत गएबाक प्रथा प्रचलित छल। ११म शताब्दीक क्षेमेन्द्र अपन ग्रन्थ "दशावतारवर्णन" मे लिखलनि अछि जे जखन श्रीकृष्ण मथुरापुरी चल गेलाह तँ वियोगक्षिप्त हृदया गोपी गोदावरीक तट पर श्रीकृष्णक गुण-गान करए लगलीह—

> गोविन्दस्य गतस्य कंसनगरीं व्याप्ता वियोगाग्निना।
> स्निग्धश्यामल कूल लीनहरिणे गोदावरी गह्वरे॥
> रोमन्थस्थितगोगणैः परिचयाद्यस्कर्णमाकर्णितम्।
> गुप्तं गोकुल पल्लवे गुण गणं गोप्यः सरागा जगुः॥[२५]

गोपीक गीत कें कवि मात्रिक छन्द मे लिखलनि। अनुमान कएल जा सकैछ जे क्षेमेन्द्र एवंक्रमक गीत कें कतहु सुनने होयताह जकरा जो अपन ग्रन्थ मे अनुकरण कएलनि जे एवंक्रमक अछि—

> ललितविलासकलासुखखेलन ललनालोभनशोभनयौवन मानितनवमदने।
> अलिकुलकोकिलकुवलयकज्जल कालकलिन्दसुताविगलज्जल कालियकुलदमने॥
> केशकिशोरमहासुरमारण दारुणगोकुलदुरितविदारण गोवर्धनधरणे।
> कस्य न नयनयुगं रतिसंज्ञे मज्जति मनसिजतरलतरंगे वररमणीरमणे॥

---

२५ आचार्य डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, पृ० १०९

उपर्युक्त गीत सँ अनुमान होइछ जे एगारहम-बारहम शताब्दी मे दशावतार-वर्णन परम आवश्यक छल जे प्रधानत: ओहि युग मे प्रचलित लोकभाषाक माध्यम सँ लोक मध्य प्रचार कएल जाइत छल । जयदेवक गीतगोविन्दक सम्बन्ध ओहि क्रमक अछि ।

गीतगोविन्द मे कवि अपन प्रतिपाद्य विषय केँ बारह सर्ग एवं चौबीस प्रबन्ध मे विभाजित कए विविध प्रकारक गेय पद केँ प्रस्तुत कएलनि अछि । गीत कृष्ण, राधा एवं हुनकर सखी द्वारा गाओल जाइछ । गीतक उपक्रम विभिन्न वृत्त मे ग्रथित पद्य द्वारा प्रस्तुत कएल जाइछ तथा अन्त मे कृष्ण केँ सम्बोधित कविकृत विनय पाओल जाइछ ।

गीतगोविन्दक शैली, रसानुरूप श्रुति-स्वारस्यक संसाधान मे ओकर कला अप्रतिभ अछि । वर्णनीय वस्तु बहुत सरल अछि । कृष्ण अपन प्रियतमा राधा केँ बिसरि अन्य गोपीक संग रास-लीला मे मग्न तथा राधा विरह में उत्कण्ठिता भए रस-विह्वला भए गेलीह । सहचरीक प्रयासक फलस्वरूप कृष्ण पुनि राधाक सम्पर्क मे अएलाह । अन्ततः पुनि संयोगक आमोद प्रमोदक संग काव्यक उपसंहार होइछ ।

भारतीय प्रणयक स्वरूप थिक—अभिलाष, मान, प्राप्त्याशा, निर्वेद; अमर्ष, पर्युपासन एवं फलागम जाहि मे प्रकृति सौंदर्य सतत् मानव भावनाक संग ओत-प्रोत रहैछ । जयदेव वासन्ती ज्योत्सनाक महिमाक गीत गौलनि अछि । हुनकर गीत कुञ्ज मे स्थित तरुवृन्दक अन्तराल मे प्रस्फुटित रसाभाव केँ उद्दीपित, सुरभि मलयमारुत तथा सर्वविजेता मदनक महिमा सँ सम्बद्ध पाओल जाइछ । पक्षीगण जयदेवक गीतक मनोहर विषय थिक । भारतीय सौन्दर्यंक सर्वाङ्ग स्वरूप केँ अङ्कित करैत कविप्रवर वात्स्यायनीय कामकलाक विविध अङ्ग केँ गीत रूप मे परिणत कए मधुवर्षण कएल ।

मानवाक थिक जे जयदेवक कृति मे कृष्ण केँ भगवत्स्वरूपक चित्रण नहिए सन अछि । यत्र-तत्र केवल संकेतेटा पाओल जाइछ जे ओ सर्वशक्तिमान प्रभु थिकाह जे सांसारिक यातनाक मुक्ति मे सामर्थ्य सँ सम्पन्न छथि तथा ई मात्र कल्पना थिक जे प्रभुक ब्रजाङ्गनाक संग लीला मे जीवात्मक मोहजाल मे बन्धन तथा विविध द्वन्द्व मे उलझन एवं परिणाम मे राधाक मिलन परंब्रह्मक संग परमैक्यक भावनाक प्रतीति थिक । जयदेवक विचारें कृष्णकथा एक वास्तविक तथ्य थिक जाहि मे जन सामान्यक कोन कथा स्वयं ओहो विश्वास करैत छथि ।

कृष्णक राधाक संग प्रणय तथा क्षणिक प्रणयभङ्ग तँ मानवीय व्यवहारक प्रति-बिम्ब मात्र थिक । जँ कृष्ण एवं राधाक लीला मे जनसामान्यक धारणाक अनुसार कोनो अन्तर्निहित रहस्य सन्निहित अछि तँ ओ कवियहुक अन्तःस्थल मे ओतवेक अछि ।

गीतगोविन्दक शैली, मनोहर पद्यक प्रवाह एवं सरस भाव प्रकृत रस-भाव के अभिव्यक्त करैत श्रोता एवं पाठकक हृदय मे रसोद्रेकक उद्बोधन मे सर्वथा सिद्ध अछि। गीतक संग अनुवद्ध नितान्त मधुर ध्रुवपद समग्र गीत कें एक सूत्र मे ग्रथित कए विविध भावक श्रृंखला कें क्रमबद्ध रखैत अछि।

नामसमेतं कृतसङ्केतं वादयते मृदुवेणुम्,
बहु मनुतेऽतनु ते तनु सङ्गत पवनचलितमपि रेणुम्।
धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली ॥१॥
पतति पतत्रे विचलति पत्रे शङ्कित-भवदुपयानम्।
रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पन्थानम्।
धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली ॥२॥

राधा कृष्ण कें ताकि कें हारि गेलीह किन्तु ओ हुनका कुंज मे नहि प्राप्त कए सकलीह। हुनकर धैर्यक लोप भए गेल। हुनक सखी कृष्णक ओतए जाए हुनका कुंज मे राधा सँ भेटक निमित्त अनुनय कएल।

पश्यति दिशि दिशि रहसि भवन्तं
तदधर-मधुर-मधूनि पिवन्तम्।
नाथ ! हरे ! सीदति राधाऽऽवासगृहे ॥ ॥
त्वदभिसरणरभसेन बलन्ती
पतति पदानि कियन्ति चलन्ती।
नाथ ! हरे ! सीदति राधाऽऽवासगृहे ॥२॥
निहित विशद-विस-किसलय-वलया
जीवति परमिह तव रतिकलया
नाथ ! हरे ! सीदति राधाऽऽवास गृहे ॥३॥
त्वरितमुपैति न कथमभिसारम्
हरिरिति वदति सखीमनुवारम्।
नाथ ! हरे ! सीदति राधाऽऽवास गृहे ॥४॥
श्लिष्यति चुम्बति जलधरकल्पम्
हरिरुपगत इति तिमिरमनल्पम्।
नाथ ! हरे ! सीदति राधाऽऽवास गृहे ॥५॥

प्रणय-वासनाक तृप्ति-रूप फलक प्राप्तिए तँ समाप्ति थिक। एवंक्रमक भावना यथार्थतः तान्त्रिक थिक जाहि मे चरम साधनाक सिद्धि दिव्य तत्वक संग जीवक सारूप्यक आवाप्ति अछि। ई भावना संस्कृत कविताक अभिरामताक परिधान मे विलीन भए गीतगोविन्द मे उपस्थित भेल।

अवहट्ठ मे रचित समृद्धशील ग्रंथ मे 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' एवं 'संदेश रासक' क स्थान बड़ महत्वपूर्ण अछि।

## उक्तिव्यक्तिप्रकरण

उक्तिव्यक्तिप्रकरण (दामोदर विरचित तथा जिनविजय मुनि द्वारा सम्पादित) मूल ग्रन्थ ५० कारिका मे छल। एहि में सँ २९ कारिकाक विवृति उपलब्ध अछि।

ई ग्रन्थ वाराणसी एवं कनौजक गढ़वाल राजा गोविन्द चन्द्रक (जे १११४-११५५ ई० क मध्य राज्य कएलनि)[२६] राजत्वकाल मे लिखल गेल। एहि ग्रन्थक लिखबाक उद्देश्यक प्रसंगक वाक्य "उक्ति व्यक्ति बुद्धवा बालैरपि संस्कृतं क्रियते"[२७] सँ प्रतीत होइछ जे ई ग्रन्थ नेना लोकनि के संस्कृत सिखेबाक हेतु लिखल गेल छल।

उक्ति व्यक्ति विवृति अर्थात् उक्तिव्यक्तिप्रकरणक स्वोपज्ञ व्याख्या मे लेखक संस्कृत पद्यक अर्थ लोक भाषा मे कएलनि अछि।

लोकव्यवहारक प्रचलित देशभाषा कें संस्कृत व्याकरणक पद्धति सँ केहेन सम्बन्ध छलैक तथा कोना लोकभाषाक लोकरूढ़ उक्ति अर्थात् शब्द प्रयोग द्वारा संस्कृतक व्याकरणक आधारभूत स्थूल ज्ञान प्राप्त कएल जा सकैछ एकर विचार एहि ग्रन्थ में निबद्ध कएल गेल अछि।

एहि ग्रन्थ में प्रयुक्त "उक्ति" शब्दक अर्थ थिक लोकोक्ति अर्थात् लोकव्यवहार में प्रयुक्त भाषा पद्धति। लोकभाषात्मक उक्तिक जे व्यक्ति अर्थात् व्यक्तता अर्थात् स्पष्टीकरण तत्सम्बन्धी विचारक विवेजन एहि ग्रन्थ मे कएल गेल अछि तें एकर नाम भेल उक्तिव्यक्तिप्रकरण।

लोकभाषा में प्रचलित शब्द यद्यपि मूलत: संस्कृत भाषेक शब्द थिक किन्तु स्वरूप मे परिवर्तित भए भ्रष्ट भए गेल। अतएव एहि शब्दक भाषा कें एहि ग्रन्थ में अपभ्रष्ट[२८] कहल गेल अछि। अपभ्रष्ट शब्द कें प्रयोग मे संस्कृत व्याकरणक निबद्ध क्रिया, कारक, कर्म आदि उक्ति-प्रकारक संग केहेन सम्बन्ध रहलैक अछि ओकर स्वरूपक प्रदर्शन एहि ग्रन्थ मे सन्निहित अछि।

एहि मे संस्कृतक जाहि व्याकरण ग्रन्थक अवलम्बन कएल गेल अछि ओकर सम्बन्ध सर्ववर्मक कातन्त्र व्याकरण सँ अछि। स्यादि, त्यादि आदि विभक्तिक नाम; वर्त्तमान, सप्तमी, पञ्चमी, ह्यस्तनी, अद्यतनी, इत्यादि क्रियाक नाम तथा शतृङ्, आनश, निष्ठा आदि कृत्प्रत्ययनाम सँ स्पष्ट ज्ञात होइछ जे ग्रन्थकार कातन्त्रव्याकरणोक्त संज्ञाक व्यवहार कएलनि अछि जकर अभाव ओहि युगक वाराणसी मे छल। ओहि युगक मगध, विदेह एवं बंग आदि पूर्वी भारतीय क्षेत्र मे तँ प्राचीन कालहि सँ कातन्त्र

---

२६ उक्ति व्यक्ति प्रकरण, भूमिका पृ० ७३

२७ ओतहि, कारिका २४, पद्य २

२८ देशे देशे लोको वक्ति गिरा भ्रष्टायापया किंचित्। सा तत्रैवहि संस्कृत रचिता वाच्य त्वमायाति—कारिका ५-६, श्लोक ६

व्याकरणक विशेष प्रचार छल[२९] किन्तु वाराणसी मे छल वा नहि एकर कोनो ठोस प्रमाण उपलब्ध नहि अछि।

डा० एस०के० चटर्जी[३०] एहि ग्रन्थक लिपि केँ पूर्वी देवनागरी लिपि तथा भाषा केँ मध्यदेशी एवं पूर्वी क्षेत्रीय भाषा मानैत छथि। एहि प्रसंगक कारिका ६, पृ० ७ मे वर्णित व्याकरणक प्रसंगक शब्द जेना चुचुकार—चुट चुटकारयति, हकार–अकारयति दचाव—वाचयति, भीड़-भीड़ति, कारिका १० पृ० ८-६ में वर्णित शब्द विशर—विस्मरति, मान—मानते, सोअ—शेते, सुण—शृणोति, किएसि—अकरात, भोजन करिह, पाक करिह, यजिह-तजिह, बहु देवस जीवउ देवदत्त, धन पुत्र सपुन होउ, इत्यादि, कारिका १७ पृ० ११ में वर्णित पढ़त अछि, यान्त अछि, मारि मार खा, लै लै पला, देखि देखि तुस इत्यादि, कारिका २३-२४ पृ० १५ मे वर्णित जाहां आछ ताहां वांछ, जाहां वैस ताहां दीस, भातु रान्धा इत्यादि, कारिका २९ पृ० २१ मे वर्णित शब्द जेना—'केई ए ईहां बाम्हण थापे, अहो पितरहो को तुम्ह तारिह तथा पृष्ठ २६—५२ मे वर्णित सभटा लोकोक्तिक प्रत्यक्ष सम्बन्ध पूर्वी भारतीय भाषाक लोकोक्ति सँ अछि जकरा कर मैथिलीक पूर्ण एवं प्रत्यक्ष प्रभाव पाओल जाइछ।

ग्रन्थकर्ता पण्डितप्रवर दामोदरक प्रसंगक यथार्थ ज्ञानक अभाव अछि। ग्रन्थ मे वर्णित कनौज, प्रयाग तथा वाराणसीक प्रसंगक उल्लेख सँ हिनका एहि मे सँ कोनहु एक स्थानक संग सम्बन्ध स्थापित करब अनुचित थिक। ग्रन्थक पृष्ठ ५१ मे वर्णित वाक्य—'गअवाल तिथि आतिन्ह जुड'—'गयापालस्तीर्थयात्रिकान् जुडति' सँ प्रतीत होइछ जे ओ कतहु गयाक गयबाल ब्राह्मण ने होथि जनिकर कर्मभूमि काशी छल हो। एकर अतिरिक्त उक्तिव्यक्तिप्रकरणक भाषा केँ कोशली वा अवधी मानब युक्तिसंगत नहि थिक किएक तँ एकर विवृतिक भाषा पूर्णतः पूर्वी भारतीय भाषा सँ साम्य अछि। अतएव दामोदरक सम्बन्ध अवश्ये गया सँ छल तथा हिनक विरचित ग्रन्थक भाषा मागधी अपभ्रंशक परवर्ती रूप अवहट्ठ थिक जे पश्चात् पूर्वी भारतीय भाषाक उद्भव-स्रोत भेल।

## सन्देश रासक

सन्देशरासक कवि अद्दहमाण—अब्दुर्रहमानक लिखल एक गोट खण्ड काव्य थिक। एहि ग्रन्थ मे तीन प्रक्रम एवं २२३ पद्य अछि। प्रक्रम कथा-प्रवाहक गतिक सूचक थिक। पहिल प्रक्रम प्रस्तावनाक रूप मे अछि। दोसर प्रक्रम सँ वास्तविक कथा प्रारम्भ होइछ तथा तेसर प्रक्रम मे षडऋतुक वर्णन अछि।

---

२९ भूमिका, पृ० ८

३० ओतहि, पृ० २ (अंग्रेजी भूमिका)

**कथानक** :—ग्रन्थक आरम्भ मंगलाचरण सँ होइछ। आत्मपरिचय तथा पूर्व-कालक कवि लोकनिक स्मरणक अनन्तर ग्रन्थकार आत्मविनय प्रदर्शित करैत ग्रन्थकें लिखबाक औचित्य कें प्रदर्शित करैत छथि। एहि प्रसंगक एवंक्रमक विचार—

> अहवा णा इत्थ दोसो जइ उइयं ससहरेण णिसिसमए।
> ता किं णहु जोइज्जइ भुअणे रयणीसु जोइक्खं—१-८.

अर्थात् रात्रि मे चन्द्रमा कें उदय भेला पर गृह मे की दीप नहि जड़ाओल जाइछ ? तथा पुन :—

> जा सस्स कव्वसत्ती सा तेण अलज्जिरेण भणियब्वा।
> जइ चउमुहे ण भणियं ता सेसामा भणिज्जंतु—१-११.

अर्थात् जनिका जतवेक काव्य शक्ति छनि हुनका ओहि रूपें निःसंकोच भए काव्य-रचना करबाक चाही। यदि चतुर्मुख ब्रह्मा चारू वेदक रचना कएलनि तँ अन्य कवि की अपन कवित्व कें छोड़ि दिए ?

ग्रन्थ लिखबाक उद्देश्यक प्रसंग मे अपन विचार कें स्पष्ट करैत लोककविक सहज स्वभावानुसारे कविक एहि तरहक उक्ति अछि :—

> राहु रहइ बुहह कुकुवित्त रेसु,
> अबुहत्तणि अवुहह णहु पवेसु।
> जिण मुक्ख ण पडिय मज्झयार,
> तिह पुरउ पटिब्बउ सब्बबार। १-२१.

अर्थात् पण्डित कें कुकविता सँ सम्बन्ध नहि रहैछ तथा अवोध कें अवोधत्वक कारणे कविता मे प्रवेशे ने रहैछ। अतएव जे ने तँ पण्डित अछि आ ने मूर्ख अछि अर्थात् जे मध्यम कोटिक छथि हुनका समक्ष एहि ग्रन्थ कें सर्वदा पढ़बाक चाही।

दोसर प्रक्रम मे कथा सन्निहित अछि। विजयनगरक एक गोट सुन्दरि पति-प्रवास सँ दुखी, दीन और विरह-व्याकुला अछि। एहि अभ्यन्तर ओ एक गोट पथिक के देखैत अछि जे खंभात जाइत छल। विरहिनीक पतियो ओतहि गेल अछि। फलस्वरूप ओ ओहि पथिकक द्वारा अपन पति कें संदेश पठबैत अछि जे भिन्न-भिन्न छन्द मे पाओल जाइछ। एहि प्रसंगमे षडऋतुक वर्णन ग्रीष्म सँ आरम्भ कए वर्षा, शरत्, हेमन्त, शिशिर तथा वसंत धरिक वर्णन कएल गेल अछि।

यद्यपि ऋतुवर्णनक मूल उद्देश्य विरहिनीक अपार विरह-व्यथा कें व्यंजित करब थिक किन्तु एहि निमित्त बाह्य प्रकृतिक यथेष्ट सहयोग लेल गेल अछि। एहि कारणें ऋतु वर्णनक अन्तर्गत कवि कें प्रकृति-वर्णनक अवसर सेहो प्राप्त भेलनि अछि। प्रकृतिक क्रिया-कलाप नायिकाक विरह-वेदनाक पृष्ठभूमि थिक।

संदेश रासक मे उत्कृष्ट काव्य कौशल एवं निश्छल लोकतत्वक विलक्षण संयोग अछि। एहि काव्य मे प्रयुक्त भाषाक रूप अवहट्ठक रूप थिक। एसि प्रसंगक कविक एवंक्रमक उक्ति बड़ महत्वपूर्ण अछि—

पुव्वच्छेयाण णमो सुकईण य सद्दसत्थकुसलाण।
तियलोए सुच्छंदं जेहिं कयं जेहि णिद्दिट्ठं ॥५॥
अवहट्टय सक्कय-पाइयंमि पेसाइयंमि भासाए।
लक्खण छंदाहरणे सुकइत्तं भूसियं जेहिं य॥६॥

भाषा मे भावानुकूल शब्द-योजना अछि जकर सुन्दर उदाहरण निम्नलिखित छन्द मे उपलब्ध अछि—

झिज्झउँ पहिय जलिहि झिज्झंतिहि,
खिज्जउँ खज्जोग्गहिं खज्जंतिहि।
सारस सरसु रसहिँ किं सारसि,
महचिर जिण्ण युक्खु किं सारसि। ३।१६५

अर्थात् शरत् ऋतु मे जलक धार क्षीण भए गेल तथा विरहिनी सेहो क्षीण भए गेल। चमकैत खद्योत सँ ओ खिन्न अछि। सारस सरस शब्द करैत अछि। अतएव विरहिनी सारसी सँ आग्रह करैत अछि जे ओ ओकर चिरजीर्ण दुखक स्मरण किएक करबैत अछि?

संदेश रासकक भाषाक प्रसंग मे विद्वान एकमत छथि जे ई अवहट्ठक रचना थिक किन्तु श्री हरिवंश कोछड़क विचार[३१] जे ओ रहइ, मोड़इ, उत्तावलि, छुड़वि खिसिय, फुडवि, बोलावियउ, चडाइयछ, ढक्क, सीसम, आमान्य, भीड़, मन्नाइ, पढ़िय आदि शब्द केँ पंजाबी शब्दक आभास मानैत छथि से पूर्णतः भ्रामक थिक। ई सभटा शब्द मैथिलीक शब्द थिक जकर प्रत्यक्ष प्रभाव अवहट्ठ पर छल।

एकर अतिरिक्त संदेश रासक मे वर्णित परसर्गक शब्द मे सरिसु, सउ, लग्गि, तणि इत्यादि शब्द; सर्वनाम मे मइ, मह, अम्हिहि, तुहु, तुअ, तिणि-तेण, ताहि इत्यादि शब्द; मध्यम पुरुषक तुहु, तुअ, तुह; सम्बन्धवाचक सर्वनामक जु, जं, जिण, जिणि, जसु, जासु; प्रश्नवाचक सर्वनामक कवणु, कसु, कह इत्यादि शब्द; कृयार्थक संज्ञाक अणह, अजउ, अणु तथा अण शब्द तथा लघु स्वर केँ गुरु बनेवाक प्रणाली इत्यादिक सम्बन्ध मैथिली सँ अछि। अतएव संदेशरासक वर्त्तमान मैथिलीक पूर्ववर्त्तीरूप थिक जकर सम्बन्ध अवहट्ठ सँ अछि।

संदेशरासकक कर्ताक प्रसंग मे यद्यपि भिन्न-भिन्न मत अछि किन्तु हुनक सम्बन्ध पूर्वांचल सँ अवश्य छल तथा ओहि युगक पूर्वी भाषा सँ ओ अवश्ये अवगत छलाह।

---

३१ अपभ्रंश साहित्य, पृ० २५८, पादटिप्पणी—१

एहि सम्बन्ध मे संदेशरासकक निम्नलिखित पद्य ग्रन्थकारक परिचयक पद्य थिक जे बड़ महत्वक अछि :—

पच्चाएसि पहुओ पुव्वपसिद्धो य मिच्छ देसोत्थि
तह विसए संभुओ आरद्दो मीर सेणस्स

टिप्पणी मे एहि वाक्यक अर्थ एहि प्रकारक अछि :—'प्रतीच्यां पश्चिमदिशि प्रभूतः पूर्व प्रसिद्धो म्लेच्छनामा देशोऽस्ति। तत्र विषये आरद्दो देशीत्वात् तन्तुवायो मीर-सेनाख्य: सम्भूतः उत्पन्न:।

अर्थात् पश्चिम दिशा मे जे पूर्व मे बहुत प्रसिद्ध अछि ओतए मीरसेन नामक आरद्द उत्पन्न भेल। एहि वाक्य सँ प्रतीत होइछ जे संदेशरासकक कर्त्ता अब्दुर्रहमान मीरसेनक सुपुत्र छलाह जे पूर्व धर्मक परित्याग कए मुसलमानी धर्मकें स्वीकार कएलनि। मीरसेन धर्मांतरित भेलाक उपरान्त पूर्व देश मे आबि गेल छलाह जतए अब्दुर्रहमानक जन्म भेलनि।[३२] ओ जातिक तंतुवाय अर्थात् जोलहा छलाह। एहि प्रसंगक एक गोट शब्द अछि आरद्द। आरद्द शब्दक अर्थक प्रसंग मे कतहु देशी शब्द और कतहु प्रवृद्ध, सतृष्ण तथा गृह मे आयल अर्थ कएल गेल अछि। एकर एक गोट अर्थ जोलहा सेहो कएल गेल अछि।[३३] किन्तु आरद्द शब्दक तात्पर्य अढ़तिया शब्द सँ अछि जे मैथिलीक शब्द थिक। अढ़तिया ओकरा कहल जाइछ जे अपन माल-असबाब कें अपना माँथ पर लए क्रय-विक्रय करैत अछि। जोलहाक कार्य सेहो तेहने अछि। फलतः मीरसेन जे आरद्द अर्थात् अढ़तिया छलाह ओहि युग मे आरद्द नामे प्रख्यात भेला सँ संदेशरासक मे एहि नामें उल्लिखित भेलाह जे जातिक भने जोलहा वा कोइरी रहथु।

यद्यपि अब्दुर्रहमानक समयक कोनो यथार्थ पता नहि अछि किन्तु संदेशरासकक भाषा तथा एहि मे वर्णित आन-आन ऐतिहासिक तथ्य सँ एहि प्रसंग में पूर्ण प्रकाश पड़ैछ। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ग्रन्थकारक समय ईसाक एगारहम शताब्दी मानलनि अछि[३४] जे समीचीन प्रतीत होइछ।

एवक्रमें आधुनिक पूर्वी भारतीय भाषाक पूर्वक रूप सँ संयुक्त, मध्यकालीन छन्दशास्त्रक कतिपय विलक्षण छन्द में रचित भेला सँ अवहट्ठक इतिहास मे संदेश-रासकक स्थान बड़ विशिष्ट अछि।

मैथिलीक पद-रचयिता में गणपति ठाकुरक नाम सेहो पाओल जाइछ। गणपति महाकवि विद्यापतिक पिता छलाह। ओ मिथिलाक राजा गणेश्वरक सभापंडित

---

३२ संदेशरासक, प्रस्तावना, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ० १३

३३ ओतहि, पृ० ११

३४ राहुल सांकृत्यायन, हिन्दी काव्य-धारा, पृ० २९२

छलाह। हुनक रचल संस्कृतक 'कृत्य-चिन्तामणि' उपलब्ध अछि। निम्न पद गणश्वरक रचल मानल जाइछ—

मधुकर विमल पर रावे।
जनिकर मधुर मधुर रस पावे॥
पवन परस कर दल तर दूरे।
जनि धरि कोमल अधर अधारे॥
रमण जगत कत फूले।
एहन रस रभस नहि भेट धूले॥
सरस सुधारस बस रस मूले।
रसल बसल मधुपति करथि कलोले॥
सुन पति गनपति कवि भाने।
रसल बसल जन पुनु धरथि धेआने॥[३५]

पदरचनाक परिपाटी मिथिला से सतत् अक्षुण्ण रहल। एहिक्रम मे मिथिलाक ओइनवार वंशी राजा कीर्त्तिसिंहक सभापण्डित दामोदर मिश्रहुक नाम लेल जाइछ। पण्डित दामोदर मिश्र "वाणीभूषण" नामक एक छन्द-ग्रन्थक रचयिता थिकाह। हुनक रचल मैथिलीक पद निम्न रूपक अछि—

रति मुखि समुख न करु अतिमान।
हसि कए दए मधुर मधुदान॥
आरति न करह रतिसुखबाध।
एहि अवसर न गुनिअ अपराध॥
हठ न उचित अति अलपहुँ दोस।
सगरिओ रइनि गमओलह रोस॥
गुनमति भए न करिअ अज्ञान।
अरुण उगल आव होएत विहान॥
सुनु सुवदनि दामोदर भान।
एकर समादार होएत निदान॥[३६]

उपर्युक्त पद शृंगारिक भाव सँ ओत-प्रोत तँ अछिए संगहि एहि मे नायक-नायिकाक मान प्रसंगक बड़ मनोरञ्जक वर्णन कएल गेल अछि।

विद्यापतिक पूर्वक मैथिलीक रचयिता मे अमृतकरक नाम सेहो अबैत अछि। अमृतकर वा अमिअकर यद्यपि विद्यापतिक समकालीन छलाह तथापि हम हुनकर नाम विद्यापतिक पूर्वक रचयिता मे एहि हेतु राखल अछि जे ओहि समय तक हुनक गणना

३५ शिवपूजन सहाय, हिन्दी साहित्य और बिहार, पृ० ३६
३६ बदरीनाथ झा, मैथिली गीत रत्नावली, पृ० ३

प्रौढ़ व्यक्तिक रूप मे मानल जाइत छल । सम्भवतः अमृतकर विद्यापति सँ वयस मे पैघ छलाह तथा हुनकर सम्बन्ध यद्यपि अनुश्रुति में राजा शिवसिंहक प्रधानमंत्रीक रूप मे अछि किन्तु हुनक सम्बन्ध शिवसिंहक पूर्वक मिथिलाक राजाक संग प्रायः सेहो छलनि । फलतः विद्यापति हुनकर प्रसंग मे एवंक्रमें उल्लेख करैत छथि[३७]—

नीति निपुण गुण नाह, अंक मे आगर ।
कोष-काव्य-व्याकरण, अधिक अधिकारक सागर ॥
सबकर कर सम्मान सबहु सो नेह बढ़ाबिअ ।
विप्रदीन अतिदुखो सबहुँ का विपत्ति छोड़ाबिअ ॥
कायस्थ माँह सुरसिद्ध भउ, चन्द्र तुलाइब शशिधर ।
'कविकंठहार' कल उच्चरइ, अमिअ बरसइ अमिअकर ॥

अमृतकरक पिताक नाम प्रीतिकर उपनाम चन्द्रकर छलनि । हुनकर पितामह सुयंकर क्षत्रियकुल भूषण हरिसिंह देवक मंत्री छलथिन । हुनक पूर्वज श्रीधर दास सेहो महाराज नान्यदेवक मंत्री छलाह । अमृतकर कायस्थक बलाइन वंश से उत्पन्न महाराज शिवसिंहक प्रधान मंत्री छलाह ।

अमृतकरक मैथिली में रचित एक पद 'रागतरंगणी' तथा दुइ गोट पद विद्यापति-पदावलीक नेपाली-पोथी तथा रामभद्रपुर-पोथी मे पाओल जाइछ—

( १ )

दह दिस भमि लोचन आव ।
तेसरि दोसरि कतहु न पाव ॥ १ ॥
लगहि अछलि धनि विहि हरि लेल ।
ललित लदा सागरिका भेलि ॥ २ ॥
हरि-हरि विरहे छुइल बछराज ।
वदन मलान कओन करु आज ॥ ३ ॥
चन्दन शीतल तोहरि काए ।
तखने न भेलि ए हृदय मोहि लाए ॥ ४ ॥
ते अधिकाइलि मानस-आधि ।
धक धक कर मदनानल धाधि ॥ ५ ॥

३७ हरिनन्दन ठाकुर, महाकवि विद्यापति (प्रथम सं०), पृ० १२

बान्द गरसिल्ले आन्त न दिशइ ।
सएल बिएक रूअ पडिहारइ ।।
साब गरासिउ आध राती ।
न ताहि इन्दी विसअ बिआती ।।
कइसो आपु व गहणा भइल्ला ।
सम गरासें अथवण गइल्ला ।। ध्रु० ।।

( २ )

सुरत समापि सुतल वरनागर पानि पयोधर आपी ।
कनकसम्भु जनि पूजि पुजारें धएल सरोरुहें झापी ।
सखी हे मालति केलि विलासे ।
मालति रनिअतिताजि अगोरलि पुनुरतिरङ्गक आसे
वदन मेराए धएलन्हि मुखमण्डल कमले मिलल जनि चन्दा
भमर चकोर दुअओ अलसाएल पीबि अमिअ मकरन्दा
भनइ अमिअकर सुनु मधुरापति रामचरित अपारे ।
राजा सिवसिंह रूपनराएन लखिमा देइ कण्ठहारे ।।

एहि गीतक भाव एवं भाषा सँ प्रतीत होइछ जे अमृतकरक रचल कोनो ने कोनो ग्रन्थ अवश्य होयत जकर अनुसंधान होयब आवश्यक अछि ।

अवहट्ठ भाषाक ग्रन्थमध्य "वज्जालग्ग"क स्थान सेहो महत्वपूर्ण अछि ।

**वज्जालग्ग** :—वज्जालग्ग (व्रज्यालग्न) कोनो एक गोट कविक रचना नहि भए कतिपय कविक सुभाषित संग्रह थिक जकरा श्वेताम्बर मुनि जयवल्लभ संकलित कएलनि अछि ।

वज्जाक अर्थ थिक पद्धति । एके प्रस्ताव मे एकहि विषय सँ सम्बद्ध कतिपय गाथा भेला सँ एहि ग्रन्थ केँ "वज्जालग्ग" कहल गेल ।

एहि कृति मे ७९५ गाथा अछि । किन्तु एहि गाथाक लेखकक सम्बन्ध मे किछु ज्ञात नहि अछि । ई गाथा काव्य, सज्जन, दुर्जन, दैव, दारिद्र्य, गज, सिंह, भ्रमर, सुरत, प्रेम, प्रवसित, सती, असती, ज्योतिषी, लेखक, वैद्य, धार्मिक, यांत्रिक, वेश्या, खनक, जरा, वडवानल आदि ९५ प्रकरण मे विभक्त अछि । एहि ग्रन्थ मे अनेक स्थल पर अवहट्ठक प्रभाव अछि । हेमचन्द्र तथा संदेशरासकक कर्त्ता अब्दुर्रहमान आदिक गाथाक समावेश सेहो एहि ग्रन्थ मे उपलब्ध अछि ।

प्रारम्भ मे प्राकृत काव्यक प्रसंग मे कहल गेल अछि—

ललिए महुरक्खरए जुवईयणवल्लहे ससिंगारे ।
सन्ते पाइयकव्वे को सक्कइ सक्कयं पढ़िउं ।।

अर्थात् ललित मधुर वाक्य सँ युक्त युवतीक प्रिय, शृंगार युक्त प्राकृत काव्य केँ रहैत संस्कृत केँ के पढ़त ?

धीर पुरुषक सम्बन्ध मे एहि ग्रन्थ मे वर्णित वाक्य एवंक्रमक अछि—

बे मग्गा भुवणयले माणिणि ! माणुन्नयाण परिसाणं ।
अहवा पावंति सिरिं अहव भमन्ता समप्पंति ।।

अर्थात् हे मानिनि ! एहि भूमंडल मे मानी पुरुषक हेतु केवल दुई गोट मार्ग अछि या तँ ओ श्री केँ प्राप्त करैत अछि वा भ्रमण करैत अन्त केँ प्राप्त करैत अछि ।

दीनक प्रसंगक एक गोट वाक्य एहि तरहेँ उल्लिखित अछि—

तिणतूलं पिहु लहुयं दीणं दइवेण निम्मियं भुवणे ।
वाएण किं न नीयं अप्पाणं पत्थण भएण ।।

अर्थात् देव तृण और तूरो सँ लघु जाहि दीन केँ बनौलनि अछि ओकरा पवन उड़ा केँ एहि हेतु नहि लए गेल जे ओकरा भय छलैक जे दीन ओकरहु सँ किछु माँगि ने लैक ।

पतिक प्रवासगमनक अवसर पर नायिकाक चिन्ताक प्रसंगक वाक्य अछि—

कल्लं किर खरहियओ पवसिहिइ पिओ त्ति सुव्वइ जणम्मि ।
तह वड्ढ भयवइनिसे ! जह से कल्लं चिय न होइ ।।

अर्थात्, सुनैत छी जे काल्हि ओ कठोर प्रवास केँ जेताह । हे भगवती राति ! अहाँ एतेक पैघ भए जाऊ जे कहियो फेर काल्हि नहि होए ।

एवंक्रमेँ एहि ग्रन्थक ७९४ तथा ७९५ पद्यक वाक्य जे अन्तिम पद्य थिक एहि तरहेँ उल्लिखित अछि—

इय कइयणेहि रहए वज्जालए सयललोयभिट्ठिए ।
पत्थावे गोट्ठिट्ठिय-इच्छियगाहा पढिज्जन्ति ।। ७९४ ।।
एवं वज्जालग्गं ठाणं गहिऊण पढ़इ जो को वि ।
निय ठाणे पत्थावे गुरुत्तणं लहइ सो पुरुषो ।।७९५ ।।

उपयुक्त विवेचना सँ ज्ञातव्य थिक जे आठम शताब्दी सँ लए चौदहम शताब्दी धरि अवहट्ठ अपन विकासक पथ मे अग्रसर भए क्षेत्रीय भाषाक सहज स्वरूप केँ निर्धारित करैत परम उन्नतिक अवस्था केँ प्राप्त कएलक तथा पश्चात् विद्यापतिक युग मे आबि अपन गीतक माधुरी सँ जाहि रूपेँ जनवाणी केँ विमुग्ध कएलक ओ साहित्यकलाक अद्भुत कौशलक प्रतीक भेल ।

अवहट्ठ मे ग्रन्थ एवं गीत-रचनाक प्रचार एवं प्रसार नेपाल मे अत्यन्त प्राचीन कालहि सँ भेल। एहि प्रसंग मे नेपालतरायक थारू जातिक संस्कृति एवं भाषाक अध्ययन बड़ महत्वपूर्ण अछि। किरातजनकृतिक अनुसार सम्पूर्ण मिथिला और नेपाल किरात संस्कृतिक केन्द्र छल। प्राचीन किरात वंशावलीक आधार पर श्री प्रेमबहादुर लिम्बू थारूदनुवार केँ थाङदाव अर्थात् किरातक संतान मानैत छथि तथा डा० कमला सांकृत्यायनक अनुसार थारूजाति किरात जातिक (मोनख्मेर) वंशज थिकाह जकर मगर, तमांग, यारवा, राई, तिम्व आदि प्रमुख शाखा थिक।[३८]

हिमालयतरायक थारू जातिक इतिहास यद्यपि बड़ रहस्यपूर्ण अछि किन्तु नेपालक लिच्छवी तथा वैशालीक लिच्छवी जातिक सम्बन्ध बड़ घनिष्ठ छल एवं प्रायः थारू जातिक सामाजिक रीति-रेवाज तथा गणतन्त्रात्मक संगठन आदि सँ प्रतीत होइछ जे ई जाति कतहु लिच्छवीक संतान ने होथि। जे किछु हिनका लोकनिक इतिहास रहल हो हिनकर भाषा मैथिली थिक तथा हिनका लोकनिक मध्य प्रचलित चाँचर, तन्त्र-मन्त्र एवं संस्कार गीत मे मैथिलीक दिग्दर्शन होइत अछि।

चाँचर थारू जातिक प्रिय गीत थिक जे बौद्ध सिद्ध लोकनिक चर्चरीक अवशिष्ट रूप थिक। श्री हर्षक रत्नावली तथा बाणभट्टक पुस्तक मे चर्चरीक गीतक संकेत प्राप्त होइछ। बारहम शताब्दीक सोमप्रभ वसन्तकाल मे चर्चरी गीतक चर्चा कएलनि अछि। कबीरदासक बीजक मे चाँचर नामक एक अध्याय अछि जकरा मे पुरान चर्चरीक अवशेष पाओल जाइछ। अपभ्रंश मे जिनदत्त सूरिक लिखल चर्चरी प्राप्त भेल अछि। हुनक टीकाकार जिनपाल उपाध्यायक अनुसार एहि भाषाक विविध गीत केँ नाचि-नाचि केँ गाओल जाइत छल। प्रायः सिद्धक चर्या शब्द सँ चर्चरीक उद्‌भव भेल। वज्रयानक गुप्त पूजा केँ चर्या, अनुष्ठान या आचरण कहल जाइत छल जकर भ्रष्ट नेवारीरूप चचा थिक जकरा सँ थारूक चाँचर शब्दक निर्माण भेल। चाँचरक गीत भाषाक निबद्ध गीत थिक जकरा नृत्य एवं छन्द अलंकृत कएलक अछि। चाँचरक कतिपय भेद अछि। कतहु तँ वर्षाक समय मे और कतहु वृत्त-नृत्य मे ई गाओल जाइत अछि। थारू चाँचर गीत मे विशेषतः श्रृंगारक अभिव्यक्ति पाओल जाइछः—

( १ )

ओही पार रसिया बसिया बजबल
अही पार तारोनी नहाबे, लला हो।

---

३८ नेपाली लोक साहित्य-हि० सा० बृहद् इतिहास भाग १६; प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', थारू लोकगीत, भूमिका, पृ० २४

बसिया सबद सुनि हिया मोरा साले
चित नाहीं राहे मोरा थीर, लला हो।
साँझ पड़ीये गेल जाड़ लगीये गेल
घरे घरे धुनिआँ रमाये, लला हो।
लया लया कमिनी मनेमन झुरमाये
कखनी होयेत घड़ी साँझे, लला हो।

पुनः

( २ )

बैगन रोपल आँती रे पाँती
करैल रोपल बीटा चारि।
वोही त करैल सामरि गेल तोड़ऽ
कारि नगिया सामरि डाँसल।
ससुरा कहैया दवा रे बूटी
भैंसुरा कहैया ओझा रे गुनी।
सामी कहैया आनब सफेरिया
सामरि के विख झाड़त।
ससुरा कौबलैया छागर-पाठी
भैंसुरा कौबलैया जोड़ी से भैंसा।
सामी कौबलैया सोना चिरैयाँ
गोसैं के चढ़ायेब ये।
ससुरा कनैया रुइयाँ-फुंइयाँ
भैंसुरा कनैया हाँक फोड़ो।
हुनी प्रभु सामी कनैया पछली-
पिरितिया मोरा टूटल ये।

तन्त्र-मंत्र मिथिला, नेपाल, बंगाल तथा असमक जन-जीवन मे बड़ प्रख्यात अछि। मिथिलाक लोकजीवन मे ओझा-गुनी, डायन नेपालतराय मे धाइम तथा पहाड़ मे झंक्रीक बड़ प्रधानता अछि। ई० सनक बारहम शताब्दीक ग्रन्थ "डाकार्णव" एहि प्रसंग मे बड़ महत्वपूर्ण अछि। डाकक अर्थ होइछ विद्वान और अर्णवक अर्थ होइछ सागर अर्थात् डाकार्णवक तात्पर्य ज्ञान-सागर सँ अछि।

एहि ग्रन्थक रचना स्थल नेपाल थिक। यद्यपि ग्रंथक लिपि कें नेवारी तथा भाषा कें पूर्वी बंगला कहल गेल अछि किन्तु लिपि प्राचीन मिथिलाक्षर और भाषा

विशुद्ध अवहट्ठ थिक । ग्रंथ मे वर्णित शब्द—अजान, अक्खर, आसन, उतारअ, काज, चक्कु, डाइन, बोहन, भखइअ, मडड़, सत्त, साधइ, हओ, हुअ, इत्यादि पञ्चानवे प्रतिशत शब्द विशुद्ध मैथिलीक शब्द थिक तथा विषयवस्तु तंत्र-मंत्र और यंत्र सँ सम्बद्ध अछि जकर नमूना एवंक्रमक अछि:—

द्यो मन्तो घम्म सहाओ वपइ सअल सहाअ।
मआरो वहइ रूद । वहण बीओ रवि जुत्तओ
मअरूद सहओ मन्त । प-चउत्थ थिअउ
सर ऊआर सन्नइ भजइ नठअ ओ ।
त मन्तो नासइ सत्तु पुणो पस चउत्थु महउ खरई ॥

यद्यपि तन्त्र-मन्त्रक इतिहास भारतीय संस्कृति मे बड़ प्राचीन अछि किन्तु डाइन शब्द तिब्बती डाकिनी शब्दक परिवर्तित रूप थिक तथा एहि पर वज्रयानक पूर्ण प्रभाव परिलक्षित होइछ जे लामावाद सँ पूर्ण प्रभावित अछि । अतएव नेपालक झाँकी एकदिश मधेसक 'गुरुनि' केँ आमंत्रित करैत अछि तँ दोसर दिश हिमालयक 'गुरुनि' केँ—

तिमि मधेशमा बस्ने गुरुनी हे
तिमि हिमालय वस्ने गुरुनी हे
छाँगा छहरा लहरा पहरा
डुली हिंडने मेरिनी गुरू हे ॥[३९]

तरायक लोकजीवन मे रहस्यात्मक तन्त्र-मन्त्र, गीतकथा तथा प्रतीकात्मक तान्त्रिक यन्त्र आदिक बड़ प्राबल्य पाओल जाइछ । थारूक गीत मे मुख्यतः रिरिय, सुब्वई, विच्छू, भुरै, भैरव आदिक गीत बड़ प्रख्यात अछि । विच्छू धाइमक गीत मे धाइमक सुन्दर रूप पर मालिन केँ मोहित हेवाक उल्लेख अछि[४०] :—

पनमा जे खइल्हें बिछू धामी दंतवा रंगावल
घरे मुखे भये गेल पयाम ।
एक कोस येले बिछू धामी येले दुइ कोस
रसते कोस मालिन फुलवारी ।
फुलवा लोढ़िते छेलो कुसुमी मलिनियाँ
पड़ी गेले धामी मुख दीठ ।

---

३९ प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', थारू लोकगीत, पृ० ७३
४० ओतहि, पृ० ८७

सीमा के चकरिया मुठिया से डाँर
केसिया में भोम्हरा गुंजार।
कौने तोरा आहे धामी साँच बलु ढाढ़लो
कौने रूप गढ़लो सोनार।
दस दिन दस मास आमा कोख बसल्हौं
सुरती दिहल भगवान।
एक मन होच्छे विछू धामी तोरे संग जैयो
औरे मन होच्छे घुरी जाँव।
केकरा विरोगे मलिनियाँ मोरा संग जइव्हें
केकरा ममोते घुरी घर जइव्हें।
सौतिन विरोगे हे धामी तोरा संग ज्येवो
सामी के ममोतें घुरी घर ज्येवो।
मोरा संग जइब्हें मलिनियाँ बड़ दुख पइव्हें
रउदे-बतासे देह होतो भामर।

धाइम तथा देवगीत मे मालिन कें चरितार्थं करवाक परम्परा अनिवार्यं रूप मे छल। गुह्य साधना मे मालिन मुद्राक रूप मे प्रयुक्त होइत छलीह जे पश्चात् काल योगीक संग योगिनी आदि विभिन्न नाम कें ग्रहण कएलनि। मालिन कामकला प्रवीण होइत छलीह तथा सामन्तवादी संस्कृति मे प्रसाधनक कार्यं मालिनहिक द्वारा होइत छल।

मन्त्र-तन्त्र मे मन्त्रक अन्त मे देवी-देवताक दोहाइ देवाक परिपाटी अछि जकर नमूना एवंक्रमक अछि[४१] :—

अंगबन्ही

भार बान्हौं भरनी, सिर बान्हौं जोगिन
कंठ चढ़िके वइठे हलुमान।
जहाँ लागे तहाँ-ताजिल, तहाँ लागे बज्रकेवार
बज्रे बान्हौं दसो दुआर।
बान्ह रे बान्ह बन्जर समान
बान्ह संड़िया सुत्ता बजरे बान्ह।

४१ ओतहि, पृ० १६१-६२

हैंड़ लगाइ भिरीकके बान्ह ।
काजर रे कजरौटी बान्ह
तइयो ने टूटे मोरे बान्ह ।
तर सिल्ला उपर सिल्ला
ठोकि दे बज्जर के किल्ला ।

**चाटी मन्त्र**

हाथ चल हथ चलनि चल
चारू चित्र मीन चल ।
पच्छिम मिरीग चल ।
सिया दरसन चल ।
सतालू परबत चल
आठ गुनी नाग चल ।
दस दस राम चल
आरे हुतुक्की चल ।
जहाँ छौ बिख तह चल
नै त बाम से दहिन चल ।
डगर बाँस काटलौं
अकास कमीन चल ।
पतालू नाग चल
चालि चलनि चालि चल ।
तीन कोस पिरथी चल
दसो दिसा नाग चल ।
पतालू बसुक चल ।

वस्तुतः थारू लोकगीत मे मिथिलाक लोकभाषाक विशिष्ट नमूना सन्निहित अछि जे युगयुगान्तर सँ थारू जातिक कलकंठ मे परिव्यास भए मैथिलीक लोक साहित्य केँ सजीव बनौने रहल ।

मिथिला और नेपालक सांस्कृतिक आदान-प्रदान विशेषतः नेपालक मल्ल राजा लोकनिक राजत्वकाल मे बड़ पैघ रूप मे भेल तथा ओहि युग मे अनेक काव्य, नाटक एवं गीतक रचना नेपालक राजदरवार मे भेल ।

# परिनिष्ठ साहित्य

अवहट्ठ साहित्यक प्रथम निर्माता डाक थिकाह। पं० श्री जीवानन्द ठाकुर कतिपय अकाट्य प्रमाणक आधार पर डाक कें मैथिल सिद्ध कएलनि अछि जिनका ओ दशम शताब्दी मध्य मानैत छथि।[1] श्री जीवानन्द ठाकुर जाहि प्राचीन तालपत्र मे अंकित डाकक बचन कें संपादित कएलनि तकर समता विद्यापतिक कीर्तिलताक भाषा सँ होइछ। डाकक जे किछु रचना अद्यावधि उपलब्ध भेल अछि ओहि सभहक आधार संस्कृते थिक, जेना—

नवञी चौठि चौदसि भउषोड़े
षड़िव एकादशि छठिक बिजोड़े।
तिअ अट्ठञि तेरसि भूपूत्ते
सओञि दुइ दोआदशि बाउत्ते
पाचञि पुनिमा दशाञि वेहप्पए
सिद्धियोग एह् मुनिवर जम्पए॥

मूहूर्त्तचिन्तामणिक टीकाक एवंक्रमक वचन—

नन्दा च भद्राच जयाच रिक्ता
पूर्णेति तथ्योऽशुभमध्यशस्ता:
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्यु:

तथा कश्यपसंहिताक—

नन्दा तिथि: शुक्रवारे सौम्येभद्रा कुजेजया।
रिक्तामन्देगुरोर्वारे पूर्णा सिद्धाह्वया तिथि:॥

श्री जीवानन्द ठाकुर एवंक्रमक कतिपय प्रमाणक आधार पर प्रमाणित कएल जे डाकक रचना ज्योतिष शास्त्रक संहिता ओ सैद्धान्तिक ग्रन्थक आधारे पर भेल।

डाकक प्रसंग में चण्डेश्वरक कृत्यचिन्तामणि मे किछु संकेत भेटैछ। एहि ग्रन्थ मे क्षपणक जातक, भृगुसंहिता तथा कपालिक जातकक नामक उल्लेख पाओल जाइछ जकर पद्य एवंक्रमक अछि—

अस्सिन रवि सोमह चित्ती, पूवाषाढ़ महीसुअ युत्ती।
होइ जइछह सरना मङ्गो, सवाती होइ वेहप्पइ अङ्गो॥ —क्षपणक जातक

---

१ श्री जीवानन्द ठाकुर, मैथिल डाक, मैथिली साहित्य परिषद्, दरभंगा, पृ० ३

तथा

खोला कुजा जाहेरि सङ्गा
ता हेरि कोटीन कविवर रङ्गा ।
हा हो सइ इहे वितसा ।
ताहि परणी कनकर विआसा ॥

—भृगुसंहिता

एवं

सङ्गे अंगा अङ्गाचार दशक मूल न हय विचार ।
जे हे से चन्दा से हेम सेहे जान शुभाशुभ सेम ।
एगुण वेगुण तेगुण जाइ एहा अन्त अरि कअगन पाइ ।
एगुण वेगुण तेगुण करिआँ जानह जीवन मरण करिआँ ।

—कपालिक जातक

श्री जीवानन्द ठाकुर उपर्युक्त ग्रन्थक विषय ओ भाषा केँ डाकहिक रचना मानैत छथि ।

डाकक पद मे लोक-जीवन सँ सम्बद्ध प्रायः प्रत्येक तथ्यक समावेश कएल गेल अछि । भारतक मुख्य जीविका खेती थिक । खेतीक निमित्त उचित समय पर वृष्टि होएब नितान्त आवश्यक थिक । वर्षाक प्रसंग मे गृहस्थक अनुभव बड़ विलक्षण अछि । गिरगिट, साँप, बेंग, बकरी आदिक गतिविधि केँ देखि ओ लोकनि वर्षाक अनुमान करैत छथि । सभ सँ आश्चर्यक वस्तु तँ ई थिक जे पूस एवं माघक वायु, मेघ एवं बिजली केँ देखि हुनका लोकनि केँ साओन एवं भादवक वर्षाक अंदाज भए जाइत छलनि । डाकक निम्नलिखित पद—

पूसक अन्हरिआ जतदिन मेह,
साओन सुदि ततदिन जलदेह ।
माघ सुदि जतदिन मे जान,
साओन ततदिन वर्षा मान ।
माघ वदि मे मेघ देखाय,
भादव सुदि तत वर्षा आय ।

पुनि वायुक प्रसंग मे डाक कहैत छथि—

आषाढ़क पछवा सोना बहए,
सीक डोले मही भरए ।

रोहिनि लब्बए मृगशिरा तब्बए,  
आर्द्रा देल भुभुआए ॥  
कहए डाक सुनू सज्जना,  
कुकुरो अन्न नहि खाए।

डाकक रचना मे लोक जीवन सँ सम्बन्धित नक्षत्र, राशि, दिन आदिक चर्चाक संग-संग कोन ग्रहक दशा मे कोन कार्य कएला सँ शुभ होइछ आदिक प्रसंग मे सेहो उल्लिखित अछि। डाकक निम्नलिखित पद—

रविक दशा जँ करी घर,  
घरनी राजा झगड़ा कर।  
सोमक दशा जँ करी घर,  
दूधे पूते भरी घर।  
मंगलक दशा जँ करी घर,  
घोड़ा घोड़ी मनुष मर।

डाकक निम्नलिखित पद मे लोक जीवन सँ सम्बद्ध कटु सत्यक आभासक अनुभव होइछ जे व्यवहारक रूप मे समाज मध्य व्याप्त पाओल जाइछ—

गोड़कट खाट उटकन छाड़,  
नारि कुलच्छनि चाकर चार।  
ई चारू केँ तुरंत परिहरी,  
तुम्बा बान्हि फकीरी करी ॥  
शनि रवि फड़की मंगल खाट,  
ई तीनू ताकए स्वर्गक बाट।  
कपटी मित्र कोशलिआ माय,  
बुड़िबक बेटा टेटा जमाय।  
कहहि डाक चारू परिहरी,  
बुड़िबक सन शशुरो नहि करी ॥  
महतम सौँ भेल बहिया बरी।  
कहथि डाक जे सन्तापहि मरी।

डाकक पद मे प्रकृतिक गतिविधिक सग सामाजिक जीवनक संकेत सेहो भेटैछ—

पछबा सँ उघड़ए मेघ,  
विधवा करए सिगार।

ओ उढ़ड़ए ओ बरिसए,
कहि गेल डाक गुआर ॥

डाकक भाषा विशुद्ध लौकिक भेला सन्ता समस्त उत्तर भारत मे एहि तरहेँ व्याप्त भेल जे हुनक देश-काल निर्णय मे बड़ व्यामोह उत्पन्न भेल । श्रुतिसन हुनक मूलवाणी लोकक कण्ठ मे अत्यन्त प्राचीन काले सँ तँ रहल किन्तु देशकालक व्यवधान सँ स्वभावतः हुनकर भाषा मे अनेक परिवर्त्तन उपस्थित भेल । फलतः जाहि प्रान्त सँ हुनक वचनक संकलन कएल गेल ओकरहि आधार पर ताहि प्रान्तक संकलयिता विद्वान् हुनका तद्देशीय सिद्ध करबाक प्रयास कएल ।

डाकक सम्बन्ध मे अद्यावधि जे किछु अनुसंधान कएल गेल अछि ओहि मे अनुश्रुतिए केँ प्रश्रय देल गेलैक अछि । पण्डित रामनरेश त्रिपाठी द्वारा संकलित तथा हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग सँ १९३१ मे प्रकाशित 'घाघ ओ भड्डरी' नामक पुस्तक मे डाकक वचनक संकलन अछि । एहि ग्रन्थक अधिकांश वचन मे घाघक नाम पाओल जाइछ जे डाकहिक एक अन्य नाम थिक ।

डाक मिथिलाक छलाह, एहि सम्बन्ध मे सभ सँ पुष्ट प्रमाण हुनक रचल पद सँ होइछ जे मैथिली मे अछि ।[२] एकर अतिरिक्त मैथिल निबन्धकार अपन निबन्ध मे डाक केँ प्रमाण रूप मे उद्धृत कएल अछि जनिकर ई परम्परा रहल अछि जे ओ अपन धर्मशास्त्र एवं ज्योतिषक सम्बन्ध मे देशी मान्यता केँ प्रश्रय दैत ओहि वचन केँ प्रमाणक कोटि मे मानैत छथि । किन्तु आन कोनो देशक निबन्धकार हुनका प्रमाणक कोटि मे नहि उल्लेख कएलनि अछि । अतएव डाक मैथिल छलाह तथा हुनकर रचना मैथिलीक समृद्ध साहित्यक प्रथम सोपान थिक ।

मैथिलीक समृद्ध साहित्यक प्रत्यक्ष संकेत शार्ङ्गधर पद्धति मे पाओल जाइछ । शार्ङ्गधर पद्धति शार्ङ्गधर कविक एक सुभाषित संग्रह थिक । एहि मे एक स्थल पर भाषा चित्रक एक विशिष्ट प्रमाण पाओल जाइछ । एहि पदक कर्त्ता श्री कंठ पण्डित थिकाह तथा एहि मे मल्लदेव राजाक वीरताक वर्णन अछि । मल्लदेवक सेनाक वीरगण मारू, काटू कहैत अछि तथा शत्रुक स्त्री अपन पति केँ अहंकार केँ छोड़ि मल्लदेवक शरण जेबाक परामर्श एवंक्रमेँ दैत अछि—

नूनं बादल छाइ खेह पसरी निःश्राण शब्दः खरः
शत्रुं पाडि लुटालि तोडि हिनसौं एवं भणंत्युद्भटाः ।
झूठे गर्वं भरा मघालि सहसा रे कन्त मेरे कहे
कंठे पाग निवेश जाह शरणं श्रीमल्लदेवं विभुम् ॥

---

२ मैथिल डाक, श्री जीवानन्द ठाकुर, पृ० ४

उपर्युक्त अवतरण मे प्रयुक्त 'पसरी', 'हिनस', 'पाग' आदि शब्द विशुद्ध मैथिलीक थिक।

मल्लदेव कर्णाट-कुलक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र छलाह जनिक चर्चा विद्यापति अपन पुरुष-परीक्षा नामक ग्रन्थ मे कएलनि अछि। एहि मल्लदेवक एक गोट गीत श्री शिवपूजन सहाय द्वारा सम्पादित "हिन्दी साहित्य और बिहार" नामक पुस्तकक पृष्ठ १८२ मे वर्णित अछि जे एवंक्रमें पाओल जाइछ—

कुसुमित कानन माँजरि पासे।
मधुलोभें मधुकर धाओल आसे॥
सजनी हिअ मोर झूरे।
पिआ मोर बहु गुने रहल विदूरे॥ ध्रुवं॥
माघ-मास कोकिल रय विरल नादे।
मन बसि मनभर कर अवसादे॥
तन्हि हम पिरिति एक पराने।
से आबे दोसर के राषत ञाने॥
हृदय हार राखल भोरे।
अइसन पिआर मोर गेल छाड़ि रे॥
नृप मलदेव कह सुन ···· ····।

प्राकृतपैंगलम् मैथिली भाषाक एक अन्य महत्वपूर्ण छन्दक ग्रन्थ थिक। इहो एक संकलित ग्रन्थे थिक। संग्रह कर्त्ताक नाम अज्ञात अछि। ग्रन्थ मे मात्रिक छन्दक विवेचना कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थ मे मेवाड़क प्रसिद्ध राजपूत राजा हम्मीरक वीरताक सुन्दर चित्रण कएल गेल अछि। हम्मीरक शासन १३०२ ई०[३] मे प्रारम्भ भेल तथा ओ ६४ वर्ष धरि राज्य कएलनि।

पिंगल छन्दपर विचार विनिमय केनहार एकमात्र छंदशास्त्रक ग्रन्थ थिक। एहि मे यद्यपि वैदिकक संग लौकिक छन्दक विवेचन सेहो भेल अछि किन्तु वैदिक छन्दक कोनो पृथक स्वतंत्र ग्रन्थ नहि उपलब्ध भेला सँ एहि ग्रन्थ कें लोक छठम वेदांग मध्य गणना करैत अछि।

एहि ग्रन्थक कर्त्ता पिंगलाचार्यक समय कीथक अनुसार २०० ई० पूर्वक लगभग मानल जाइछ।[४] परम्परा मे पिंगलाचार्य पौराणिक व्यक्ति तथा शेषनाग सँ अभिन्न मानल जाइछ।

---

३ टॉड कृत राजस्थान

४ ए० बी० कीथ, हिष्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर, पृ० ४१५

अवहट्ठ मे प्रयुक्त छंदक निमित्त सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्राकृतपैङ्गलम् थिक। एहि ग्रन्थ मे दुई गोट शब्द अछि "प्राकृत" और "पिंगल"। प्राकृत सँ ओहि भाषाक बोध होइछ जाहि मे एहि ग्रन्थक मूल पाठ निबद्ध अछि तथा पिंगल शब्द रचयिताक नाम-निर्देशक नहि भए वर्ण्य विषय-परिचायक थिक। अतएव प्राकृतपैङ्गलमक मंतव्य थिक अवहट्ठ मे रचित पिंगल अथवा छन्दशास्त्र विषयक ग्रन्थ जकर सम्बन्ध नाग जाति सँ छल।

पिंगलक छन्दशास्त्रक विवेच्य विषय आठ अध्याय मे विभक्त अछि। एहि ग्रन्थक चौदहटा टीका उपलब्ध अछि। एहि टीकाक अतिरिक्त एहि ग्रन्थ पर 'पिंगलवार्त्तिक' सेहो लिखल गेल।

छन्द-शास्त्रीय विवेचनक प्रसंग मे पिंगलक तेहेन ने प्रख्याति भेल जे पाछाँ ओ मात्र एक व्यक्तिक नाम नहि रहि छन्द-शास्त्रक पर्यायवाची बनि गेल तथा प्राकृत मे जखन लोकप्रचलित छन्दक विवेचनक निमित्त एक बृहत् लक्षण-ग्रन्थक रचना भेल तँ ओकर नामहु 'प्राकृतपैंगलम्' वा 'प्राकृतपिंगलसूत्राणि' पड़ल। हलायुधवृत्ति सहित पिङ्गलच्छन्दः सूत्रमक आरम्भे मे ई उल्लेख अछि जाहि मे पिंगल कें नाग कहल गेल अछि—

श्रीमत् पिङ्गलनागोक्तच्छन्दः शास्त्र महोदधी
वृत्तानि मैक्तिकानीव कानिचिद्विचिनोम्यहम्।[५]

शुक्ल यजुर्वेदक शतपथ ब्राह्मण मे पैंग ऋषिक वर्णन पाओल जाइछ जनिका वंश मे यास्क पैंगीक जन्म भेल। सम्भवतः पिंगलाचार्यंहुक जन्म ओहि वंश मे भेल।[६] खाहे वस्तुस्थिति जे किछु हो ई तँ साधिकार कहल जा सकैछ जे पिंगलक समय बड़ प्राचीन अछि।

पिंगल ग्रन्थ मे मुनि, आचार्य तथा नागक नाम वर्णित अछि। ग्रन्थ मध्य गरुड़ तथा नागक एक मनोरंजक कथा सन्निहित अछि।[७] गरुड़ नाग कें खाय जेबाक धमकी देल किन्तु नाग अपन बुद्धिक द्वारा गरुड़ कें ठकि समुद्र मे जाय अपन रक्षा कएल।

ग्रन्थ यद्यपि कोनो एक व्यक्तिक कृति नहि बुझना जाइछ तथापि ग्रन्थ मध्य १०८ एवं ११५ श्लोक मे हरिब्रह्मक नामक उल्लेख कएल गेल अछि जे मिथिलाक

---

५ पिङ्गलच्छन्दः सूत्रम्, अ० १, श्लोक १
६ वेबर, हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर, पृ० ४६
७ प्राकृतपैंगलम्, चन्द्रमोहन घोष द्वारा संपादित, पृ० २

कर्णाट राजवंशक अन्तिम एवं छठम राजा महाराज हरिसिंह देवक (१२९८-१३२४ ई०) आश्रित कवि छलाह। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल[८] हरिब्रह्म कें प्राकृत पैंगलमक टीकाकार रविकरक पिता मानलनि अछि जे कीर्त्तिसिंहक धर्माधिकारी छलाह।

श्लोक १०८ जे सप्तरत्नाकरक रचयिता महासांधिविग्रहीक पं० चण्डेश्वर ठाकुरक प्रशंसा मे लिखल गेल अछि ग्रन्थक भाग दुई मे वर्णित अछि तथा श्लोक ११५ एबंक्रमक अछि—

पचतालीसह वत्थुआ छंदे छंद विअंभ।
अड्वा कइ पिंगल कहइ चलइण हरिहरबंभ॥

एहि तरहें श्लोक १४५ मे विज्जाहर (विद्याधर)क चर्चा पाओल जाइछ जे एहि क्रमें उल्लिखित अछि—

जहा भअ भंजिअ बंगा भंगु कलिंगा
तेलंगा रणभुक्ति चले,
मरहट्ठा धिट्ठा लग्गिअ कट्ठा
सोरट्ठा भअ पाअ पले।
चंपारण कंपा पब्बअ झंपा
ओत्था ओत्थी जीव हरे,
कासीसर राणा किअउ पआणा
विज्जाहर भण मंति बरे॥

विज्जाहरक (विद्याधर) उपर्युक्त पद एवं कंदर्पीघाट मे वर्णित लाल कविक निम्नलिखित पद जे ओ महाराज नरेन्द्रसिंहक प्रशंसा मे लिखने छथि बड़ साम्य प्रतीत होइछ—

बीजापुर वङ्का और सुरङ्का जित नृप शङ्का जोग भरे।
हूगली कलकत्ता नृप अति सत्ता तेजहि लत्ता फिरत फिरै।
दक्षिण नर नाहा तेज सिलाहा भेजहि वाहा को ठहरे।
ढक्का की रानी फिरहि दिवानी ओ मकमानी नृपहहरे।
डिल्ली सग बग्गी काशी भग्गी बेतिया टग्गी को ठहरे,
दिनन के गति डरत सकल अति मैथिल भूपति को बहरे।

---

८ बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पत्रिका, वर्ष ४, अंक २, पृ० २३

विज्जाहर वा विद्याधर जयचन्द्रक नितान्त प्रवीण एवं विद्यावन्त मंत्री छलाह। प्रबन्ध चिन्तामणि मे विद्याधर कें "सर्वाधिकारभारधुरंधर" एवं "चतुर्दशविद्याधर" कहल गेल अछि। पुरातन-प्रबंध-संग्रह मे हिनक उदारता एवं चतुरताक कतिपय कथा उपलब्ध अछि जाहि मे विद्याधरक निर्भीक चरित्र, उदार हृदय एवं जयचन्द्रक विश्वासपात्रताक वर्णन अछि।

पुरातन-प्रबंध-संग्रह मे वर्णित अछि जे राजा जयचन्द्र कें जखन ज्ञात भेलनि जे परमर्दी 'कोपकालाग्निरुद्र', 'अबंध्यकोपप्रसाद' तथा रायद्रहवोल' आदिक विरुद धारण कएलनि तखन ओ अपन कटक साजि हुनकर राजधानी (कल्याणकटक) कें घेरलनि तथा सालभरि ओ ओतहि रहलाह। परमर्दी अपन मंत्री उमापतिधर सँ कहल जे "कोनो एहेन प्रबन्ध करू जाहि सँ राजा जयचन्द्र अपन सेना कें हटाए लेथि।" तदनुसार उमापतिधर सायंकाल मंत्री विद्याधरक ओतए पहुँचलाह तथा निम्नलिखित सुभाषित हुनका ओतए पठबाओल—

उपकारसमर्थस्य तिष्ठन् कार्यातुरः पुरः।
मूर्त्या यामार्तिमाचष्टे न तां कृपणया गिरा॥

अर्थात् "कार्यार्थी उपकार करबा मे समर्थ व्यक्तिक समक्ष पहुँचि जतेक ओ अपन सूरति सँ कहैछ ओतेक ओ अपन कृपण वाणी सँ नहि कहि सकैछ।"

ई श्लोक विद्याधर कें मर्माहत कए देल। ओहि समय राजा जयचन्द्र सुतल छलाह। पलंग सहित उठबाय विद्याधर राजा जयचन्द्र कें किला सँ बाहर पाँच कोस दूर रखबा देल। निद्रा भंग भेला पर राजा अपन समक्ष मंत्री विद्याधर कें देखि एहि प्रसंग मे पूछल। विद्याधर राजा सँ सभ किछु यथार्थ रूप मे कहल। विद्याधरक वाणी कें सूनि राजा अत्यन्त क्रोधित भेलाह। राजाक क्रोध कें देखि विद्याधर नितान्त नम्र भए कहल—"हे राजम्! क्रोध जनु करी। हम ब्राह्मण छी। हमर शरीर कण-वृत्ति सँ बनल अछि। हम जाए रहल छी।" विद्याधरक एहि उक्ति कें सूनि राजा खिन्न भए बजलाह—"हे मंत्री! हम एहि निमित्त अप्रसंन्न नहि छी जे अहाँ ई सभ किएक कएलहुँ। हम तँ एहि हेतु नाराज छी जे अहाँ एहि सुभाषित पर हमर सम्पूर्ण राज्य किएक नहि दए देलिऐक।" परमर्दी कें जखन ई विषय ज्ञात भेलनि तँ ओ ओहि सभ विरुद कें छोड़ि देल। राजा जयचन्द्र हुनक सभ किछु आपस कए देल तथा सेनाक संग अपन गृह प्रत्यागमन कएलनि।[१]

---

१ हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी-साहित्य का आदिकाल, पृ० २८-२९

चंदेल राजाक दानपत्र मे विद्याधरक प्रसँग मे किछु संकेत भटैत अछि। चरखारी दानपत्र मे जे वि० स० १३४६ अर्थात् १२८९ ई०क थिक भारद्वाज गोत्रक दुई गोट ब्राह्मणक नाम—श्रीधर और विद्याधर उल्लिखित अछि। श्रीधर विद्याधरक पौत्र छलाह।[१०] सेम्रा दानपत्र मे महीधर जे श्रीधरक पिता तथा पुत्र महाधरक नाम सेहो पाओल जाइछ।[११] एहि सभ नामक सम्बन्ध अवश्ये विद्याधर सँ अछि जनिकर समय जयचंद्रक[१२] समय सँ सेहो मिलैत अछि।

उपर्युक्त पद ओहि उदार एवं प्रभावशाली मंत्रीक थिक जनिकर मैथिली भाषा मे कविता लिखबे एहि बातक प्रमाण थिक जे ओहू समय काशी-कान्यकुब्ज-दरबार मे मैथिलक प्रवेश छलैक।

एहि ग्रन्थ मे शृंगार, वीर, नीति, राजा एवं देवादिक स्तुति सम्बन्धी भिन्न-भिन्न विषयक पद्य पाओल जाइछ। ग्रन्थ दुइ परिच्छेद मे विभक्त अछि। पहिल परिच्छेद मे मात्रिक छन्दक तथा दोसर परिच्छेद मे वर्णवृत्तक निरूपण कएल गेल अछि। छन्द मे आयल उद्धरण काव्यक दृष्टिएँ नितान्त महत्वक अछि। कवि मालाधार, चन्द्रमाला तथा गीता छन्दक उद्धरण मे वसन्त ऋतुक सुन्दर वर्णन कएलनि अछि—

वहइ मलआणिला विरहिचेउ संतवणा,
रअइ पिक पंचमा विअसु केसु फुल्ला वणा।
तरुण तरु पेल्लिआ मउलु माहवीवल्लिआ,
वितर सहि णेत्तआ सनअ माहवा पत्तआ।

—२-१७६

मलयानिल बहैत अछि। विरहीक चित्त केँ सन्तापित केनहार कोकिल पंचम स्वर मे गबैत अछि। किंशुक विकसित भए गेल। बन फूल फुलाएल। वृक्ष से नव पल्लव आएल तथा माधवी लता मुकलित भए गेल। हे सखि! अपन नेत्र केँ विस्फारित तँ करू। देखू वसन्तक समय आएल अछि।

अमिअकर किरण धरु फुल्लु णव कुसुम वण,
कविअ भइ सर ठवइ काम णिअ धणु धरइ।

---

१० एपिग्राफिया इन्डिका, भा० २०, पृ० १३६
११ ओतहि भा०, ४, पृ० १६५-१६९
१२ डा० उपेन्द्र ठाकुर, हिष्ट्री आफ मिथिला, पृ० २४७

रवइ पिअ समअ णिक कन्त तुअ थिर हिअलु,
गमिअ दिण पुण ण मिलु जहि सहि पिअ णिअलु

—२-१९१

अमृतकर चन्द्रमा किरण केँ धारण करैछ, वन मे नूतन सुमन फुलाएल अछि, क्रोधित भए कामदेव वाण केँ स्थापित कए रहल छथि। कोइलो कुहू-कुहू करैत अछि। समय मनोरम अछि तथा अहाँक प्रिय सेहो स्थिर हृदय छथि। हे सखि! बीतल दिन की पुनि अबैत छैक ? अहाँ अपन प्रियक समक्ष जाउ।

बह फुल्ल केअइ चारु चंपअ चूअमंजरि बंजुला।
सब दीस दीसइ वेसुकाणण पाण वाउल भम्मरा॥
वह पोम्मगंध बिवंध बंधुर मंद-मंद समीरणा।
पियकेलिकोतुकलासलंगिम लग्गिआ तरुणीजणा॥

—२-१९७

केतकी, सुन्दर चम्पक, आम्रमंजरि तथा बंजुल फुलाएल अछि। समस्त दिशा मे किंशुकक वन प्रतीत होइछ। मधुप मकरन्दपानक निमित्त व्यग्र अछि। पद्मक पराग मे भीजल एवं मानिनीक मान भंग मे प्रवीण पवन मन्द-मन्द बहैत अछि तथा तरुणी गण अपन-अपन पतिक संग केलि कौतुक एवं लास्य भंगिमा मे निमग्न छथि।

फुल्लिअ केसु चंप तह पअलिअ मंजरी तेज्जइ चूआ,
दक्खिण वाउ सीउ भइ पवहइ कंप विओइणिहीआ।
केअइ धूलि सब्ब दिस पसरइ पीअर सब्बइ भासे,
आउ वसंत काइ सहि करिअइ कंत ण थक्कइ पासे।

—२-२०३

किंशुक फुलाएल। चम्पक प्रकट भेल। आम अपन मञ्जरि केँ छोड़ि रहल अछि। दक्षिण पवन शीतल भए बहैत अछि। वियोगिनीक हृदय कँपैत अछि। केतकीक सौरभ सभ दिशा मे प्रसारित भए गेल। सभ पदार्थ पीयर प्रतीत होइछ। हे सखि बसंत तँ आएल किन्तु की करू? प्रिय तँ समीप छथिए नहि।

एहि छन्द मे शरत् ऋतुक चित्रण एवंक्रमेँ पाओल जाइछ—

णेत्ताणंदा उग्गे चंदा धवल चमरसम सिअकरविंदा,
उग्गे तारा ते आहारा विअसु कुमुअवण परिमलकंदा॥

भासे कासा सव्वा आसा महुरपवण लहु लहिअ रंता,
हंत्ता सद्द फुल्ला बंधू सरअ समअ सहि हिअअ हरंता ॥

—२-२०५

नेंत्र केँ आनन्दित केनहार धवल चमर सदृश श्वेत आभा सँ युक्त चांद उगि गेल। तेज रश्मि तारागण उदित भए गेल। सौरभ सँ परिपूर्ण कुमुद प्रस्फुटित भए गेल। समग्र दिशा मे काश सुशोभित भए रहल अछि। मधुर पवन मंद-मंद गति मे बहैछ। हंस शब्द करैछ तथा बंधूक पुष्प फुलाएल। हे सखि, शरत् ऋतु हृदय केँ हरैत अछि।

मंजीरा छन्दक उदाहरण उद्धृत करैत वर्षाक चित्रण निम्न प्रकारेँ कएल गेल अछि—

गज्जे मेहा णीलाकारउ सदे मोरउ उच्चा रावा,
ठामा ठामा विज्जू रेहउ पिंगा देहउ किज्जे हारा।
फुल्ला णीवा पीवे भम्मरु दक्खा मारुअ वीअंताए,
हंहो हंजे काहा किज्जउ आओ पाउस कीलंताए ॥

—२-१८१

नील मेघ गरजैत अछि। मयुर गंभीर शब्द करैछ। ठाम-ठाम पीयर शरीर सँ युक्त बिजली सुशोभित भए रहल अछि। मेघ बिजलीक माला धारण कएने अछि। कदम्ब फुलाएल अछि। भ्रमर गुंजायमान अछि। चतुर पवन बहैत अछि। हे सखि! कहु की करी? पावस क्रीड़ा करैत आएल।

उदाहरण मध्य किछु उद्धरण मे वीररसक सुन्दर परिपाक कएल गेल अछि—

सुर अरु सुरही परसमणि,
णाहि वीरेस समाण।
ओ वक्कल अरु कठिन तणु,
ओ पसु ओ पासाण ॥

—१-७१

कल्पवृक्ष, सुरभि तथा पारसमणि ई तीनू पदार्थ वीरक समानता नहि कए सकैछ। एक बल्कलयुक्त कठोर शरीरधारी, दोसर पशु एवं तेसर पाषाण थिक। पुनि निम्न पद्य मे वीररसक उद्रेक प्रस्तुत करैत युद्ध प्रयाणक रोमाञ्चकारी चित्र

उपस्थित कएल गेल अछि—

> मंचहि संदरि पाव अप्पहि हसिऊण सुम्मुहि खग्गं मे ।
> कम्पिअ मेच्छ सरीर पेच्छइ वअणाई तुम्ह धुअ हम्मीरो ॥

—१-७१

युद्धोद्यत वीर हम्मीर अपन प्रेयसी सँ विदायक काल मे कहैत छथि—"हे सुन्दरि ! षयर छोड़ू। हँसि कें तरुआरि दिअ। म्लेच्छक गरदनि कें काटि अवश्ये हम अहाँक मुँहक दर्शन करब।"

कवि हम्मीर युद्ध यात्राक सजीव वर्णन लीलावती छन्द मे प्रस्तुत करैत छथि—

> घर लग्गइ अग्गि जलइ धह-धह कइ
> दिग मग णहपह अणाल मरे,
> सब दीस पसरि पाइक्क लुलइ धणि
> थणहर जहण दिआव करे।
> भअ लुक्किअ थक्किअ बइरि तरुणि जण
> भइरव भेरिअ सद्द पले,
> महि लोट्टइ पट्टइ रिउसिर टुट्टई जक्खन
> वीर हमीर चले।

—१-१९०

जखन वीर हम्मीर युद्धक हेतु प्रयाण कएल तखन शत्रु राजाक घर मे आगि लागि गेल तथा ओ धह-धह कए जड़ए लागल जाहि सँ सभ दिशाक मार्ग एवं गगन पथ अग्नि सँ व्याप्त भए गेल। हुनकर पैदल सेना समस्त दिशा मे पसरि गेल जकरा डरेँ पराइत रमणीक स्तनभार ओकरा जाँघ कें टुकड़ा-टुकड़ा करए लागल। शत्रुक तरुणी भयातुर भए जंगल मध्य नुकाए रहलीह। रणभेरीक भैरव शब्द कर्णगोचर भए रहल छल। शत्रु राजा धराशायी भए अपन कपार कें पीटए लगलाह जाहि सँ हुनकर कपार फूटि गेलनि।

युद्ध वर्णनक निम्नलिखित पद्य भाषाक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण तँ अछिए संगहि वीररसक दृष्टि सँ तँ औरो अधिक महत्वक अछि—

> गअ गअहि ढुक्किअ तरणि लुक्किअ
> तुरअ तुरहि जुज्झिआ,
> रह रहहि मीलिअ धरणि पीडिअ
> अप्प पर णहि बुज्झिआ।

बल मिलिअ आइअ पत्ति धाइउ
कंप गिरिवर सोहरा,
उच्छलइ साअर दीण काअर,
बइर बड्ढिअ दीहरा ॥

—१-१९३

हाथीक हाथी सँ भिड़न्त भेल। सेनाक चलब सँततेक धूड़ा उड़ल जे सूर्यं भगवान अदृश्य भए गेलाह। घोड़ा घोड़ा सँ तथा रथ रथ सँ लड़ए लागल। पृथ्वी पीड़ित भेलीह तथा अपन एवं परायाक भेद-भाव लुप्त भए गेल। दुहु सेना आबि सपर मे संलग्न भेल। पैदल दौड़ए लागल। पर्वतक शिखर काँपए लागल। समुद्र उछलब प्रारम्भ कएल। कायर दीन भए गेल तथा शत्रुता अत्यधिक बढ़ि गेल।

एहि प्रकारेँ एहि ग्रन्थक मैथिली केँ मुक्तक पद्यक दृष्टि सँ अत्यधिक महत्त्व अछि। मध्ययुगीन मैथिलीक छन्द शास्त्री एहि ग्रन्थक छन्द परम्पराक पूर्ण अनुकरण कएलैन्ह अछि।

ग्रन्थ चाहे एक गोटाक कृति होए वा एक सँ बेसी गोटाक एहि मे योगदान होए किन्तु ई विशुद्ध मैथिलीक ग्रन्थ थिक। एहि मे कोनहु टा भ्रान्ति नहि अछि जकर साक्षी ग्रन्थक भाषा, छन्द तथा स्वतः ग्रन्थकारक नाम अछि।

वर्णरत्नाकर ज्योतिरीश्वर कृत मैथिलीक एक अपूर्व परिनिष्ठ ग्रन्थ थिक। ई ग्रन्थ चौदहम शताब्दीक प्रथम चरणक पूर्वार्ध मे रचल गेल। ज्योतिरीश्वर ठाकुर मिथिलाक कर्णाटवंशीय शासक हरिसिंह देवक आश्रित छलाह। हरिसिंहदेवक शासनकाल चौदहम शताब्दीक पूर्वार्ध मानल जाइछ। अतएव ग्रन्थक रचना एहि अभ्यन्तर मे भेल।

एहि ग्रन्थक तालपत्र पाण्डुलिपि, रॉयल एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगालक ग्रन्थागार मे सुरक्षित अछि। मूलतः एहि ग्रन्थ मे ७७ पत्र छल। आरम्भक नओ पत्र तथा बीच-बीचक पत्र ११, १२, १४, १५, १७, १९ तथा २० (सभ मिलाए १७ पत्र) उपलब्ध नहि अछि। सौभाग्य सँ अन्तिम पृष्ठ सुरक्षित अछि। अतएव एहि सँ स्पष्ट होइछ जे ग्रन्थक प्रतिलिपि ३८८ ल० सं० अर्थात् १५०७ ई० मे भेल।

वर्णरत्नाकर, डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी एवं पं० बबुआजी मिश्र द्वारा सम्पादित तथा विवलोथिका इण्डिका द्वारा १९४० ई० मे प्रकाशित भेल। सम्पूर्ण

ग्रन्थ सात कल्लोल मे विभाजित अछि। एहि सातहु कल्लोलक शीर्षक थिक— (१) नगर वर्णना, (२) नायिका वर्णना, (३) स्थान वर्णना, (४) ऋतु वर्णना, (५) प्रयानक वर्णना, (६) भट्टादि वर्णना तथा (८) श्मशान वर्णना।

सातम कल्लोलक पश्चात् आठम् कल्लोलहुक किछु अंश तँ अछि किन्तु ग्रन्थक खंडितावस्थाक कारण कोनो-शीर्षक निश्चित करब कठिन थिक। एहि सात कल्लोलक प्रधान वर्णनक संग कतिपय स्थल पर अप्रधान वर्णहु सन्निविष्ट अछि। सभ मिलाए वस्तुत: वर्णनक निमित्त ई ग्रन्थ रत्नाकर बनि जाइछ। एहि सातो कल्लोल मे वर्णित विषयक सारांश निम्नलिखित अछि।

प्रथम कल्लोल—प्रथम नऽ पत्रक अनुपलब्धि मे प्रथम कल्लोलक अल्पांशे प्राप्त होइछ। ग्रन्थ मध्य प्रवेश करितहि नगर वर्णनक रूप मे जाहि प्रथम पुष्पक साक्षात्कार होइछ ओहि मे लतापादवक सौन्दर्य, नगरक तुमुल कोलाहलक गुंजार एवं विभिन्न जातिक वर्णनक संगहि संग जगा-योगीक परिचय सेहो प्राप्त होइछ—

(पु)नु कइसन देपु, नागल, तोंगल, तापसि, तेँलि, ताति, तिवर, तुरिया, तुलुक, तुरुकटारुअ, धेओल, धाङ्गल''''कादव नागर प्रभृति मंद जातीय तेँ बास। तत्पश्चात् अपराधी वर्गक वर्णन अछि—

चोर, चञ्चल, जुआर, छिनार, लगवार''''अनुचीती ताकर आश्रय देपु कइसन। तदुपरान्त भिक्षुक वर्ग—जगा, योगी, नागरि, भरहर, भन्डुआ प्रभृति अनेक भिषारि तेँ भरल नागरक तुमुल कोलाहल, मजिरा, कठताल, सोगा आदि बाजाक मधुर ध्वनि, लोरिक आदिक गीतक मादक नाद एवं लेह, देह, तोरह, पुनु देहक शब्द सँ युक्त नगरक यथार्थ चित्रण कएल गेल अछि।

द्वितीय कल्लोल—ई नायक वर्णन सँ आरम्भ होइछ। नायक धनुर्विद्या मे कुशल, अञ्जन, गुटिका, पादुका, रस, परस, खग्ग, वेताल, यक्षिणी एहि आठ प्रकारक उपसिद्धि; स्तम्भन, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, मारन, विद्वेषकरण, प्रक्षोभन एवं आकर्षण एहि आठ प्रकारक प्राकृत सिद्धि तथा अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, उशिद्ध, वशिद्ध, प्राकाम्य, कामवशायिता एहि आठ महासिद्धि मे निपुण होइछ। ओ छत्तीस प्रकारक शास्त्र तथा चौरसो प्रकारक राजनीतिक ज्ञाता होइछ। दया, दान, दाक्षिण्य आदि शिष्ट धर्म सँ संयुक्त एवं तेरह प्रकारक गुण जे उपनायक मे रहबाक चाही ओहि सँ समन्वित रहैछ।

एकर उपरान्त नायिका वर्णन मे नायिकाक नख-शिख वर्णन, ओकर

अलंकार आदिक विस्तृत वर्णन पाओल जाइछ। नायिकाक सौन्दर्यंक वर्णन तुलनात्मक रूप मे उपलब्ध होइछ—कङ्कणनूपुर प्रभृति अनेक। अलङ्कार कएले कइसन देषु ॥

जनि कामदेव संसार जिति आएल। तकर पताका। जनि एक रूप दयके इन्द्र सहस्राक्ष भेलाह, ब्रह्माजे चतुम्मु ख कएहलु, जनि एहि आलिङ्गए लागि एक कृष्ण चतुर्भूज भए गेलाह।

एकर अनन्तर सखी वर्णन प्रकरण मे ओकर नख-शिख सौंदर्यंक भव्य वर्णन पाओल जाइछ—पूर्णिमाक चांद अमृत पूरल अइसन मुह। श्वेत पंकज कां दल भ्रमर वयिसल अइसन आँषि।

कामदेवक नगर अइसन शरीर। निष्कलङ्क चान्द अइसन मुह। कन्दल खञ्जरीट अइसन लोचन आदि।

एकर पश्चात् नायिकाक हास्य वर्णन मे कुमुद, कुन्द, कदम्ब, कास, भास, कैलास, कर्पूर, पीयूषक कान्ति प्रसारीसन क्षीरसमुद्रक दक्षिणानिले चालल तरङ्ग सनक लहरी अइसन, अमृतक सरोवर तरङ्गक सहोदर सन, शतरक पूर्णिमाचान्दक ज्योत्स्ना अइसन अभिनव प्रकाशित कमल कोष प्रसारि शोभा सन, कन्दर्पंक दर्प्पंप्रकाशसन सन त्रैलोक्यक नागरजन युवजन हृदयमोहन मन्त्रसन, आठ सात्विक भावताक भण्डार सन, कन्दर्प्पंक पाँचो वाणगुणताक सन्धानशक्ति सन नायिका मोहनता, प्रकाशिता, वसिता, उत्साहिता आदि रूप मे नायक कें संचारइते देषु॥ एवंक्रमे द्वितीय कल्लोलक समाप्ति होइछ।

तृतीय कल्लोलक आरम्भ राजदरवारक वर्णन सँ होइछ। एहि मे अनेक प्रकारक व्यापारी, राजोपजीवक, राजविनोदक, स्थान, मण्डप, छत्तीस पदक, राजपादोपजीवक लोकक वर्णन अछि। राजदरवारक वर्णनक पश्चात् स्नान गृहक (समरहर वर्णनाक) वर्णन अबैत अछि। ओतए स्नानक सामग्री, स्नानक विधि आदिक विधिवत् वर्णन पाओल जाइछ। स्नानोपरान्त राजा पूजा हेतु मंदिर (देओरहलि) मे जाइत छथि। ओतए पूजाक विविध सामग्री ओरियाएल रहैछ। पूजाक उपरान्त भोजन एवं पान (तांवुल सेवन) खेवाक वर्णन अछि। तत्पश्चात् शयनगृहक मनोरम वर्णन—

सफुर चित्रशाली एक देवराजगृह ततसमान, तक भोतर हाथिक दान्तक पवा, मानिकक पासि, मरकतक शिरवा, सोनाक पटा, स्फटिकक दण्डा, पद्म-रागक दण्डिया, अहुठ हाथ दीर्घ अढ़ाय हाथ फाण्ड, सेजओट एक पालु तकां उपर

कम्बल चारि ··· .... .... ....

··· स्वर्णकेतकी, चम्पक प्रभृति अनेक सुरभि पुष्प से उपगत कएल अछ, प्रतिष्ठित, आप्त, परम्परीण, विश्वासयोग्य ये गोआर, कोइरि, कुलुवि, रजक प्रभृति जनदश नओवति नियुक्त भेल अछ। तदुपरान्त प्रभात, मध्याह्न, रात्रि एवं मेघ आदिक विस्तृत वर्ण पाओल जाइछ।

चतुर्थ कल्लोल ऋतुवर्णना कहबैत अछि। कविपरम्परानुकूले षडऋतुक एहि मे विस्तृत विवरण अछि। एहि कल्लोल मे चौंसठि कलाक नाम सेहो गनाओल गेल अछि। संगहि षोडश महादान, अष्टदश प्रकारक रत्न, बत्तीस प्रकारक उपमणि, तीस प्रकारक वस्त्र, बीस प्रकारक देशी वस्त्र, तेरह प्रकारक निरभूषण वस्त्र तथा चौदह प्रकारक नेत वस्त्रक वर्णन अछि। एकर अतिरिक्त विभिन्न प्रकारक वस्त्रगृहक वर्णन, ज्योतिर्विद वर्णन, द्यूत-वर्णन, वेश्यावर्णन एवं कुट्टनी वर्णन आदि प्रकरण अछि। तत्पश्चात् कामावस्था वर्णना मे कामदेवक पँच-वाण, आठ सात्विक दशा, चारि प्रकारक कोमलाङ्गी, सात कठिनालिङ्गन, दस प्रकारक चुंवन, दस प्रकारक चुंबन स्थान, पाँच प्रकारक नखविन्यास, पाँच प्रकारक दशनविन्यास तथा तीन प्रकारक केशाकर्षणक संग-संग किछु आसनक वर्णन सेहो कएल गेल अछि।

पाँचम कल्लोल राजाक विजय यात्रा सँ आरम्भ होइत अछि। राजाक विजय यात्राक क्रमे मे छत्तीस प्रकारक राजपुत कुल, विभिन्न प्रकारक घोड़ा एवं हाथीक वर्णन अछि। प्रयानक वर्णनक पश्चात् आखेट वर्णनाक प्रसंग मे शिकारक विशद् वर्णन प्राप्त होइछ। आठ प्रकारक हाथी, चौबीस प्रकारक घोड़ा, आठ प्रकारक भैंसा तथा दस प्रकारक कुकुरक लालन पालन एवं शिक्षण संबंधी तत्कालीन व्यवस्थाक सम्यक चित्रण कएल गेल अछि। शिकार मे विपुल सैनिक समुदायक प्रस्थान कएला पर धूरा सँ भरल मार्गो ओकर अविरल पदाघात सँ पंकमय भए जाइत छल। एकर अतिरिक्त वनक भीषणता, सघनता तथा रमणीयताक मनोरम चित्रण कएल गेल अछि। ओहि भयानक जंगल मध्य कोच, किरात, कोल्ह, भिल, षस, पुलिंद, सबर, छैरंग, म्लेच्छ, गोण्ठ, वोट, नेट, पहलिया, पोध, दोनवार, सागर एवं बांतर आदि जातिक निवास स्थान छल। उपवन वर्णनक प्रसंग मे भाँति-भाँतिक फल फूल, कृत्रिम निर्झर, नाना प्रकारक गाछ-वृक्ष एवं पक्षीक नाम गनाओल गेल अछि। पर्वतक वर्णनक उपक्रम मे पर्वतीय लता, पादप, जीव-जंतु, यक्ष, किन्नर, व्याध एवं विद्याधर आदि देवयोनिहुक नाम आयल अछि। एहि कल्लोल मे कमल, कोकनद, कल्हार, कुवलय, कुमुद आदि पुष्प सँ शोभित शरतक चाँद अइसन निर्मल सरोवरक बड़ भव्य वर्णन अछि। अन्त मे श्रद्धाक पुञ्ज अइसन,

अग्निक सहोदर अइसन, सन्तोषक रासि अइसन, संयमक प्रतिविम्ब अइसन, ज्ञानक सषा अइसन, ममत्वक शत्रु अइसन, लोभक कृतान्त अइसन, परमहंसदशापन्न महामुनिक रूपक वर्णन भेटैछ। एवक्रमेँ ई कल्लोल समाप्त होइछ।

छठम कल्लोल नाच-गान एवं काव्य कला सँ संबद्ध अछि। सर्वप्रथम मारक बहुमूल्य पाहेरना, ओकर योग्यता आदिक प्रसंगक सम्पूर्ण रूपरेखा प्रस्तुत कएल गेल अछि। तत्पश्चात् मल्लयुद्धक चर्चा कएल गेल अछि। ओहि अभ्यन्तर एक विद्यावंत गायिकाक वर्णनक क्रम मे राग, श्रुति, सात प्रकारक गायन दोष आदि वर्णित अछि। संगीतक वर्णनक उपरान्त नृत्यक प्रसंग अबैत अछि। नृत्य केँ तीन वर्ग—नृत्यवर्णना, पात्रनृत्यवर्णना, प्रेरणनृत्यवर्णना मे विभाजित कएल गेल अछि। एकर अतिरिक्त सभ प्रकारक नृत्यक भाव-भंगिमाक वर्णन पाओल जाइछ। एहि मे दस प्रकारक मुरजि, बारह प्रकारक मुरज, वाद्य, ताला, रास, व्यभिचारी एवं सात्विक भावक वर्णन अछि। तत्पश्चात् वीणावर्णना प्रकरण मे सत्ताइस प्रकारक वीणाक उल्लेख अछि।

सातम कल्लोल श्मशान वर्णनाक नाम सँ उल्लिखित अछि। एहि प्रकरण मे आठ भैरव, आठ शक्ति, चोदह योगिनी, बारह वेताल तथा अनेक कापालिक आदिक वर्णन अछि। श्मशान वर्णनक संग मरुस्थल, समुद्र, तीर्थ, नदी, ऋषि एवं पर्वत आदिक सांगोपांग वर्णन कएल गेल अछि। एकर अतिरिक्त चौरासी नाथ पंथी सिद्ध, दशावतार, शिवक अष्टमूर्त्ति, नवग्रह, आठ वसु, एगारह रुद्र, दस विश्वदेव, चौदह मनु, बारह साध्य, उनचास पवन, बारह आदित्य, आठ दिग्गज, अठारह पतिव्रता, रामायणक सात काण्ड, महाभारतक अठारह पर्व, आठ दिक्पाल, दस उपपुराण, सोलह पुराण, अठारह स्मृति तथा अन्त मे आगमक वर्णनक संग ई कल्लोल समाप्त होइछ।

राजपुत्र कुलक वर्णन सँ आठम कल्लोल प्रारम्भ होइछ। एहि मे छत्तीस प्रकारक शास्त्रास्त्रक नामक उपरान्त देश वर्णनक प्रसंग अबैछ। एहि मे मात्र मगध, मुरतान, मालव एहि तीन देशक नाम लए अकारण वैद्यक वर्णन बीचे मे प्रारम्भ कएल गेल अछि। तदुपरान्त जहाजक वर्णन (वहित्र वर्णना), विविध देशक स्त्रीक वर्णन, विवाह वर्णन, द्वादश पुत्र वर्णन, वणिक पुत्र वर्णनक संगहि संग वणिक द्रव्य, रत्नादिक वर्णन उपलब्ध होइछ। तत्पश्चात् चोर, दुर्ग, नौका, वैद्य एवं वोहित वर्णनक प्रसंग अबैछ। अन्त मे भोजनक मनोरंजक वर्णनक संग ग्रन्थक समाप्ति भए जाइछ। दुर्भाग्य सँ एहि आठम कल्लोलक शीर्षक प्रतिलिपिकार द्वारा नहि देल गेल अछि ओर ने तँ एकर कोनो दोसर प्रतिए उपलब्ध भेल अछि।

ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरक अतिरिक्त आरो दू ग्रन्थ—धूर्तसमागम प्रहसन एवं पंचसायकक रचना कएलनि। धूर्तसमागमक प्रस्तावना मे ज्योतिरीश्वर अपना कें कर्णाट वंशी राजा हरिसिंह देवक आश्रयी कहैत छथि।

धूर्तसमागम मैथिलीक सभ सँ प्राचीन नाटक थिक। ई प्रहसन सम्पूर्ण प्राप्त नहि भेल अछि। किन्तु एकर संस्कृत संस्करण सम्पूर्ण प्राप्त भेल छलैक जाहि सँ एकर कथा बुझबा मे बड़ सहायता प्राप्त भेलैक।

जहि समय समस्त उत्तर भारत मे कोनो लोक रंग-मंच नहि छल, ज्योतिरीश्वर लोकमंचीय नाटक कें लिखि एक एहेन परम्पराक सूत्रपात कएल जे पश्चात् आन-आन प्रदेशहु मे विकसित भेल।

धूर्तसमागम मे वर्णरत्नाकरेक[१३] सदृश १४म शताब्दीक मिथिलाक सामाजिक जीवनक परिचय भेटैत अछि। एहि ग्रन्थ मे आइ सँ ७०० वर्ष पूर्वक भोज्य पदार्थ—मांस, माछ, बड़, बड़ी, पड़ोर, मूङ्क दालि, टटका दही, सोन्हाएल दूध, केरा एवं मधुर आदिक विस्तार पूर्वक वर्णन भेटैत अछि।

ज्योतिरीश्वरकालीन मिथिला मे यद्यपि शान्ति छल किन्तु सुखक कोनो खास वस्तु हुनक ग्रन्थ मध्य नहि पाओल जाइछ। मिथिलाक तत्कालीन समाज आइ सँ विशेष भिन्न नहि छल। ओएह राजा-प्रजा, आर्य-म्लेच्छ, ब्राह्मण-शुद्र, जाति-भेद एवं वर्ग-भेद छल। एक दिश विलासिताक ताण्डव नृत्य भए रहल छल तँ दोसर दिश बाजार मध्य भुक्खरक कोलाहलक संग-संग जगा, योगी एवं भण्डुआ सँ नगरक गली भरल छल।

ज्योतिरीश्वर काल मे प्रायः संस्कृत राष्ट्रभषा छल। दर्शन, धर्मनिवन्ध, नाटक एहि भाषा मे होइत छल। राजाज्ञा संस्कृते मे बहराइत छल। किन्तु लोक भाषा सेहो दिनानुदिन प्रवल भए रहल छल। ई लोक-भाषा प्राकृत, पाली, अपभ्रंश एवं अवहट्ठ आदिक रूप मे पहिनहि सँ उँच पद प्राप्त कएने छल। किन्तु १००० ई० मे एहि दिश एक नव मोर लेलक जे आधुनिक मैथिली दिश अग्रसर भेल।

ज्योतिरीश्वरक समय धरि मुसलमानक राज मगध एवं बंगाल धरि दृढ़ भए गेल छल। मिथिला तावत धरि बाँचल छल। ओ दिल्ली-वंगाल मार्ग सँ पृथक छल। मगध ठीक ओहि मार्ग पर छल। अतएव प्रथम आक्रमण ओतहि भेल। गंगा, गंडक आदि नदी सेहो बहुत काल तक एकर रक्षा करैत रहल। उत्तर बिहारक नदी सेनाक मार्गक बाधक छल। सम्भवतः मिथिला मे ब्राह्मण एहि हेतु तावत

१३ डा० जयकान्त मिश्र, धूर्तसमागम, भू० पृ० १

धरि मुसलमान केँ नहि बौद्ध के अपन प्रतिपक्षी मानैत छलाह। ब्राह्मणक रूख बौद्धक प्रति जे रहल हो ओहि सँ ज्ञात होइछ जे ब्राह्मण एवं बौद्ध मे कटु विरोधभाव ओहि युग तक छल यद्यपि बौद्ध महाविद्यालय नालन्दा एवं विक्रमशिलाक विध्वंस ज्योतिरीश्वर सँ एक सय वर्ष पूर्वे भए गेल छल। ज्योतिरीश्वर बौद्ध पक्ष केँ "अगात भीषण" तथा बौद्ध विरोधी उदयनाचार्यक सिद्धान्त केँ "प्रसन्न" कहलनि अछि।

ज्योतिरीश्वर स्त्रीक मधुर एवं कटु दुहु रूपक वर्णन कएलनि अछि। एहि वर्णन मे मात्र विलास एवं विरक्तिक समवन्य अछि। नायिका, सखि, वेश्या आदिक चित्रण विलास भावक तथा श्मशान, अन्धकार आदि सँ नारीक समता विरक्ति-भावक द्योतक थिक। एक दिश तँ स्त्रीक 'पूर्णिमाक चाँद अमृत पूरल अइसन मुँह,' 'पारिजातक पल्लव अइसन हाथ, तथा 'विकसित स्थल पद्म अइसन चरण' पर पुरुष मुग्ध अछि तँ दोसर दिश ओ श्मशान केँ स्त्रीक 'चरित्र अइसन दारुण' तथा अन्धकार केँ 'स्त्रीक चरित्र अइसन दुर्लक्ष्य' केँ पावि मूक भए जाइत छथि। वेश्याक कृत्रिम लाज, कपट, तारुण्य, धनार्थे प्रेम, लोकार्थे विनय " निमुंक्त स्वामिसिन्दुर एवं शीलवन्ति, विलासवन्ति, वलवन्ति, हृदयहारिणी, यौवनश्री, पर घृणा प्रकट कएल गेल अछि तथा पाण्डुर भजुह, शङ्खाबदात केश, संकुलित त्वचा, उन्नति शिरा, निर्मास काय, भाङ्गल कपोल, झलल दाँत वाली कुट्टनी केँ "प्राणहारिणी" कहि ओकर भर्त्सना कएल गेल अछि।

ज्योतिरीश्वरक 'अष्टादशपुराणवर्णना' मे सोलह पुराणक नाम पाओल जाइछ। उपपुराणक संख्या दस कहल गेल अछि किन्तु नाम आठेटा केँ देल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर चौरासी सिद्ध एवं आगमक जे एक विस्तृत सूची देलनि अछि ओ नितान्त महत्वक अछि।

ज्योतिरीश्वरक स्थानादिक वर्णन एवं नदीक नामक वर्णन सँ ज्ञात होइछ जे ओहि मे वर्णित नाम क्रमागत नहि भए अनुप्रासगत छल जे कतिपय महत्वपूर्ण नाम केँ ओहि सूची मे नहि रहला सँ प्रतीत होइछ। ग्रन्थ मे मन्दर, महेन्द्र, मलय, मैनाक, माल्यवान् मन्दार, गोवर्द्धन आदिक संग हिमालयक चर्चा नहि रहला सँ मिथिलावासी केँ एकर किछु अभाव खटकैत अछि। एवंक्रमेँ नदीक नाम गंङ्गा, गोमती, गोदावरी, गण्डकी, रेवती, आदि नामहु मे अनुप्रासहिक रक्षा कएल गेल अछि।

तीर्थ वर्णन प्रकरणहु मे अनुप्रासेक धार बहाओल गेल अछि। प्रभास, पारिप्लुत, पञ्चनद आदिक संग कोकामुखक नाम देल गेल अछि जे 'वराहक्षेत्र' थिक।

उपर्युक्त वर्णन सँ ज्ञात होइछ जे ज्योतिरीश्वरक लक्ष्य जन-जीवनक बीच प्रक्षिप्त पुष्कल वैभव केँ ओकरहि भाषा मे जगाएब छल। तदर्थं संस्कृतक महान विद्वान होइतहुँ ओ लोक-भाषा मे ग्रन्थ लिखलनि जे मैथिलीक अमूल्य निधि थिक।

पारिजातहरण नाटकक कथानक हरिवंशपुराणक १२४-१३३ अध्यायक आधार पर लिखल गेल अछि। एकर रचनाकाल ई० सनक सत्रहम शताब्दी मे भेल। उमापति उपाध्याय कृत पारिजातहरणक विषयवस्तु यद्यपि विष्णु पुराण एवं श्रीमद्-भागवत सँ लेवाक प्रयास कएल गेल अछि किन्तु पुराणक एवं नाटकक कथानक मे विभिन्नता पाओल जाइछ। पारिजातहरणक कथानक एवंक्रमक अछि—

"देवर्षि नारद पारिजात पुष्प जे इन्द्रक कानन मे उपजैत अछि, श्रीकृष्ण केँ समर्पण करैत छथि। श्रीकृष्ण ओहि दिव्य पुष्प केँ अपन प्रेयसी रुक्मिणी केँ दैत छथि। श्रीकृष्णक छोटकी रानी सत्यभामा केँ अपन रूप एवं लावण्य पर गर्व छलनि ओ श्रीकृष्णक एहि प्रकारक पक्षपात कएला सँ मानिनी भए रूसि रहलीह। श्रीकृष्ण द्वारा मान भंग कएला पर ओ सम्पूर्ण पारिजात वृक्ष केँ इन्द्रक उद्यान सँ लए आनवाक वचनबद्ध कएल।

"अपन वचन पूर्त्तिक निमित्त श्रीकृष्ण इन्द्रक ओतए अनुनय तँ कएल किन्तु इन्द्र हुनक अनुनय केँ अस्वीकार कएल। अतएव इन्द्र एवं कृष्णक बीच युद्ध भेल तथा श्रीकृष्ण पारिजात वृक्ष केँ स्वर्गक कानन सँ हरण कए सम्पूर्ण पारिजात वृक्ष केँ सत्यभामाक आँगन मे रोपि देल। एहि अनन्तर नारद प्रकट भए कहैत छथि जे जँ किओ अपन अत्यन्त प्रिय पदार्थ केँ दानस्वरूप प्रदान करत तँ ओकरा एहि वृक्षक छाह मे अमर फलक प्राप्ति होयतैक। तदर्थ सत्यभामा एवं सुभद्रा दुहु अपन-अपन पति श्रीकृष्ण एवं अर्जुन कए दान कए देलनि। अतः श्रीकृष्ण एवं अर्जुन दुहु नारदक शिष्य वनि जाइत छथि जनिका ओ बेचबाक हेतु प्रस्तुत भए जाइत छथि। सत्यभामा एवं सुभद्रा दुहु अपन-अपन पति केँ एक-एक गाय दए खरीदैत छथि।" एवंक्रमेँ नाटकक अन्त होइछ।

नारदक चातुर्य एवं दूरदर्शिता केँ प्रमाणित करैत पारिजातहरण एक एहेन ने सफल नाटक थिक जे अपन कलात्मक तथा मनोरंजनक दृष्टि सँ अद्वितीय सिद्ध होइछ। ई मनोविश्लेषण एवं मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर वहुपत्नी सँ युक्त पुरुषक मनोवैज्ञानिक प्रतिनिधित्व करैछ। रुक्मिणीक श्रेष्ठता एवं सत्यभामाक स्नेह-पाँक मध्य व्याप्त श्रीकृष्णक चरित्रक उदारताक बड़ सफल निदर्शन उमापति एहि नाटक मे प्रस्तुत कएलनि अछि। प्रधान पत्नी रुक्मिणी तथा उपपत्नी सत्यभामा दुहुक मध्यक इर्ष्या एवं मान केँ बड़ सहज ढंग सँ प्रकट कएल गेल आछि।

पारिजातहरणक रचयिता उमापति किरतनिया नाटकक परम्पराक जनक छलाह[१४]। पारिजातहरण नाटकक सफल लेखन एवं दृढ़ अंकनक आधार पर आशा कएल जाइछ जे उमापतिक रचल कोनो आरो ग्रन्थ छल होयत जकर सूचना एखन धरि नहि प्राप्त भेल अछि।

पारिजातहरण नाटक यद्यपि प्राकृत एवं संस्कृत मे लिखल गेल अछि किन्तु ग्रन्थक बीच-बीच मे उमापति जे मैथिलीक गीत नियोजित कएल अछि ताहि सँ रोचकताक संग सरसताक मधुवर्षण होइछ। वस्तुतः पारिजातहरण नाटक उपस्थित कए उमापति अपन काव्य प्रतिभाक चमत्कार देखौलनि अछि।

पारिजातहरण नाटक मे जे गीत उमापति सजौलनि अछि ओ लोक रुचि एवं हुनकर मनोभावनाक प्रति अदम्य निष्ठाक प्रतीक थिक। मालव, ललित, वसन्त, वैजन्ती आदि राग-रागिनी सँ एहि गीत कें घनिष्ठ सम्बन्ध छैक।

पारिजातहरण सन छोट ग्रन्थ मे बीसक संख्या मे गीत यद्यपि किछु अस्वाभाविक एवं अत्यधिक प्रतीत होइछ किन्तु ग्रन्थ-पाठक उपरान्त बुझना जाइछ जे अभिनय कें मनोरंजन बनेबाक निमित्तहि एतेक गीतक समावेश कएल गेल अछि।

सत्यभामाक प्रवेशक प्रसंग मे जे गीत आएल अछि ओहि मे अलंकारिक-ध्वनि पर्याप्त मात्रा मे पाओल जाइछ—

सतिभामा देवि देल परवेस।
स्वामि सोहाग सुहाओनि वेस॥
हरखित हृदय गरुअ अभिमान।
कृष्ण पिआरे परान समान॥
देखइत चान कलाक संदेह।
वसुधा वसु जनि विजुली रेह॥
मनिमय भूखन अंग अमूल।
कनक लता जनि फूलल फूल॥
सूमति उमापति भन परमान।
पट-महिषी देइ हिन्दुपतिजान॥

देवी सत्यभामाक प्रवेश भए रहल अछि जे स्वामीक स्वभावानुसार वेष्ठित छथि। हृदय कें ओ प्रसन्न करैत छथि तथा ओ गर्विणी सेहो छथि। कृष्णक प्राण सन प्रेम हुनका मे सन्निहित अछि। हुनक लावण्य कें देखि चन्द्रकला वा भूतल पर

१४ डा० जयकान्त मिश्र, हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर, पृ० २८९

विजुलीक ज्योत्सनाक भ्रम होइछ। हुनकर अंगक अमूल्य मणिमय आभूषण सँ प्रतीत होइछ जे स्वर्णलता मे सुमन उत्पन्न भेल अछि। विद्वान उमापति कहैत छथि जे ई महिषी हिन्दूपति कें नितान्त प्रिय छथिन।

उपर्युक्त गीति मे उपमा-उपमेय आदिक समन्वय अनुपम अछि। मैथिली साहित्यक माधुर्य एवं भावक सरसताक संग शृंगारक प्रावल्य एहि गीत मे पाओल जाइछ।

सत्यभामाक प्रसंगक निम्नलिखित गीत पंचम राग मे गाओल जाइछ—

सखि हे रभस रसचलु फुलवारी।
तहाँ मिलत मोहि मदन मुरारी॥
कनक मुकुट महेँ मनि भल भासा।
मेरु-सिखर जनि दिन-मनि वासा॥
सुन्दर नयन वदन सानंदा।
उगल जुगल कुवलय लय चंदा॥
बन-माला उर उपर उदारा।
अंजन गिरि जनि सुरसरि धारा॥
पिअर वसन तन भूखन मनी।
जनि नव घन ऊगल दामिनी॥
जोवन धन मन सरवस देवा।
से लय करब हरि चरनक सेवा॥
सुमति उमापति भन परमाने।
जग माता देइ हिन्दुपति जाने॥

अर्थात् "हे सखि! सत्वर फुलवारी दिश चलू जतए अहाँ कें कामदेव सन मुरारी भेटताह। हुनकर स्वर्ण-मुकुट पर मणि मेरु पर्वत पर सूर्यक वास सन शोभित होइछ। सुन्दर नयन एवं प्रसन्न मुखारविन्दु चन्द्रमाक ज्योत्सना मे प्रस्फुटित युगल कुमुदिनी सन भाषित होइछ। अंजनगिरि पर प्रवाहित होइत सुरसरिक धार सन वक्ष-स्थल पर वनमाला शोभित होइछ। नवघन मध्य दामिनी सन नील बसन मध्य तन शोभित होइछ। ओ जीवन-धन हमर सर्वस्व थिकाह जनिकर चरणक हम सेविका छी।"

उपर्युक्त गीत मे पति-प्रेमक उत्कट अभिलाषाक संग त्यागक भावना प्रेमक अनन्यताक प्रतीक थिक।

पारिजातहरणक निम्नलिखित गीत मे रुक्मिणीक प्रेमक उत्कर्षताक दिग्दर्शन होइछ—

आज जनम फल भेला।
सभ पति तेजि हरि मोहि फुल देला॥
पूजल पुरुब हम गौरी।
आसा तनि वरि पूरलि मोरी॥
उपर रहल मोर माथे।
सोडस सहस वर नारिक साथे॥
सुमति उमापति भाने।
हे सखि देइ गति हिन्दूपति जाने॥

वस्तुत: बहुपत्नी सँ युक्त नायकक प्रेम एक नारी मे केन्द्रीभूत भेला सँ ओ अपना केँ गर्विणी बुझैत अछि। रुक्मिणीक स्थिति तेहने सन छल। सोलह सय नारी केँ छोड़ि पारिजात पुष्प पाबि रुक्मिणी अपना केँ धन्य तँ बुझैत छलीह किन्तु रुक्मिणीक हर्ष एवं आनन्द सत्यभामाक हृदय मे विषादक कार्य कएल। सत्यभामा यद्यपि कतहु अपन विषाद केँ रुक्मिणीक प्रति नहि प्रकट कएलीह किन्तु पारिजातक निमित्त ओ उन्मत्त छलीह—जकरा पावि रुक्मिणी अपना केँ धन्य बुझलनि। सत्यभामाक मनोव्यथाक दिग्दर्शन मालव रागक निम्न गीत सँ होइछ—

हरि सउँ प्रेम आस कय लाओल
पाओल परिभव ठामे।
जलधर छाहरि तर हम सुतलहुँ
आतप भले परिनामे।
सखि हे मन जनु करिअ मलाने।
अपन करम फल हम उपभोगव।
तोहें किअ तेजह पराने॥ध्रुवम्॥
पुरुष पिरिति रिति हुनि जउँ विसरल
तइओ न हुनकर दोसे।
कतन जतन धरि जउँ परिपालिअ
साप न मानय पोसे॥
कबहु नेह पुनु ननि परगासिअ
केवल फल अपमाने।

बेरि सहस दस अमिअ भिजाबिअ
कोमल न होअ पखाने ॥
गुरू उमापति पहु देव दरसन
मान होएब अबसाने।
सकल नृपति पति हिन्दूपति जिउ
महारानि बिरमाने ॥२०॥

अर्थात् हरि सँ प्रेम करबाक फल प्रतिकूले प्राप्त भेल। जलधरक छाह मे सुतलहुँ मुदा ताहि सँ आतपे तँ भेटल। हे सखि ! मोन के संतापित जनु करी। कर्मानुसार अपन फल केँ पाबि व्यथाक भागी बनि रहल छी। अहाँ एहि हेतु अपन प्राण किएक तेजब। पूर्वक प्रीति यद्यपि ओ बिसरि गेलाह तथापि एहि मे हुनकर कोनहु टा दोष नहि अछि। साप के कतबोक यत्न सँ पोसला पर पोस नहि मानैत अछि। आब ओ कथमपि प्रेमक प्रदर्शन नहि करताह। पाषाण सहस्त्रो बेर अमृतक रस मे भिजओला पर कोमल नहि होइत छैक।

पुनि निम्न पद मे ओ अपन मानसिक व्यथा केँ बिभास राग मे कहैत छथि—

सहस पूर्ण ससि रहओ गगन बसि
निसि बासर देओ नन्दा ॥
भरि बरिसओ बिस बहओ दहओ दिस
मलय समीरण मंदा।
साजनि आब जिबन किअ काजे
पहु मोहि हिन करु
अपजस जग भरु
सहय न पारिअ लाजे ॥ध्रु०॥
कोकिल अलि-कुल कलरब आकुल
करओ दहओ दुहु काने।
सिसिर सुरभि जत देह दहओ तत
इनओ मदन पचबाने ॥
सुकवि उमापति हरि होए परसन
मान होएत समधाने।
सकल नृपति पति हिंदूपति जिउ
महेसरि देई बिरमाने ॥२१॥

"हे सखि ! अनेक चांद सतत् अपन दीप्ति सँ, जलद अनवरत मधु वर्षन सँ तथा मलय समीर अपन मृदु गति सँ भने हमर अन्तःकरणक संतापक हरण करथु किन्तु हमरा जीवन मे आब कोन सार अछि ? एहि हीन जीवनक लाज असह्य प्रतीत होइछ। कोइली एवं भंमराक आकुल स्वर कान कें कटु, शिशिरक सुरभित पवन डाहक तथा कामदेवक पंचशर हमर तन कें बेधैत अछि। विद्वान उमापति कहैत छथि जे हरि प्रसन्न होएताह तथा अहांक मानक अन्त होएत। समस्त राजाक राजा हिन्दूपति एवं महेश्वरी देवी दीर्घ जीवन कें प्राप्त करथु।"

एवंक्रमें सुललित भाषा सरस साहित्य एवं सुकोमल भाव सँ संयुक्त ग्रन्थक अन्त ललितराग मे समवेत गीतक रूप मे कएल गेल अछि—

जलधर समय करथु जल दाने।
भरलि रहथु धरनी धन धाने॥
धरम प्रजा परिपालथु राजा।
चारु बरस करथु निअ काजा॥
बाभन बेद खेद जनु पावे।
साधुक संग कुजन जनु आवे॥
पिसुन पात्र जनु नृपतिक काने।
गुन बुझि भूप करिअ सनमाने॥
चिरे जिबथु हिन्दूपति देओ।
गुन कीरति गावहि सब केओ॥४२॥

उपर्युक्त गीत मे उमापतिकालीन मिथिलाक सामाजिक जीवनक संकेत प्राप्त होइछ। वर्णाश्रमक भेद-भाव, ब्राह्मणक वेदाचार, साधुक प्रति दुर्जनक अभद्र व्यवहार आदिक चर्चा उपलब्ध अछि।

## विद्यापति

मैथिल कविकोकिल विद्यापतिक समय ई० सनक चौदहम शताब्दीक चारिम चरण तथा पन्द्रहम शताब्दीक तृतीय चरणक मध्य मानल जाइछ जे मिथिलाक घर-आँगन, बाट-घाट ओर मठ-मन्दिरक कोन कथा बंगाल, असम, उड़ीसा, नेपाल आदि समस्त पूर्वी क्षेत्रक बयःसन्धिक अवस्था मे चकिता बाला, रूप सम्पति सँ गर्विता तरुणी, पतिक भुजपास मे आवद्ध कामिनी तथा प्रौढ़ावस्थाक दीप्त रूप सँ आलोकित नारी कें अपन पदक माधूर्य ओ शब्दक स्पर्श सँ आइयो ओहिना रोमाञ्चित करैत अछि जेना कहियो ई गीत सभ नितान्त स्वरूपा राजरानी लखिमा कें करैत होयत।

वस्तुतः अनुभूति कें व्यक्तिक धरातल पर आनि जीवन कें लोकक दृष्टि सँ देखबाक काव्य सामर्थ्यें सँ विद्यापतिक लोकप्रियता भेल जकर आत्मबोध मात्र वर्ण्य ओ रूोटा नहि भए काव्यक निहित सौंदर्य ओ मर्मक श्रेष्ठताक द्योतक सेहो थिक। अतएव विद्यापतिक वाणी काल विजयिनी भए एक देशी नहि अनेकदेशी भेल जे कृष्ण काव्यक गङ्गा कें पूर्व सँ पश्चिम मे प्रवाहित कएलक।

विद्यापति जीवनक रूपपक्षक चरम उन्मादक उपेक्षा नहि कए ओकर निस्सीम उछृङ्खलता मे आदर्शक ज्योति कें साधनाक रूप मे दिग्दर्शन करौलनि अछि। एक दिश तँ नारी-पुरुषक सहज उन्मादक आकर्षक सृष्टि अछि तँ दोसर दिश एहि दुहुक अतृप्ति-जन्य-उछृङ्खलता तथा प्राण संकल्पक अनन्यताक ज्योतिर्मय सप्राण समन्वयो अछि। प्रेम-सौंदर्यक अभिव्यंजना सशक्त तथा रूप वैभवक वाह्य चमत्कार सँ परिपुष्ट अछि। नारी और पुरुष दुहु मे सामान्य रूप सँ उन्माद और अतृप्तिक सहज आकर्षण तथा अनन्यताजन्य पूर्णताक मधुर विश्वास उपलब्ध होइछ। राधा और कृष्ण दुहु कें विद्यापति सनातन नारीत्व तथा पुरुषत्वक संग युगक नारी और पुरुष जीवन कें विनोदमय तथा उछृङ्खल रूपोत्मादक सजीव अनुभूतिक रूप मे चित्रित कएलनि अछि।

जहिना राधाक सोन्दर्य-बैभव अपन अपूर्वता मे अनुपमेय अछि ओहिना कृष्णक सोन्दर्याकर्षणक प्रभविष्णुता सेहो अपूर्व अछि। विद्यापतिक राधाक रूप-आलोकक प्रसंगक वाक्य अछि :—

देख देख राधा रूप अपार,
अपरुब के विहि आन मिलाओल,
खितितल लावनि सार।
अंगहि अंग अनंग मुरछायत,
हेरये पड़ये अथीर।
मनमन कोटि मथन करु जे जन,
से हरी महि-मधि गीर।
कत कत लखिमी चरनतल नेओछये,
रंगिनि हेरि विभोरि।
करु अभिलाष मनहि पद-पंकज,
अहोनिसि कोर अगोरि।

राधाक सौन्दर्य-विभूतिक ई महिमा थिक जे अपन अपूर्वता सँ ब्रह्मा कें अपूर्व बनौलक। जकर प्रभविष्णुता सँ विमुग्ध भए असंख्य कामदेवक मान-मर्दन

केनहार श्रीकृष्ण धरातल पर खसि पड़ैत छथि। जाहि सौन्दर्यशालिनी केँ देखितहि मुग्ध भए कतिपय लक्ष्मी केँ न्योछावर कएल जाए सकैछ। विद्यापतिक ई अभिलाषा छनि जे हुनकर चरण कमल केँ सतत् अपन कोर मे अगोरने रहथि।

जहिना सौन्दर्यंक प्रभा सँ कृष्ण अनुप्राणित छथि तहिना कृष्णक रूप वैभव पर राधा सेहो विमुग्ध छथि :—

की लागि कौतुक देखलौंह सखि निमिष लोचन आध।
मोर मन-मृग मरम वेधल विषम बान बेआध॥

श्रीकृष्णक अनुपम सौन्दर्य श्री केँ कनखी सँ देखले सँ प्रेमक तीव्र आकर्षण व्याधाक कठोर प्रहार सन राधाक मृग रूप मनक मर्मस्थल केँ बेधि देल। आत्मसमर्पणक मुग्धावर्द्धिनी स्थितिक परिचय ओ सखी केँ एहि तरहेँ दैत छथि :—

ए सखि पेखलि एक अपरूप,
सुनइत मानवि सपन सरूप।
कमल जुगल पर चाँदक माला,
तापर उपजल तरून तमाला।
तापर वेढ़लि विजरी लता,
कालिन्दी तट धीरे चलि जाता।
ऐ सखि रंगिनी कहलदि सान,
हेरइत पुनि मोर हरल गियान॥

श्री कृष्णक रूप वैभवक एहि अमृतकर्षण सँ राधा अपन चेतना केँ तँ लुप्त कए दैत छथि किन्तु अभिसार मे ओ कृष्णक लोचन तँ नहि मुनलथिन मुदा और अधिक मानवीय रीति सँ जरैत दीप केँ मिझाएवाक चेष्टा करए लगलीह जे कृष्ण कतहु हुनकर नग्न देह ने देखि पाबथि :—

जखन लेल हरि कंचुअ अछोड़ि।
कतवर युगुति कएल अंग मोड़ि॥
कर न मिझाए दूर जर दीप।
लाज न मरए नारि कठजीव॥

अतएव राधा सोपालम्भ सप्रगल्भ भए बजलहि :—

विहर से रहसि हेरने कोन काम
से नहि सहबहि हमर परान।
कहुँ नहि सुनल एहन परकार
करए विलास दीप लए जार॥

"रति करू मुदा हमरा देखबाक कोन काज अछि। ई हमरा सहल नहि होयत। कतहु सुनल नहि थिक जे विलास करए तँ दीप बारि कें।"

वस्तुतः विद्यापति समस्त मानव कें ओकरहि दृष्टि, भावना और मनोवृत्तिक अनुसार आँकलनि। विपरीत रति कालक नारीक आभूषणक ध्वनिक प्रसंगक कवि-कोकिलक वाणी अछि :—

किंकिनि किनि किनि कंकन कनकन घन घन नूपुर बाजे।
रतिरन मदन पराभव मानल जय जय डिम डिम बाजे।

अर्थात् विपरीत रतिक समय किंकिणी (करधनी)क किन-किन, कंगणक कन-कन ओर नुपुरक घन-घन शब्द होइत अछि। प्रतीत होइछ, रति-संग्राम मे पराजित कामदेवक विरुद्ध विजयक दुंदुभी बाजि रहल हो। ठीक एहने भावना बिहारीक नायिकाक सखि लोकनिक पारस्परिक वार्त्ता मे परिलक्षित होइत अछि :—

परयौ जोरू विपरीत-रति,
रूपि सुरत-रन धीर।
करति कुलाहल किंकिनी,
गह्यो मौन मंजीर॥

अर्थात् हमर सखिक प्रतिद्वन्दी पराजित (नीचा आबि गेलाह) भए गेलाह तथा ओ सुरति रूपी संग्राम मे गंभीरताक संग डटल अछि। नायिकाक पक्षक विजयिनी करधनी कोलाहल करैत अछि तथा प्रतिद्वन्दी नायकक पक्षक मंजीर मौन धारण कए लेलक। स्पष्ट अछि जे विद्यापति केवल कवियेटा नहि संगीतक मर्मज्ञ विद्वान तथा सफल गायक सेहो छलाह।

विद्यापतिक प्रेमक पृष्ठभूमि यौवनक रागात्मक चेतनाक स्वाभाविक उन्माद थिक जकरा स्वतः ओ स्पष्ट कएलनि अछि : –

परनारी पिरितक ऐसन रीति।
चलल निभृत पथ न मानय भीति॥

अर्थात् एहि प्रेम मे आदर्शात्मक परकीया-भाव भेला सँ युगक परम्परागत नैतिक अनुशासन मान्य तँ नहि भेल किन्तु सामाजिक अपमानक ज्वाला मे दग्ध प्रेमिकाक आत्मग्लानियो की कोनो कम दुखदायी होइछ :—

कुल कामिनी छलौ कुलटा भए गेलौं।
तिनकर बचन लोभाई॥
अपने कर हम मूँड़ मूँड़ायल।
कानु सँ प्रेम बढ़ाई॥

इएह आत्मग्लानि प्रेमोपासनाक अनन्यताक आधार बनैत अछि। राधाक त्याग-भावना दिव्यज्योतिक अनुपम उदाहरण थिक :—

अनुखन माधव-माधव सुमरइत,
सुन्दरि भेलि मधाई ॥

एवंक्रमें प्रतीत होइछ जे विद्यापतिक कृतित्व मे शृंगार ओर अध्यात्मक पीयूषवर्षिणी समन्वित अछि जे ओहि युग मे शृंगार ओर अध्यात्म दुहुक परिणति सामाजिक अधोगतिक मूल बनल छल जकरा दिश विद्यापति सर्वप्रथम देशी भाषा मे लोकक ध्यान कें आकृष्ट कएलनि।

देशी भाषा अवहट्ठ सँ पृथक अपन स्तित्व लोकमध्य निरूपित कए लेने छल। विद्यापति अपन समय मे प्रचलित ओहि देशी भाषा मे पदावलीक प्रणयन कएलनि जे लोकक कण्ठहार बनल। एहि प्रसंगक विद्यापतिक वाणी :—

सक्कय वाणी वहुअन भावइ,
पाउँ रस को मम्म न पावइ।
देशिल बअना सवजन मिट्ठा,
तँ तैसन जम्पञो अवहट्ठा ॥

विद्यापति संस्कृत ओर प्राकृत मे माधुर्य नहि पाबि देशी भाषे मे एहि माधुर्य कें प्राप्त करैत छथि तथा पूर्वप्रचलित अवहट्ठ मे रचना कएलनि। कीर्त्तिलता ओर कीर्त्तिपताका एहि अवहट्ठ भाषाक निदर्शन थिक। एवंक्रमें संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ ओर देशी भाषा मे विद्यापतिक अवाधगति छलनि। हुनकर कृतित्व एहि सभ भाषा मे उपलब्ध अछि जे एहि तरहक अछि :—

## कीर्त्तिलता

कीर्तिलताक निर्माण कीर्तिसिंहक राजत्वकाल मे भेल किएक तँ एहि ग्रन्थ मे कीर्तिसिंहकें दोहाय देल गेल अछि। एहि मे अवहट्ठक रमणीय निदर्शन अछि। कीर्त्तिलताक उपलब्ध प्रतिलिपिक अध्ययन सँ ज्ञात होइछ जे विद्यापतिक निधन सँ डेढ़ सय वर्षक अनन्तरे मिथिला सँ सौराष्ट्र तक कविक यश-प्रतिष्ठा प्रसारित भए गेल छल। कीर्त्तिलताक एक प्रति स्तम्भतीर्थ मे जकरा आब खम्भात कहल जाइछ १६४२ विक्रम संवत मे श्री श्रीमद्गोपाल भट्टक अनुज श्री सूरभट्ट लिखीलनि। दोसर प्रतिलिपि उत्तर प्रदेशक फतहपुर जिलाक असनीगाँम में तथा तेसर प्रतिलिपि नेपाल मे प्राप्त भेल।[१५] एहि तरहें अवहट्ठक प्राच्य क्षेत्र मिथिला

१५ डा० वीरेन्द्र श्रीवास्तव, विद्यापति : अनुशीलन एवं मूल्यांकन, पृ० ३१

सँ प्रतीच्य अपभ्रंशक क्षेत्र सौराष्ट्र तक विद्यापतिक कीर्त्तिक सँग अवहट्ठक कीर्त्तिक प्रचार और प्रसार भेल। वस्तुतः विद्यापतिक कीर्ति राजशेखरक शब्द मे "विश्व-कुतुहली" बनि भ्रमण करए लागल।

विद्यापति प्राचीन काव्यरूढ़क शुगा-शुगी सम्वादक भूमिका मे सम्मान सहित जीवन यापन केनहार वीर पुरुषक अवतार कें संसारक सार प्रश्नोत्तरक क्रम मे कहलनि अछि। एहि प्रसंग मे कीर्त्तिलताक वाक्य अछि :—

परि सत्तणेन पुरिसो णहु पुरिसो जम्ममत्तेण।
जलदाणेन हु जलदो नहु जलदो पुंजिओ धूमो।।

सो पुरिसो जसु माणो सो पुरिसो जस्स अज्जणे सत्ती।
इडरो पुरिसा आरो पुछ विहुणो पसू होई।।

अर्थात् पुरुषरूप मे जन्म लेला सँ पुरुष नहि भए पौरुष सँ पुरुष होइत अछि। जलदाने सँ मेघ जलद कहबैत अछि ने कि पुंजित धुँआ सँ। पुरुष ओ थिक जकरा मान-मर्यादा और उपार्जनक शक्ति रहौक। एहि गुण सँ हीन पुरुष पुच्छहीन पशु थिक।

## कीर्त्तिपताका

कीर्त्तिपताकाक भाषा सेहो अवहट्ठे थिक। एहि ग्रन्थक अध्ययन सँ प्रतीत होइछ जे पूर्व अंश अर्थात् पहिलुक सात पातक विषयवस्तु तथा आठ पातक आगाँक विषयवस्तु भिन्न अछि। डा० बीरेन्द्र श्रीवास्तव कीर्त्तिपताकाक पाठ संशोधन एवं व्याख्याक प्रसंग मे ग्रन्थक पूर्व अंश कें श्रृंगार केलि कें कृष्ण केलिक रूप दए अर्जुन राय कें अनुरूप समागमक आदर्श बनेबाक कविक प्रयास मानलनि अछि।[१६]

महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्र द्वारा सम्पादित कीर्तिपताकाक पृष्ट चौदह मे "वन वज्जिअ रण भूनराअ शिवसिंह मारिकरु कोटि सहस्स घाइल्ल" मे शिवसिंहक वर्णन अछि। एहि वर्णनक मात्र तीन पाँतिक पश्चाते आठम पत्र लिखि पाठ छापल गेल अछि। एहि सँ स्पष्ट होइछ जे ९वम पत्र सँ उनतीसम पत्र तकक मूल पाण्डुलिपि मे पृष्ट लुप्त अछि। अतएव पृष्ट सात तकक श्रृंगारिक वातावरणक क्रमहि मे कोना युद्धकालीन कथा कें समावेश भेल ई खटकैत अछि। पृष्ट १ सँ ७ तक शिवसिंहक नामक कतहु उल्लेख नहि अछि। डा० बीरेन्द्र श्रीवास्तव एहि पृष्टक कथानक कें अर्जुन राय सँ सम्बद्ध मानि एहि ग्रन्थ कें आन खण्डित ग्रन्थ मानलनि अछि जे

१६ विद्यापति : अनुशीलन एवं मूल्यांकन, खण्ड प्रथम, पृ० २६१

विद्यापतिक कृत तँ थिक किन्तु एहि ग्रन्थ केँ शिवसिंह सँ कोनहु टा सम्बन्ध नहि रहि राजा अर्जुन राय सँ सम्बन्धक प्रसंगक चर्चा कएलनि अछि जे समीचीन बुझना जाइछ।[१७]

विघ्न निवारणार्थं गणेशक वन्दनाक अनन्तर कवि राजा अर्जुन रायक अभूतपूर्व कथा एवं हुनकर शतोत्तर सूक्तिक वर्णन करबाक अवतारण कएलनि अछि :—

पलवओ गणवइ गाबओ गाहा
अज्जुन राअरा अभुव बुहा।
शंका छाड़ि स ओतिर सुत्ती
दिने दिने पहुगुणे रहूअ किती॥

तथा पश्चात् कवि अर्जुन रायक प्रशंसाक गीत गौलनि अछि। हुनकर गुण-गौरवक गीत गबैत विद्यापति एहि वाक्य मे तिरहुतक मर्यादाक प्रतीक मानलनि अछि :—

वीरज्जुन राज विराज भइ,
तिरहुति मज्जादा बहि रहिअ।

एवंक्रमेँ अर्जुनक प्रशंसाक गीत गबैत विद्यापति श्रृंगाररस पूर्ण कृष्णकेलिक नायक-नायिका केँ समागमक रूप मे अद्भुत् वर्णन कएलनि अछि :—

एक दुवारि अनेक धनि जुवन मदे सानन्द।
सकल करिओ सिंगाररस जणि तारा महचन्द॥

अर्थात् एक द्वारि पर कतिपय रमणी यौवन-मद मे उन्मत्त भए अएलीह तथा जेना तारा मे चान्द बिहरैत अछि तहिना ओ लोकनि रभसए लगलीह।

अर्जुन राय शिवसिंहक पितिऔत छलाह। हुनका विद्यापति त्रिपुर सिंह सुत अर्जुन नाम सँ पदावली मे स्मरण कएलनि अछि। विद्यापतिक पद मे अर्जुन राय नामक पद उपलब्ध अछि जनिका गुणा देवीक पति कहल गेल अछि। सम्भवतः शिवसिंहक अन्तर्धान भेला पर अथवा कहियो विद्यापति हुनका आश्रय मे रहल होथि तथा हुनकर कीर्त्तिक गीत गौने होथि से सम्भव।

कीर्त्तिपताक मूल पाण्डुलिपि तीसम पृष्ट सँ प्रारम्भ होइछ। एहि मे शिवसिंहक रणकौशलताक वर्णन अछि। प्रतीत होइछ जे कविकोकिल दुई गोट पोथी पृथक-पृथक लिखलनि जाहि मे एक गोट श्रृंगाररस सिद्ध अर्जुन रायक चरित्र

१७ ओतहि पृ० २६१

सँ सम्बद्ध छल और दोसर मे शिवसिंहक विजयोल्लास सन्निहित छल जे दुहु अखण्ड रूप मे प्राप्त तँ भेल किन्तु एहि दुहु कें एक्के पुस्तकक काया मे निर्माण कए देल गेल। जे किछु तथ्य रहौक कीर्त्तिपताकाक भाषा और कथानक दुहुक बड़ महत्व अछि।

विद्यापति कृत ग्रन्थ मे भूपरिक्रमा, पुरुष-परीक्षा, लिखनावली, दुर्गाभक्ति-तरंगिणी, शैवसर्वस्वसार, गंगावाक्यावली, दानवाक्यावली, विभागसार, गयापत्तलक, वर्षकृत्य, व्याडी-भक्तितरंगिणीक अतिरिक्त गोरक्षविजय नाटक तथा मणिमंजरी नाटिका अछि।

## गोरक्षविजय

गोरक्षविजय किरतनिया नाटक थिक। यद्यपि ज्योतिरीश्वरक धूर्त्तसमागम नाटक मैथिलीक प्रथम नाटक थिक जकर विशेषता परिचयात्मक प्रवेश गीत मे अछि। मिथिला, नेपाल एवं असमक परवर्ती नाटक मे एहि प्रकारक परिचयात्मक प्रवेशगीत नाट्यविधानक धूरी बनि गेल। उमापतिक पारिजातहरण मे नारदक प्रवेशगीत तथा धूर्त्तसमागमक असंज्जाति मिश्रक सम्बन्धक प्रवेशगीत मे रूढ़िगत साम्य अछि। शंकरदेवक रूक्मिणीहरणक वेदविधिक प्रवेशगीत सेहो एहि कोटि मे अबैत अछि। एखनधरिक प्राप्त सामग्री सँ तँ इएह प्रतीत होइछ जे परिचयात्मक प्रवेश-गीतक प्रारम्भ ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा धूर्त्तसमागम मे भेल। एहि नाटकक मैथिली गीत मे विवरणात्मक गीतक अतिरिक्त दुइ गोट गीत भाव प्रधान अछि। एहि मे विश्वनगरक हृदय मे अनंगप्रियाक प्रति एकाएक काम संचारक भावना कें अपूर्व विलक्षणताक संग चित्रित कएल गेल अछि। रतिभावक उद्रेकक गीत सेहो अछि जे परिचयात्मक प्रवेश गीत होइतहुँ इतिवृत्तात्मक नहि थिक। गीतक माध्यम सँ भावोद्रेक कें एहि पद्धतिक बीजमात्र एहि नाटक मे पाओल जाइछ जे परवर्ती काल मे अपन परम्परा कें स्थापित कएलक।

धूर्त्तसमागमक रचनाक लगभग एक सय वर्षक उपरान्त कविकोकिल विद्यापति ठाकुर अपन गोरक्षविजय नाटक मे मैथिलीक गीतक रचना कएलनि। मैथिलीक एहि नाटकक निम्नलिखित पद मे विद्यापति तैलंग देशक नाच कें बड़ प्रशंसा कएलनि अछि:—

तेलंग देश कें नट चओरंग
नाच मे चाहि माण्डिरस रंग।

...................................नाच ।
दखिन देश कें देखब नाच ।।

मिथिलाक कर्णाट वंशक राजत्वकाल मे तथा ओकर उपरान्त ओइनवार आदि राजाक राज्यावधि मे संगीत, साहित्य, नाट्य आदिक क्षेत्र मे मिथिला और दक्षिण भारत मे आदान-प्रदानक क्रम जारी छल तथा अवश्ये मिथिला मे दक्षिण भारत सँ कलाकार लोकनि अबैत छलाह। विद्यापतिक उपयुंक्त वाक्यक तात्पर्य एहि तथ्य सँ अछि। गोरक्ष विजय नाटकक अन्तिम गीत एहि तरहक अछिः—

तञो मोर गोरख प्रथमक शीष ।
सेवा अएलाहु देह असीष ।।ध्रु०।।
सब आ गुरु भगति पए जान ।
तोहे मोर गोरख प्राण समान ।।
महादेवी देवी सवे होथु ।
जनपद जन पूजा गए लेथु ।
तोह हम मीलि कहाउ का....
जाइ जोग अको पखान जे पाउ ।।
भनइ विद्यापति जोड़ि अ हाथ ।
सङ्गम लागहि मछेन्द्र नाथ ।।

प्रतीत होइछ जे मैथिली नाटकक प्रवाह मे धर्माग्रही नाट्य दिश दिशा संकेतक श्रेय गोरक्षविजये कें छैक। विद्यापति भैरव पूजाक अवसर पर एहि नाटक कें प्रस्तुत करैत वैराग्य कें मोह पर विजय कें प्रदर्शित कएलनि। एवंकमें एक दिश गोरक्षविजय नाटक "प्रबोधचन्द्रोदय" क धरोहरि कें अग्रसर करैत अछि और दोसर दिश शंकरदेवक सम्प्रदाय प्रधान भक्तिमूलक नाटकक हेतु पथ प्रशस्त कएलक। बुझना जाइछ जे गोरक्षविजयक सफल आयोजन सँ शंकरदेव कें विश्वास भए गेलनि जे वैष्णव धर्मक प्रचारक हेतु नाटक एक प्रभावोत्पादक माध्यम भए सकैत छल। अतएव अंकियानाटकक प्रेरणाक स्रोत विद्यापतिक गोरक्ष-विजये थिक।

## मणिमंजरी

मणिमंजरी नाटकक कथावस्तु राजा चन्द्रसेन और मणिमंजरीक संगम सँ सम्बद्ध अछि तथा भरत वाक्य सामान्यरूप मे सर्वकल्याणार्थ अछि।

एवंक्रमे विद्यापतिक अपन अनमोल कृतित्व एवं व्यक्तित्व सँ लोकभाषाक साहित्यक विकासक परम्पराक कारणस्वरूप भेलाह तथा हुनकर गीत और नाटकक आधार पर बंगाल, उड़ीसा, असम और नेपाल मे गीत और नाटकक रचना प्रारम्भ भेल जाहि सँ पूर्वी भारतीय भाषाक प्रगति मे एक गोट नव मोर तँ अएबे कएल संगहि राधा और कृष्णक प्रेमाख्यानक आधार पर उत्तर-पूर्व भारत मे रासक परम्पराक प्रचलन भेल। फलस्वरूप कृष्ण लीलाक रासक अनुकरण जैन सन्त लोकनि सेहो कएलनि तथा रास एवं फागु सँ सम्बद्ध कतिपय ग्रन्थ अवहट्ठ मे सेहो रचल गेल जकरा पर मैथिलीक पूर्ण प्रभाव परिलक्षित होइछ।

## रास साहित्य

रासक परम्परा अत्यन्त प्राचीन परम्परा थिक जकरा प्रारम्भिक काल, अपभ्रंश काल तथा अपभ्रंशेत्तर काल मे विभाजित कएल जाए सकैछ किन्तु एहि तीनू काल मे रासक मानदण्ड मे विभिन्न प्रकारक परिवर्त्तन भेल तथा एहि परम्परा मे रास, रासक, रासा एवं रासो शब्दक निर्माण भेल। ओना तँ संस्कृत साहित्य मे अधिकांश काव्य रूपक शृंखलाक बीच विद्यमान अछि परन्तु देशीभाषाक रास साहित्य काव्यरूपक इतिहास मे नवीन क्रान्ति अनलक।

यद्यपि रास साहित्य प्रधानतः गुजरात और सौराष्ट्र मे उपलब्ध भेल अछि जेना कि ई दुहु स्थान जैन लोकनिक प्रधान स्थान रहलैक अछि किन्तु प्राचीन जैन साधुक द्वारा रचल शुद्ध गुजराती भाषाक ग्रन्थक संख्या अल्प अछि। जैन साधु शिष्य परम्परा सँ होइत छलाह तथा हुनका लोकनि मे देशविशेषक कोनहु वन्हन नहि छलनि। वैशालीक साधु गुजरात मे शिष्य या आचार्य होइत छलाह या मालवाक साधु पटना मे। अतएव ओ लोकनि अपन रचना मे एक साधारण भाषाक आश्रय लेलनि जकरा मे यद्यपि किछु ने किछु प्रादेशिक प्रभाव रहितहुँ भाषा अवहट्ठे रहैत छल। इएह कारण थिक जे जैन साधुक द्वारा जे अवहट्ठक ग्रन्थ ओहि सभ क्षेत्र मे लिखल गेल ओकरा पर शौरसेनीक प्रभाव परिलक्षित होइछ।

रास परम्परा मे सर्वप्रथम तथा सभ सँ विस्तृत रचना "भरतेश्वर वाहुवली रास" थिक।[१८] एहि कृतिक सम्पादन मुनि जिनविजयजी कएलनि तथा ग्रन्थ-कर्त्ता शालिभद्रसूरि थिकाह। एहि ग्रन्थक रचनाकाल चौदहम शताब्दी मानल जाइछ

---

१८ भारतीय विद्या; भाग २, अंक १, पृ० १-१९

जकर कथावस्तु एवंक्रमक अछि :—

"जम्बूद्वीपक अयोध्यानगर मे ऋषभ जिनेश्वर केँ सुनन्दा ओर सुमंगला सँ दुइ गोट पुत्र वाहुवली एवं भरत यशस्वी उत्पन्न भेल। भरत अग्रज छलाह। अतएव ऋषभ जिनेश्वर भरत केँ अयोध्याक तथा वाहुवली केँ तक्षशिलाक राज्य दए केँ विरक्त भेलाह।

ऋषभ जिनेश्वर केँ जाहि दिन कैवल्य ज्ञान प्राप्त भेलनि ओहि दिन भरतक आयुद्धशाला मे "दिव्यचक्ररत्न" उत्पन्न भेल तथा भरत सर्वप्रथम अपन पिताक वंदना कए दिग्विजय प्रारम्भ कएलनि। आगाँ-आगाँ चक्ररत्न पाछाँ-पाछाँ सेना जाइत छल। अनेको नृपति केँ विजय कएलाक उपरान्त जखन ओ पुनः आपस भेलाह तँ चक्र अयोध्यापुरीक बाहर रुकि गेल। भरतक मंत्री एकर कारण भाय केँ नहि जीतब कहलथिन। भरत युद्ध कए वाहुवली केँ अपन अधीनता स्वीकार करवाक हेतु दूतक द्वारा आदेश देल। वाहुवली दूत केँ आपस कए देल तथा युद्धक निमित्त तत्पर भए गेलाह।

तेरह दिन धरि भयंकर युद्ध भेल। अन्ततोगत्वा इन्द्र युद्ध केँ बन्द करौलनि तथा वचन युद्ध, दृष्टि युद्ध (नेत्रयुद्ध) एवं दंड युद्ध निश्चित भेल तथा तीनू मे जखन वाहुवली विजयी भेलाह तँ भरत क्रुद्ध भए हुनका पर चक्ररत्न चलौलनि। यद्यपि हुनका कोनोटा क्षति नहि भेलनि तथापि ओ हुनक एहि व्यवहार सँ क्षुब्ध भए गेलाह तथा विरक्त भए दीक्षा ग्रहण कएलनि। युद्धवीर केँ निर्वेद भेल। राज्यश्री हुनका तुच्छ प्रतीत भेल। चक्रवर्ती भरत हुनक चरण पर मस्तक टेकि क्षमा याचना कएलनि। वाहुवली कैवल्य ज्ञानी भेलाह तथा भरत धूमधाम सँ नगर प्रवेश कएलनि ओर आयुधशाला मे आबि चक्ररत्नो शान्त भेल।

भरतेश्वर वाहुवली रास भाषा, रसव्यंजना, अलंकार-योजना तथा छंद-योजना आदि दृष्टि सँ बड़ महत्वक अछि। एहि ग्रन्थक भाषा विद्यापतिक 'देसिल वयना सबजन मिट्ठाक' उक्तिक सार्थकता के सिद्ध करैत अछि। यद्यपि एकर भाषा केँ प्राचीन गुजराती तथा प्राचीन राजस्थानी सेहो दावा करैत अछि किन्तु अधिकांश शब्द विज्जीय, मिल्लीय, चल्लीय, आवीय आदि मैथिलीक शब्द थिक जे अवहट्ठक कलेवर केँ छोड़ि तत्सम शब्द केँ ग्रहण करैत देशी भाषाक दिश अग्रसर भेल अछि जकर नमूना एहि पद मे उपलब्ध होइछ :—

हा कुल मंडण हा कुल वीर,<br>
हा समरंगणि साहस धीर।

कहिइ कहिंनइं किसिउं घणुं,
कुल न लजाविउं तइं आपाणउं ॥

भरतेश्वर बाहुबली रास मे प्रधान रस वीर रस थिक जकर कोड़ मे शान्त रसक समाहार भेल अछि। रासक निर्वेदपूर्ण अन्त संसार, राज्य, शरीर ओर श्रीक नश्वरताक दिग्दर्शन करबैत अछि। सेना वर्णन, रण वर्णन, युद्ध तथा योद्धागणक शारीरिक स्वरूप अनुभावक तथा संचारीक प्रतीक थिक :—

हुँफय, हसमस हण हणइ,
तरवरंत हय खट्ट चल्लीय।
पायक पयभरि टल टलीय,
मेरु सेस मणि मउड हुल्लीय ॥

भयंकर युद्ध भेल तथा किन्नर लोकनि भयातुर भए काँपय लगलाह :—

कंपिय किन्नर कोडि पडीय हरगण हडहडिया।
मारइं मुरडोय मूंछ मांहि नभ मच्छर भरिया॥

भरतेश्वर बाहुबली रासक अलंकार योजना बहुमुखी थिक। एहि मे यमक, श्लेष, रूपक आदिक योजना बड़ विलक्षण अछि :—

जिम उदयाचलि सूर,
तिम सिरि सोहइ मणिमुकुटी।
कसतुरी कुसुम कपूर,
कुचूँवरि महमहइ ए॥
झलकइ एं कुंडल कानि,
रविशशि मंडीय किरि अवर,
गंगाजल गजदानि,
गाढ़िम गुण गज गुडअडइं ए॥

वस्तुत: विद्यापतिक कीर्त्तिलता एवं कीर्त्तिपताकाक भाषाक पूर्ण प्रभाव एहि ग्रन्थक भाषा पर पाओल जाइछ जे किन्नहु पूर्वी अवहट्ठ सँ आन नहि भए सकैछ।

रास साहित्य मे पूर्वी अपभ्रंशक पन्द्रहम शताब्दीक प्रबन्धात्मक शैली मे शालिभद्र सूरिक रचल 'पंच पाण्डव चरित' रासक[१९] स्थान बड़ प्रमुख अछि। ई शालिभद्र सूरि ''भरतेश्वर वाहुवलो''क रचयिता सँ भिन्न थिकाह।

प्रस्तुत रास मे पाँचो पाण्डवक चरित्रक रूप मे सम्पूर्ण महाभारतक सार अछि जे पन्द्रह ठवणि (सर्ग) मे विभाजित अछि। कवि रासक कथाक प्रारम्भ नेमि

१९ गुर्जर रासावली; G. O. S., CXIII, बड़ोदा, पृ० १-३४

जितेन्द्र तथा सरस्वतीक वन्दनाक पश्चात् कएलनि अछि। गंगा तथा शन्तनुक प्रेम एवं गंगा कें हुनकर अहेरी प्रकृति सँ रुसि पुत्र गांगेयक संग अपन नैहर जाएबाक वर्णन एहि मे सन्निहित अछि। गांगेय आश्रम मे शन्तनु सँ शिकारक हेतु विरोधक प्रसंगक वाक्य थिक—

हरिण एक हरिणी सुं खेलइ,
कोमल वयणि हरिणी बोलइ,
पेखि पेखि प्रिय पारधीउ
नितु नितु राउ अहेडइ चल्लइ
रोसि चढ़ी राणी इम बुल्लइ,
प्रियतम पारधि मन करेउ
धनुष कला साउलउ पढ़ावइ
जीव दया नियचिति रहावइ,
बोधि चारण मुनि तणइ

वस्तुतः जैनधर्मक सिद्धान्त कें दृष्टि मे राखि उपर्युक्त भावनाक प्रतिपादन भेल अछि। गंगा कें नहि ऐला पर शान्तनु एक धीवर कन्या पर मुग्ध भए सत्यवतीक संग विवाह कएलनि जकर वर्णन अछि—

साँभलि सामी अम्ह घर सूनो,
तुम धरि अछइ गंगा पूत्तो॥
मइं बेटी जउ तुम्हह देवी,
तउसइं हथि दुख भरेवो॥
कुरुवंसह केरउ मंडणु।
राज करेसि गंगा नंदणु॥
धीय महारी तणा जिवाल।
ते सवि पामइ दुख कराल॥

एवंक्रमें सम्पूर्ण महाभारत कें ७९५ छन्द मे संयोजित कएल गेल अछि। एहि मे अनेक वर्णन पाओल जाइछ जे अवहट्ठ भाषा मे अछि। नारी-पुरुषक कलात्मक वर्णन वड़ विलक्षण अछि। सलोना नयन, सुरभित खोपी, कस्तुरीक ठोप, सुन्दर कंगणा, नूपुरक रुन-झुन तथा ताम्बूल सन लाल अधरक केहेन मार्मिक वर्णन पाओल जाइछ—

सीसी कुंचुवरि कुसुमह खूंपु,
कानि कनेउर झलहलइं ए।

नयण सलूणीय काजल रेह,
तिलउ कसत्तूरी यम णिधडीय।
करयेले कंकण मणि झमकारु,
जादर फालीय पहिणए ॥
अहर तवोलीय द्रूपदी वाल,
पाय नेउर रुणझुणइं ए ॥

पुरुषक वर्णन अछि—

सीस चमर बंबाल अनु,
कंठि कुसुमह माल।
अनुकंठि कुसुमह माल किरि सुं,
मयणि आपणि आवोइ।
कोइ इंदु चंदु नरिंदु सइंवरि,
पहुतु इम संभावी यइ ॥

वस्तुतः ई कृति शैली एवं भाषाक दृष्टि में एक गोट उत्कृष्ट कृति थिक।

रासक ग्रन्थ मे 'स्थूलिभद्र रासक'[२०] स्थान सेहो बड़ महत्वक अछि। स्थूलिभद्रक नायक स्थूलिभद्र पर काव्य लिखबाक परम्परा बड़ प्राचीन अछि। हिनक जीवन आचार्य हेमचन्द्रक ग्रन्थक परिशिष्ट पर्व मे सन्निहित अछि तथा एकर विषय वस्तु हरिषेणक वृहत्कथाकोषक अन्त मे "शकटार मुनि कथानकम्" नाम सँ प्रकाशित अछि।

कवि रासक प्रारम्भ शासन देवी तथा वागीश्वरी कें स्मरण कए कएलनि अछि। प्रारम्भे मे शकटार और वररुचिक बीच संघर्षक चर्चा कएलनि अछि। संघर्षक कारण छल जे वररुचिक गाथा राजा कें बड़ प्रिय छलनि तथा मंत्री (महथा) शकटार कें राजा द्वारा वररुचि कें प्रदत्त आदर अखरैत छलनि। ओ हुनकर गाथा कें अपन प्रथम कन्या कें एक बेर में, दोसर कें दू बेर मे और तेसर कें तीन बेर मे याद करा दैत छलथिन तथा एवंक्रमें वररुचिक नितनवीन कहबाक गाथा कें ओ पुरान सिद्ध करा दैत छलथिन। वररुचि सेहो शकटारक विरोध मे राजा कें भड़कौलनि जे शकटार राजा कें मरबाए हुनकर स्थान मे अपन पुत्र कें राजा बनबए चाहैत छलाह। राजा ई कथा सुनि नितान्त क्रोधित भेलाह तथा मंत्री कें मारि हुनक परिवारक समक्ष मंत्रित्वक प्रश्न कें राखलनि। मंत्रीक पुत्र स्थूलिभद्रक

२० डा० हरिशंकर शर्मा "हरीश"—आदि काल के अज्ञात हिन्दी रासकाव्य, पृ० ५९

ओतए सेहो ई प्रश्न पहुँचल जे ओहि समय कोशा नामक वेश्याक ओतए भोगलिस छलाह। भाय लोकनिक राजलिप्सा तथा पिताक हत्या कें देखि ओ "मया आलोचितम्" वाक्य कहि कें अपन केश उखाड़ि विरक्त भए दीक्षा लए लेलनि। एहि घटनाक वर्णन एहि तरहक अछि—

पणमउं थूलि भद्द इहु रासु।<br>
पाडलि पुत्ति नयर जसु बासु।<br>
नन्दह रायत नन्दह राजे।<br>
मन्त्री सगडाल अम्हारइ काजे।<br>
थूलि भद्द पिउ ताव सगडालु महंतउ।<br>
चितइ समिय काजे राखइ अंधुजंतउ।<br>
राय तणइ नितु पंथितु आवइ।<br>
अहिणव गाहा रचिउ भणावइ।<br>
पण्डितु दानु कियउ नितु राइं।<br>
दीजइ द्रमह पंच सयाइं।

दीक्षा लेलाक उपरान्त स्थूलिभद्रक आन-आन गुरुभाय लोकनि मे सँ तँ किओ साँपक विल पर किओ सिंहक गुफ़ा मे और किओ कूप मे चतुर्मास वितेबाक हेतु गुरु सँ आदेश माँगल किन्तु स्थूलिभद्र ओहि कोशाक ओतए गेलाह। चतुर्मास बिताए जखन सभ सन्त आपस ऐलाह तँ गुरु स्थूलिभद्र कें सर्वश्रेष्ठ मानलथिन। एहि पर एक सन्त क्रुद्ध भए गेलाह तथा दोसर चतुर्मास ओ ओहि कोशाक गृह जाए कए तँ वितौलनि किन्तु ओ ओकर रूप-गुण पर आसक्त भए गेलाह। कोशा हुनका रत्न कम्बल अनबाक हेतु नेपाल पठौलनि। कामविमोहित सन्त नेपाल सँ तँ कम्बल अनलनि किन्तु कोशा ओहि कम्बल सँ अपन पायर पोछि ओकरा खाधि मे फेकि बाजल जे अपन चरित रत्न कें तँ सम्हारू जे अहूँ सँ बेसो गर्त मे खसि पड़ल अछि जकर वर्णन निम्नलिखित पद मे अछि:—

नियतणि जउ मुणि दीणउ धाअे,<br>
चरणा भखेविणु मिरिय कुरवाग्रे॥<br>
इह गइ खंभु करीरिहिं भाजइ।<br>
थूलिभद्र जो गति कहविन छाजइ॥<br>
वह नेपाल देश भणीजइ।<br>
वड़इ कठिन तहि पुणु जाइजइ॥

तइ मूरख नवि जाणिउ भेउ।
लक्ख रयण मुणि कब्बल ऐहु॥

कोशाक वचन सुनि सन्तक अन्तःकरण आत्मग्लानि और पश्चाताप सँ भरि गेल एवं हुनकर ज्ञान दृष्टि जाग्रत भए गेलनि तथा गुरुक ओतए जाय पुनः दीक्षा ग्रहण कएलनि।

स्थूलिभद्र रासक भाषा प्रवहमान, भाव सरल एवं चित्रात्मक अछि। निम्नलिखित पद मे श्रावण-भादव मे कामोत्पत्ति, मनक चंचलता तथा कोशाक सौंदर्यक प्रति व्यामोहक सजीव वर्णन अछिः—

"वेस ससि वयणि मिग नयणि नव जोवणी,
सुविधि परिविविह परि दिट्ठ मुणि लोयणी।
आवहु मुणि कहउ भुणि देश तुम्ह दुल्लही,
परिजइ तुम्हि सुज्झइ अम्ह धरि शनिक परिजइ तुम्हि सुज्झइ।
मज्झु नयएउ गुरु वयणब परतु जइ झारयं,
वेस धरि पाउस भरि तँ दिवसु श्रावियं।
सावणं सलिल मुणि सील संबोलियं,
सयल दुम कंद खणिचित्तु उम्मूलियं।
भाद्रवउइ धणु गुहरउ जलहरो गाजअे,
चरित पुरु पाटरणमयण भड भंजअे।
ईण परिवेस धरि मुणिहि मणु गंजियं,
रमइ नर अनिकि परि पिक्खे वितंजियं।
भार थोपियउ किरि बोलइ मुणि छम्मिउ,
अत्थ विणु वेस पुणु निठुर वह हम्मिउ।"

वस्तुतः स्थूलिभद्र रास अवहट्ठक एक गोट विशिष्ट ग्रन्थ थिक जकर भाषा देशी दिश अग्रसर भेल प्रतीत होइछ।

रासक ग्रन्थ मे जयशेखर सूरि कृत नेमिनाथ फागु[२१] पन्द्रहम शताब्दीक अवहट्ठक ग्रन्थ मध्य बड़ विशिष्ट अछि। फागु शब्दक अर्थ थिक वसंतोत्सव। अवहट्ठ भाषा मे वसंतविलास फागु, जम्बूस्वामी फागु, पार्श्वनाथ फागु, नारी निरास फागु इत्यादि अनेक ग्रन्थ उपलब्ध अछि। नेमिनाथ फागुक कथानक नेमिनाथ तथा राजमतिक प्रणय कथा सँ सम्बद्ध अछि। नेमिनाथ जैनक तैसम तीर्थंकर छलाह।

---

२१ गुणरासावली, गायकवाड ओ० सी०, अंक ११८, पृ० ६५

हुनका द्वारा राजकुमार होइतहुँ विवाहक अवसरे पर अभिन्न यौवना राजमती कें छोड़ि वीतरागी होयब तथा राजमती द्वारा सेहो हुनकहि चरण मे जाय दीक्षा ग्रहण करबाक प्रसंगक वर्णन एहि मे सन्निहित अछि।

नेमिनाथ फागुक भाषा पन्द्रहम शताब्दीक अवहट्ठक भाषा थिक जे देशी भाषाक दिश अग्रसर भेल अछि जकर नमूना एवंक्रमक अछि :—

आकुली कुलवट लोपिय गोपिय रमइ रंगि
कांस केसि चाणूर ए चूरए जे बहु भंगि।
वसुधा वीर वदीतउ जीतउ जिणि जरासिंधु
तहि हरि अरिवल टालए पालए राज सुवंधु।

पन्द्रहम शताब्दीक रास ग्रन्थक मध्य "सोलह कारण रास" क सम्बन्ध सेहो वड़ महत्वक अछि जकर भाषा अवहट्ठक रूप सँ पृथक भए देशी दिश अग्रसर भेल अछि। एहि ग्रन्थक कर्त्ता सकलकीर्त्ति थिकाह।[२२]

ई ग्रन्थ एक गोट छोट-छीन खण्ड काव्य थिक। एहि ग्रन्थ मे कवि प्रारम्भ मे मंगलाचरणक पश्चात् साधनाक हेतु तप तथा तपक हेतु सोलह गोट कारणक विधान एक गोट श्रेष्ठि कन्या प्रियंवदा सँ करौलनि अछि। प्रियंवदाक परिचय ग्रन्थ मे एक गोट दुर्भाग्य शालिनी, गतधर्मा महाकुरूपिणीक रूप मे सन्निहित अछि जकर वर्णन एवंक्रमक अछि:—

जंबू दीवह भरत खेत मागध छह देसा,
राजागृह छइ नगर हेम प्रभराज धनेसा।
विजया सुन्दरि कलतनाम पुरोहित महासरमा,
प्रियंवहीता सु नारि पुत्री गत धरमा।
कंकाल भैरवि रोग सहित छह रूप विहुणी॥

छन्द, अलंकार तथा रसक दृष्टि सँ कृतिक महत्व यद्यपि साधारणे अछि। किन्तु भाषाक दृष्टि सँ ई बड़ उल्लेखनीय अछि।

एवंक्रमें अवहट्ठ अपन यथार्थ रूप कें पन्द्रहम शताब्दी मे परिवर्तित कए आधुनिक मैथिलीक कलेवर कें ग्रहण करैत एक दिश बंगाल, असम तथा उड़ीसा मे व्रजबुलिक नामे प्रख्यात भेल और दोसर दिश विद्यापति एवं उमापतिक आधार पर नेपाल एवं मिथिला मे कीर्त्तनिया नाटकक उद्भवक स्रोत बनल।

---

२२ डा० हरीश, आदिकाल के अज्ञात हिन्दी रासकाव्य, पृ० १७०

# उपसंहार

लोक साहित्यक उद्‌भव एवं विकास लोकक आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक समस्याक समाधानक निमित्त होइछ। ई० सनक सातम शताब्दी मे जखन एहि विशाल देशक राजनैतिक धरातल सँ सम्राट हर्षवर्धन एवं महाकवि वाणभट्टक अन्तरर्धान भेल तँ योग्य उत्तराधिकारीक अभाव मे एक दिश तँ सामन्त लोकनिक पारस्परिक घात-प्रतिघात और दोसर दिश हुनका लोकनिक अत्याचार एवं अनाचार सँ सामान्य लोक उत्पीड़ित एवं त्रासित छल। ओ युग संस्कृत साहित्यक युग छल। ओहि युग मे विद्वानक मध्य अश्वघोष भास, कालिदास, दण्डी, भवभूति एवं बाणक कृति केँ आदर तँ छलैक किन्तु सामान्य लोक केँ ओहि सँ कोनहुटा सम्बन्ध नहि छल किएक तँ हुनका लोक-निक साहित्य में सामन्ते लोकनिक राग और भोगक वर्णन सन्निहित छल। फलस्वरूप लोक-जागृतिक निमित्त सर्वप्रथम बौद्ध सिद्ध सन्त लोकनि लोकक समस्या, अभिरुचि और अभाव केँ लोक भाषाक माध्यम सँ प्रस्तुत कएलनि। बौद्ध सिद्ध सन्त मे सँ कतिपय सिद्ध सन्त सरहपाद, तिलोपाद, रत्नाकर शान्ति आदि यद्यपि संस्कृतक महान् विद्वान छलाह तथा ओ लोकनि लोकभाषा मे अपन विचारक प्रतिपादन तँ कएलनि किन्तु संस्कृतक विद्वान हुनका लोकनिक कृति के अपभ्रष्ट, भ्रष्ट, अवहट्ठ नाम सँ सम्बोधित कएलथि। अतएव अवहट्ठक अध्ययन एवं अनुशीलनक इतिहास सामान्य लोकक चेतनाक उदय और विकासक महत्वपूर्ण अध्याय थिक।

प्रायः साहित्यकार सतत् शोषित एवं उपेक्षित रहैत छथि—किओ तँ समाज सँ, किओ परिवार सँ और किओ लक्ष्मी सँ। इएह कारण थिक जे पुष्पदन्त सन लोककवि "चमरानिलही उड्डेउ गुणाइँ" तथा "अभिषेक धोँयउ-सुजनत्तननाय" अर्थात् सामन्तक चमर तथा अभिषेक जलकेँ सज्जनता केँ धोए कए बहाबए बला पदार्थ कहलनि अछि।

लोक भाषाक साहित्यकार सतत् समाजवादी विचारधाराक प्रवर्तक रहल अछि जे पुष्पदन्तक "न दास न कोउ राज" "मानव दिव्य", "अगर्व सुभव्य", "समानहि सर्वं" आदि वाक्य सँ पुष्ट होइछ।

एवंक्रमेँ देशक राष्ट्रीय भावना जेना-जेना लोकोन्मुख होइत गेल तहिना प्रवृत्ति लोक भाषाक दिश सेहो बढ़ल जे क्षेत्रीय भाषाक उद्‌भवक कारणस्वरूप भेल।

एहि तरहेँ अवहट्ठ सातम शताब्दी सँ पन्द्रहम शताब्दी तक सम्पूर्ण उत्तर-पूर्व भारतक सामान्य लोक जीवनक परस्पर भाव-विनिमय एवं व्यवहारक भाषा छल जकरा सँ पश्चात् काल समस्त उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रीय भाषाक उद्भव भेल ।

अवहट्ठक अधिकांश ग्रन्थ गुजरात, सौराष्ट्र एवं मिथिला मे प्राप्त भेल अछि । ई० सनक छठम शताब्दी मे गुर्जर गुजरात तथा भड़ोच केँ जीतलनि । गुजरात नाम गुर्जरे सँ भेल जतए सँ ओ लोकनि मिथिला तक आएल । मैथिलीक "गुजरी", "गुजरिया", "गुजराती" आदि शब्द गुर्जरे सँ सम्बद्ध अछि तथा मिथिलाक प्रसिद्ध लोरिकाइनक सम्बन्ध गुर्जर जातिएक लोक-कथा सँ अछि ।

जहाँ धरि अवहट्ठ एवं पूर्वी क्षेत्रीय भाषाक सम्बन्धक प्रसंग अछि ई तँ निर्विवाद अछि जे अवहट्ठक उद्भव संक्रान्तिकाल मे भेल जे लोकजीवन केँ अपनाए युगान्तकारी कार्य कएलक जकरा पश्चातकाल "देशील वयना सव जन मिट्ठा"क भावना केँ अपनाए राधा-कृष्णक प्रणय लीला मे भक्ति-भावनाक पुट दए व्यापक रूप देल गेल जे पश्चात् मिथिला सँ बंगाल, असम और उड़ीसा मे प्रसारित भए व्रजबुलिक नामे प्रख्यात भेल । राधाकृष्णक ओ मधुर गीत स्वतः व्रजमण्डलहु केँ प्रभावित कएलक जे शौरसेनीक क्षेत्र छल ।

व्रजबुलिक माध्यम सँ मैथिली उत्तरी पूर्वी भारतीय लोकजीवन मे जाहि विशिष्ट भावना केँ व्यक्त कएलक बंगला, असामी तथा उड़िया साहित्यक आधुनिक रूप ओहि उच्छ्वासक अभिव्यक्ति थिक जकर अग्रदूत अवहट्ठे छल ।

अवहट्ठक कलेवर बौद्ध सिद्ध सन्त लोकनिक द्वारा ठाढ़ भेल जकरा डाक, धर्ममंगल काव्य, शून्यपुराण, "माणिकचन्द्र राजार गान" गाविन्दचन्द्र राजार गान", लोरिकाइन, आदिक लोककथा जनप्रियता प्रदान कएल तथा वर्णनरत्नाकर, उक्तिव्यक्तिप्रकरण, सन्देशराशक आदि समृद्धशाली बनाए विद्यापतिक द्वारा काल-विजयिनी भेल ।

वस्तुतः विद्यापति सँ प्रेरणा लए महाप्रभु चैतन्यदेव, शंकरदेव एवं राय रामानन्द जाहि भक्तिभावनाक द्वारा लोक साहित्यक कलेवर केँ पुष्पित और पल्लवित कएलनि ओकरहि प्रतिबिम्ब आधुनिक मैथिली, बंगला, असामी, उड़िया आदि साहित्य मे पाओल जाइछ । अतएव पूर्वाञ्चलक भाषा मे अवहट्ठक भाषा और साहित्यक ऐतिहासिक विकास सन्निहित अछि ।

९. मैथिली साहित्यक आदिकाल (मैथिली), मूल्य ७) टाका ५० पैसा मात्र ।

१०. महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह (हिन्दी), मूल्य-निःशुल्क ।

११. मेनका (मैथिली), मूल्य २) टाका मात्र ।

१२. विद्यापति संगीत मे वर्णित नायक-नायिका-भेद एवं राग-रागिनी-वर्गीकरण (मैथिली), मूल्य २) टाका मात्र ।

१३. शाक्यश्रीभद्र की जीवनी (हिन्दी), २·५० पैसा मात्र ।

१४. विद्यापति : पुनर्मूल्यांकन (मैथिली), मूल्य तीन टाका मात्र ।

१५. विद्यापति-पञ्चाशिका (मैथिली) ३५ पैसा मात्र ।

१६. दुखियाबाबाक खटरास (मैथिली), मूल्य १·२५ पैसा मात्र ।

१७. जट-जटिन (मैथिली), मूल्य १) टाका मात्र ।

१८. लोकगाथा : विवेचन (मैथिली) मूल्य ४) टाका मात्र ।

१९. नैना-जोगिन (मैथिली), मूल्य १.२५ पैसा मात्र ।

२०. श्यामा-चकेबा (मैथिली), १·५० पैसा मात्र ।

२१. मिथिला भारती, अं० १, भा० १-४; अंक २ भा० १-४, अंक ३ भा० १-४, मूल्य प्रति अंक ५) टाका मात्र ।

२२. ओ जे कहलनि, लेखक श्री हंसराज, मूल्य ३) टाका ।

२३. जे किने से, " " मूल्य १·२५ पैसः ।

२४. बिसरल : बिसरल " " मूल्य १·२५ पैसा ।

२५. गपाष्टक, लेखक, पं० दमनकान्त झा, मूल्य २ टाका ।



लेखक

## संस्थान द्वारा प्रकाशित एवं लेखकक कृत आन-आन ग्रंथ

१. महाकवि विद्यापति नाटक (मैथिली), मूल्य २) टाका मात्र।

२. शास्त्रार्थ नाटक (मैथिली), मूल्य १) टाका ५० पैसा मात्र।

३. कन्दर्पीघाट नाटक (मैथिली), मूल्य १) टाका मात्रा।

४. एकादशी (मैथिली), मूल्य १) टाका ५० पैसा मात्र।

५. विद्याधर-कथा (मैथिली), मूल्य २) टाका मात्र।

६. उवर्शी (मैथिली), ३) टाका मात्र।

७. धर्मव्याध-कथा (मैथिली), मूल्य १) टाका मात्र।

८. कालचक्र की उत्पत्ति एवं उत्पन्न क्रमों की संक्षिप्त व्याख्या (हिन्दी), मूल्य ६) रुपये।

( शेष मुखपृष्ठ सं० ३ पर देखल जाय )